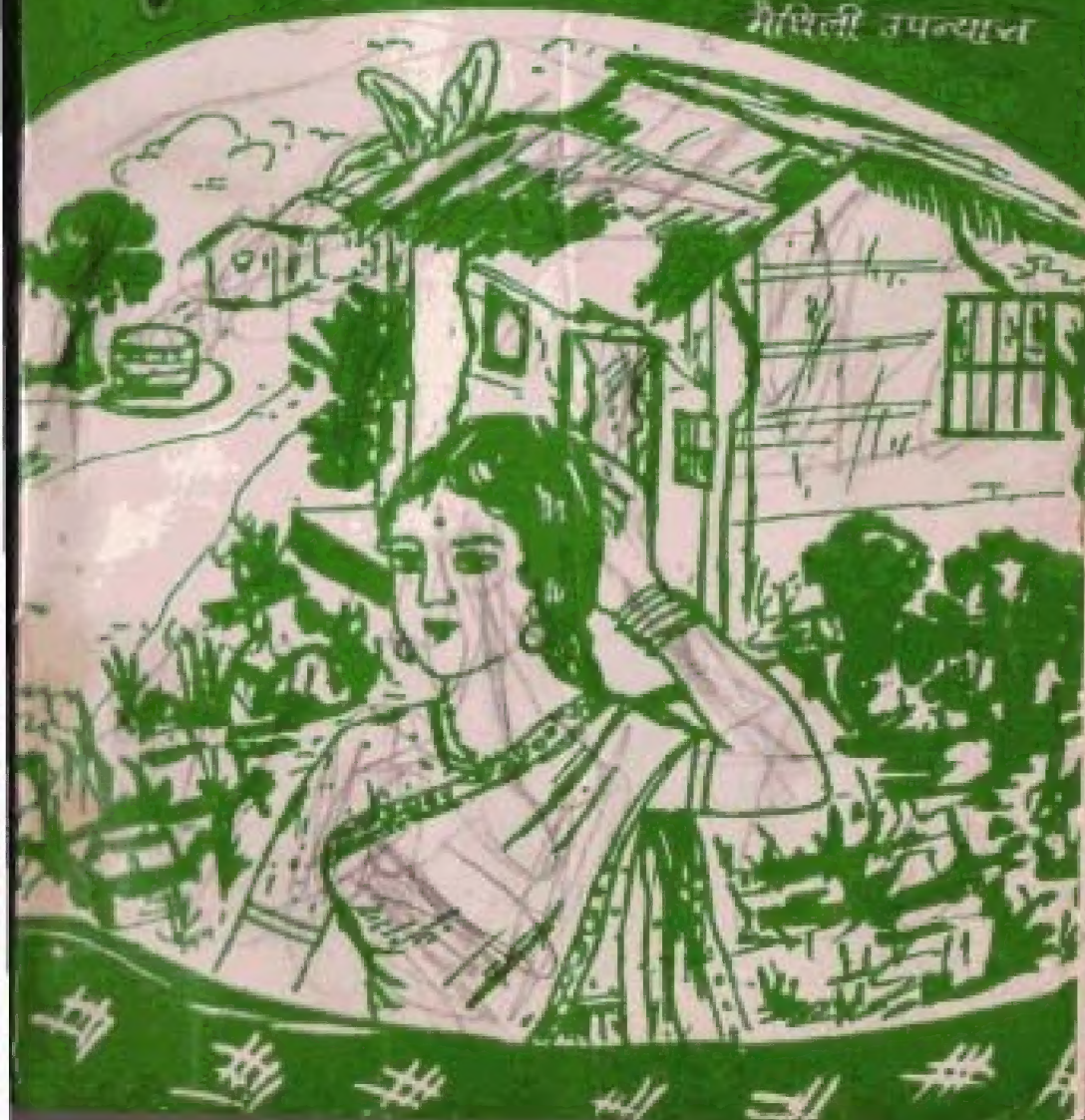


मुंशी रासबिहारीलाल दास कृत

# सुमति

मैथिली उपन्यास



मुंशी रासबिहारी लाल दास कृत उपन्यास

सुमति

प्रीतीश लोकापति नेट भावन सं जग  
जगज्ज १८ रक्षा जगद ।  
जगज्ज कुमा जोषरी  
१२. ११. ७६

chmch ११

सम्पादक

डा० रमानन्द झा 'रमण'

लोकापति

डा.रमानन्द झा 'रमण'

उवंशी प्रकाशन

पटना-६



सुमति (मैथिली उपन्यास) मुंशी रामबिहारी लाल दास

सं० डा० रमानन्द झा 'रमण'

Sumati (Maithili Novel)--Munshi Ras Bihari Lal Das

Ed. by Dr. Ramanand Jha 'Raman'

प्रथम संस्करण-१९१६

द्वितीय संस्करण-१९६६

प्रति-५००

मूल्य-१० रुपैया

प्रकाशक

चर्चशी प्रकाशन

मुसल्लहपुर,

पटना-८०० ००६

मुद्रक

पूर्णमा प्रिंटर्स

मुसल्लहपुर,

पटना-८०० ००६

## 'सुमति'—मैथिली साहित्यिक रत्न

—प्रो० श्री जानन्द मिश्र

मैथिली उपन्यासक विकास-मात्रा एहि सताब्दीक प्रथम दशक सँ प्रारम्भ होइछ । एतहि प्रारम्भमे एहि विधाक रूपरेखा ओलेक स्पष्ट नहि छल तँ प्रारम्भिक लेखक लोकनि उपन्यासमे कथा एवं वर्णन-विन्यास दिस बेसी ध्यान देल । वर्णनमे अतिरंजकताक मात्रा विशेष रहल । किन्तु सगले लेखक लोकनि अपन ध्यान सामाजिक कुरीति दिस देल तथा ओकर निराकरणक दिशामे अपन लेखनीकेँ अवसरारित कएल । बाबू तुलापति मिश्र, श्रीकृष्ण ठाकुर, पं० जनार्दन झा 'जनसीधन', पं० जीवछ मिश्र, राम बिहारी लाल दास आदि मैथिलीक प्रारम्भिक उपन्यासकार लोकनि अपन लेखनी सँ मिथिलाक विभिन्न सामाजिक समस्याकेँ उजागर कएल । ओ रचना सभ प्रकाशमे आएल किन्तु ओकर उचित मूल्यांकन ताहि समयमे नहि भए सकल । ताहि दिन भाषाक एहेन रचना दिस प्रबुद्ध पाठक लोकनिक ध्यान ताहि रूपेँ नहि पड़ल । फलतः ओ रचना सभ विस्मृतिक गर्तमे चल गेल । अब जखन मैथिलीक पाठक ओहि रचनाक विषयमे किछु जानए चाहैत छथि तँ पोथीक अनुपलब्धता बढ़का बाधक बनि जाइत छन्हि । एही उद्देश्येँ मैथिलीक ओहेन-ओहेन रचनाक पुनर्प्रकाशनक डॉ० रमानन्द झा 'रमण'क प्रयास परम स्तुत्य अछि तथा ओही कड़ीक ई प्रकाशन 'सुमति' एक अंग थिक ।

राम बिहारी लाल दासक 'सुमति' जाहि समय वर्षात् १९१० ई० मे प्रकाशित भेल छल ताहि दिनुक समाजमे मिथ्यादम्बरक पाखी लोक अपन सर्वस्व नष्ट कए लेल छल । अवध्यक विनु चिन्ता कएने विवाह जादिक अवसर पर उचित सँ बहुत बेसी खर्च कए देल छल जाहिसँ ओकर जीवन-साधन अत्यन्त दुःखमय भए जाइत छलैक तथापि ओहेन कार्मिकेँ छोड़ब ओकरा



कठिन बुझाईत छलैक । एहने वैवाहिक अवसर पर मिथ्यादम्बरक कारणे दुःख भोगैत एक कर्ष कायस्थ परिवारक कथा थिक 'सुमति' ।

रास बिहारी लाल धाम स्कूली शिक्षा बड़ थोड़ पओने छलाह, किन्तु स्वाध्यायक बने तथा तीव्र पन्विषण शक्ति सँ समन्वित रहला सँ सुन्दर हृदय सँ तत्कालीन मैथिली कर्ष कायस्थ लोकनिक समस्या एवं स्थितिक आत-कारिक भाषा मे चित्रण कएल अछि । उपस्थित छौनकाय रहितहुँ अपन उपदेयता सिद्ध करबामे पूर्ण सफल भेल अछि ।

एहि उपन्यासक अनुपपन्नताक कारणे डा० श्री अवकान्त बाबूक इतिहासमे अतबा सामग्री देल तकरहि पश्चातक इतिहासकार लोकनि दोहरबैत गेलाह । केओ ओहि पोथीके देखि ओकर पुनर्मुद्रांकन करबाक कष्ट गहि कएल । डा० श्री 'रमण' एकरा छोरि प्रकाशमे आनि एकर मूल्यांकनक अवसर मैथिलीक पाठकके देल अछि जाहि हेतु श्री धन्यवादाहूँ छथि । एहि रचनाक प्रकाशनसँ मैथिली उपन्यासक संग तत्कालीन मैथिली गद्य-शैली पर सेहो महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ैछ तथा गद्यरूक अधोता लोकनिके भाषा सम्बन्धी किछु तथीन तथ्य भेटैतनिहुँ से आशा अछि ।

अन्तमे डा० श्री रमानन्द झा 'रमण'के ह्रस्व आशीर्वाद दैत छिएन्हि जे एहिना भविष्यहुँमे मैथिलीक सफाई सँ नुकाएल, हेराएल रत्नसभके ताकि-ताकि प्रकाशमे आनि मैथिली पाठकक उपकार करथि ।

पटना  
स्वतन्त्रता दिवस, १९९६ ई०

प्राप्तक आचार्य एवं विनायाध्यक्ष  
मैथिली विभाग

पटना विश्वविद्यालय पटना

पटना

## रासबिहारी लाल दासक अवदान

रासबिहारी लाल दासक जन्म मधुबनी जिलाक भच्छी नाममे १८८२ ई०क लगभगमे भेलनि । हिनक पिताक नाम छल दुसार सिंह दास । हिनक पितामहक नाम मनाराम, प्रपितामह जीवनलाल दास तथा अतिवृद्ध पितामह स्वर्णरत्न उर्फ कबाइ छल । हिनक विवाह मुर्तवापुर छलनि । हिनक पुत्रक नाम छल बजरंग बिहारी दास । रासबिहारी लाल दासक मूल थिक सोनेनार सप्ता बेरा ।

रासबिहारी लाल दास विवेक पढ़ल-लिखल गहि छलाह । प्रवेशिका परीक्षा पओने छलाह । आजीविका लेल ओ पदाधि रेलवेमे डीकेदारी करैत छलाह, परन्तु हुनक हृदय एक संवेदनशील रचनाकारक हृदय छल । हुनक बेसी समय शास्त्र-पुराणक अध्ययन-मनन तथा साहित्य साधनामे व्यतीत होइत छल ।

रासबिहारी लाल दासक बूडा कृति प्रकाशित अछि । ओ थिक 'मिथिला वर्ण' (१९१४ ई०) तथा 'सुमति' (१९१८ ई०) । 'मिथिला वर्ण' हिन्दीमे अछि । एकर दू भाग अछि । प्रथम भागमे मिथिलाक प्रकृति, जीव, जन्म आदिक विस्तृत वर्णन अछि । दोसर भागमे मैथिली कर्ष कायस्थक वर्णनक संगे कायस्थक उत्पत्ति, चित्रगुप्तजीक बादहो सन्तानक, विवाह हुनक मूलवास तथा मूलवास सँ कतय-कतय प्रस्थान कएल तकर वर्णन अछि । एकर अतिरिक्त कर्ष कायस्थक अभ्युदयक संगहि पंजी प्रधाक अनुसार २७० वंशक पूर्ण विवरण देने छथि ।

मिथिला मिहिर २९ जनवरी १९१६ ई०क अंकमे 'मिथिला वर्ण'क प्रकाशनक सूचना एहि प्रकारे अछि—'मिथिला का प्राचीन तथा आधुनिक इतिहास, भूगोल तथा अन्योन्य विषयों को प्रदर्शित करनेवाला २७५ पृष्ठों का यह ग्रंथ छप गया है ।'



'मुमतिक' प्रकाशन १९१८ ई० में मेल। ई पोथी महाराज रमेश्वर सिंहके समर्पित अछि। एकर मूल्य अछि ६० आना। पुस्तक प्राप्ति स्थान में लिखल अछि—श्री रामलाल तथा श्री गिरिधारी लाल दास, मिथिला दर्पण कार्यालय—मो० भक्षी, पो० मधुबनी, जिला दरभंगा। 'मिथिला मोड़' उद्गार १४८-४९ वर्ष १९१९ ई० में 'मुमतिक' समालोचना निम्न प्रकारे अछि—'भक्षी ग्राम निवासी मुन्शी श्री रास बिहारी लाल दास रचित एक सामाजिक 'मुमति' नामक उपन्यास प्रस्तुत मेल अछि। ई उपन्यास देखै योग्य अछि। एक-दू पृष्ठ बेलासँ चित्त में ततेक अहसास बढ़ैछ जे स्नान, भोजन, सब काज त्यागि समस्त पुस्तक पढ़ि जाइ। 'मुमति' में विवाहक सिद्धान्तक बरिआतक विशेष कीतुकमुक्त कथा अछि।

सहस्रोत्ता दामक पुत्रक विवाह मनोरथ लाल दामक कन्या सँ भेलन्हि ताहिमे सहस्रोत्ता दाम ओ मनोरथ लाल दास दूनु समधि मनोरथपूर्ण बरिआत सजि-अजि विवाह करीनन्हि, जेतुक देवाक तँ कथे नहि हो। विवाहक शोभा बहुत भेल। तत्काल दूनु समधिके यशो पूर्ण भेलन्हि। किन्तु पश्चात् एही विवाहक शृण दैत-दैत सर्वस्वान्त भेलन्हि। आहि घर कन्याक विवाहमे अनेको महल टाका नाच-नमाचामे उड़ि गेल, ताही घर कन्याके अन्नो वस्त्र भेटव कठिन भऽ गेल।

रास बिहारी लाल दासक बाल्यकाल घरि देशमे समाज सुधारक आन्दोलन चरमोत्कर्ष घरि पहुँचि गेल छल। दोसर दित राष्ट्रीय स्वाधीनता आदि क्रमशः तेज भए रहल छलक। सुधारवादी आन्दोलन तथा राष्ट्रीय चेतनाक छाह सँ मिथिलावल्लो अग्रभावित नहि रहल। ओही सुधारवादी आन्दोलनक परिणाम भेल 'अखिल भारतीय मैथिल महासभा'। समाजमे व्याप्त वैवाहिक कुरीतिक-निराकरणक उपायक चर्चा 'महासभा'मे नियमित रूपेँ होइत छल। साहित्यमे विचार परिवर्तन करवाक कतेक क्षमता छैक ओहि तथ्यसँ प्रबुद्धवर्ग अपरिचित नहि छलाह। प्रो० गंगापति सिंह (१८६४-१९६९) साहित्यक एहि प्रयोजनक प्रसंग लिखल अछि—'नाटक, उपन्यास

आदि सरस विषय रहने ओहिसँ मनोरंजन सेहो होएतन्हि आओर अनेक प्रकारक उपदेशो प्राप्त होएतन्हि। बीस-बीस पच्चीस-पच्चीस विवाह कए जातिके कलंकित कएनिहार बिकीआ लोकनिक अन्तमे जेहन पाप-परिणाम होइ छैन्हि, से प्रत्यक्ष देखितहि छी। किन्तु, यदि एहि विषय पर सरस तथा मनोरंजक नाटक वा उपन्यास कोनो विद्वान लिखथि तँ ओहि सँ समाजक बहु उपकार भए सकैत अछि। तखन लोक एहन-एहन दुष्कर्म करवाक साहस नहि करत।' ('मिथिला मिहिर' १५ नवम्बर, १९१५ ई०)। मुन्शी रासबिहारी लाल दासमे सामाजिक चेतना पर्याप्त छल। वैवाहिक कुरीतिक दुष्परिणाम सँ दुहु पक्षके उपदेष्ट देखि व्यथित भेल होएताह। जकर माय-बापक विवाहमे अजेल खर्च भेल छल, तकरहि सन्तानके विलटि जाइत देखने होएताह। समाजक ई स्थिति एक संवेदनशील व्यक्तिके निश्चित रूपेँ प्रेरित करवा गेल पर्याप्त अछि।

मुन्शीजीक समस्त एकटा व्यापक सामाजिक विषय-वस्तु छल। ओकरा ओ समाजक समस्त प्रस्तुत करव चाहैत छलाह। हुनका साहित्यक विभिन्न विधाक सामर्थ्य आ सीमाक ज्ञान छलनि। उपन्यासक अर्थ ओ से नहि मानैत छलाह, जे बाबू तुलापति सिंह 'मदनराज चरित उपन्यास' सँ बुझैत छलाह। अपन अनुभवक अनिवार्यता लेल उपन्यास विधाके स्वीकार करवाक प्रसंग लिखने छथि—'नभ मण्डलस्थ नक्षत्रादिक दर्शन तँ सहजमे चक्षुपातहि सँ भऽ सकैत अछि, परन्तु भू-मण्डल समाजकास्थ चरित्ररूपी नक्षत्रक निरीक्षण तँ उपन्यासरूपी आश्वासनीक (चक्षुमाक) अवलम्बन सँ समाजगत गुप्त प्रकट खानि-खानिक चरित्ररूपी नक्षत्र सूक्ष्म लागत तँ कहि सकैत छी जे समाजरूपी फोटोग्राफक रेकर्ड, समाजरूपी फोटो कमराक नेस, समाजगत चरित्रक विशाधार अर्थात् अलवम, समाज सुधार तथा चरित्र गठनक आधार तथा आधार उपन्यासे थिक। अतएव, सामाजिक उपन्यासक गठन सँ मनुष्य सहजमे अपन दूषित चरित्रके सुविचार सँ परित्याग कए सकैत अछि।' उपन्यास की थिक, आ उपन्यासक कतेक महत्व अछि मुन्शी रासबिहारी लाल दासक एहि विचार सँ स्पष्ट अछि।



मैथिलीक तीनू आरम्भिक उपन्यासकार जीवछ मिश्र (१८६४-१९२३), जनार्दन झा 'जनसीदन' (१८७२-१९५१) तथा मुं'सो राम बिहारी लाल दास (१८८२-) में एक विलक्षण साम्य अछि, जे तीनू मोटे पहिने हिन्दीमे लिखि स्याति अजित कएने छलाह । ई सर्वविदित अछि जे मैथिलीक विरुद्ध चलल बह्यन्त्र सँ परिचित भेला पर जीवछ मिश्र हिन्दीमे नहि लिखबाक शपथ लेल । राम बिहारी लाल दासक पहिल पोथी 'मिथिला दर्पण' हिन्दीमे प्रकाशित भेला पर मातृभाषा दिस हुनक ध्यान गेलनि । ओ ई अनुभव कएल जे सभ उन्नतिक मूल मातृभाषाक उन्नतिए थिक । जीवछ मिश्रक उपन्यास 'रामेश्वर' (१९१६ ई०), जनार्दन झा 'जनसीदन'क 'निर्दयी सासु' (मि० मि० १९१४ ई० तथा पुस्तकाकार १९८४ ई०) एवं राम बिहारी लाल दासक 'सुमति' [१९१८ ई०] में 'निर्दयीसासु' तथा 'सुमति' वैवाहिक समस्या पर अछि । 'रामेश्वर'क समस्या भुख, अभाव, गरीबी भ्रष्टाचार एवं मानवीय कल्याणक अछि । प्रथम दू उपन्यासक अपेक्षे 'सुमति'क कलेवर पैघ अछि तथा पात्रमे विविधता छैक । किन्तु, निबन्ध शैलीक भाषा तथा पैघ-पैघ वाक्य संरचनाक कारणे 'सुमति'क शिल्प आ भाषामे ओतेक सहजता नहि अछि, जतेक 'निर्दयी सासु' वा 'रामेश्वर'मे पाठक अनुभव करैत अछि ।

'निर्दयी सासु' तथा 'सुमति' दूनु स्त्री प्रधान रचना थिक । परंच निर्दयी सासु'मे जतय पुरुष पात्रक व्यक्तित्व अत्यन्त गौण अछि, 'सुमति'मे ओ स्थिति नहि छैक । 'निर्दयी सासु'क यशोदा मूक अछि । बिना एको शब्द बजने सभ किछु सहैत जाइत अछि । परंच 'सुमतिक' सुमतिमे नामगुण पूर्णतः चरितार्थ भेल अछि । सासुरवाससँ पूर्वहि सुमति सुशिक्षिता भए जाइत अछि । सासुर गेलापर आधमक पूर्ण प्रबन्ध अपना हाथमे लए पतिक उद्धार कएलाक बाद समाजक उद्धार हेतु सक्रिय भए जाइछ । अतः रचनाक सोहे-स्यता जतेक प्रसार आ स्पष्ट रूपमे 'सुमति'मे व्यक्त भेल अछि, ते स्पष्टता 'रामेश्वर' आ 'निर्दयी सासु'मे नहि अछि । 'सुमति'मे उपन्यासकार एक पात्र उचितवक्तकेँ अनने छथि जे बीच-बीचमे टीपैत जाइत अछि ।

डॉ० जयकान्त मिश्र अपन इतिहास ग्रंथमे 'सुमतिक' चर्चा आ विक्षेपण कएने छथि । बादक पीढ़ीक इतिहासकार लेल 'सुमति' विषयक ज्ञानक ओएह मात्र आधार भेलैक । पोथी पढ़ि लिखबाक अवसर प्रायः पोथीक अनुपलब्धताक कारणे नहि भेलैक । प्रो० राधाकृष्ण चौधरी (१९२४-८५) ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर'मे 'सुमति'क उल्लेख अवश्य कएने छथि । मुदा समेत अछि मूल पोथी बिना पढ़ने-से मात्र एक उदाहरण सँ स्पष्ट भए जायत । सुमति थिकनि मनोरथ लाभक कन्या आ सहलोला बाबूक पुत्रवधु । मुदा डॉ० मिश्रक इतिहासमे मुद्रण-दोषे सुमति भए गेलीह सहलोला बाबूक बेटी आ मनोरथ लाभक पुतहु । एहि अशुद्धिकेँ रोहरावंत प्रो० राधाकृष्ण चौधरी लिखल—'When the heroine Sumati daughter in law of Manorath labh arrives, she manages things so well that the fortune of the family takes a better turn.' कहबाक तात्पर्य जे मैथिलीक अन्ये आरम्भिक उपन्यास जकां 'सुमति' सेहो पढ़ल नहि गेल अछि । चर्चक आ विक्षेपक स्थिति तँ बादमे अबैत अछि ।

हमरा एहि बातक प्रसन्नता अछि जे मैथिलीक चारि गोटा आरम्भिक उपन्यास 'रामेश्वर' (१९१६-जीवछ मिश्र) 'निर्दयी सासु' एवं 'पुनर्विवाह' (१९१४ आ १९२५-जनसीदनजी), तथा 'सुमति' (१९१८)केँ स्रोतसँ ताकि ज्ञानबामे सफल भेलहुँ । ओहि प्रसंग समय-समय पर लिखि साहित्यानुसारी मैथिलिक ध्यान आकृष्ट कएल । अनुपलब्धकेँ गुलम करैबामे सफलता भेटल बाहिसँ मैथिली भाषा आ साहित्यक प्रसंग पसरल कतेको भ्रान्तिक निराकरण संभव भेल अछि । ई उपन्यासकार लोकनि अथवा एहि वर्गक अन्ये साहित्यकार मैथिलीक साहित्यिक परिवारक बरेव्य एवं श्रावः स्मरणीय पुरस्सा थिकथि । हिनकालोकनिक साहित्यिक अवदानसँ प्रत्येक पीढ़ीक माथ उठल रहत । मुदा अपन पारिवारिक जीवनक असफलता सँ फुण्डित किछु एहनो लोक हमरा लोकनिक बीच छथि जिनका अपन बाप-पितामह अथवा पुरस्सा लोकनिक अवदानक चर्चे पर झड़की लागि जाइत छनि । अलोपित होइत



रचनाओं के ताकि अनचाक एहल कोनो प्रयास हुनका निरर्थक नहीत छनि तथा विवेचन प्रतिपादनमे दुष्ट कुटिल जालोचनाक गंध भेटैत छनि । मोहन कुटिल आ कुटिल व्यक्तिके रास बिहारी लाल दासक असूल्य कृति 'सुमति'क पुनः मुद्रणमे जे 'चाचा भतिजाबाद' केर नौ स्थापित होइत अनुभव होति तें हम अपन माथ किएक धूनु ।

'सुमतिक' सम्पादनक काममे सबसे पहिने मोहन पंडित छथि स्व० काञ्ची नाथ झा 'किरण' (१९०६-१९०८) जे पोषी मुलभ कए रास बिहारी लाल दासक प्रसंग लिखबा लेल प्रेरित कएल । कतेको अन्य योजना जका एह काममे पण्डित श्री गोविन्द झा, प्रो० श्री आनन्द मिश्र तथा डॉ० श्री गोकुल नाथ झाक वैचारिक सहयोग भेटैत अछि । पत्नी श्रीमती कल्पना झा पूर्वहिन कतेको प्रकाशन जका 'सुमतिक' प्रेस काफी तैयार कए सहयोग कएल । श्री राजनन्दन लाल दास (कर्णामृत, कमकला) एवं श्री जगदानन्द लाल दास संचालक चतुरानन स्मारक पुस्तकालय, भन्सी मुजीजीक पारिवारिक परिषदक सूचना देल । एहि सब व्यक्तिक प्रति हम अपन हार्दिक आभार प्रकट करैत छी ।

अन्तमे हम अच्छी गामन माटिक प्रति अपन नमन अर्पित करैत छी जे मुंशी रास बिहारी लाल दासक अतिरिक्त कालीकुमार दास (१९०२-४६) गुणवन्त लाल दास आ हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज' (१९०६-४५) सभ साहित्यकारके जन्म देलक जाहि नौ मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि भेलैक अछि । मुदा सबसँ बेसी ग्रन्थवादक पात्र छनि उर्वशी प्रकाशनक अधिष्ठाता श्री गोपीकान्त झा जे मिथिलाक साहित्य-वार्तिक बीज-वस्तुके प्रकाशनमे जाति अपन साहित्यिक आ सांस्कृतिक धरोहर सँ आबुक लोकके परिचित करैबा लेल फाँड़ बान्हित्यर छथि ।



पटना कोषागारा डा० रमानन्द झा 'रमण' १८-१०-८४

## समर्पण

प्रणवपाल गुणमार धार्मिक प्रवर भूसुर लण्डवला मुलाज्ज प्रभोकर माननीय मन्महाराजधिराज मिथिलेश श्री १०८ श्रीमान रमेश्वर सिंह बहादुर जी० ती० आइ० ई०, के० बी० ई०क पाणि सरोरुहमे सादर समर्पण ।

धोमन ।

मैथिलबन्धक मोल्लिमोर मिथिलाधिपति परम पूज्य श्रीमाने धिकरु । अतएव, मैथिली भाषा साहित्योद्यानक एक नव विकसित तथा मुरभित ई 'सुमति' सुमन श्रीमानक कमनीय कर कमलमे सादर समर्पित अछि । बेहि 'सुमतिक' सुयोग्य साहक एकमात्र श्रीमाने धिकरु । अतः श्रीमानहिके अपनीला सँ समर्पकके सुमति सुफल होयतक ।

भवदीयानुगृहीत

रासबिहारी लाल दास



## भूमिका

हम 'मिथिला दर्पण' के भूमिकामे कहि अयलहुँ अछि जे पाठक महोदयकेँ उक्त ग्रन्थ यदि किञ्चित् कदाचित् रोचक तथा लाभदायक होयतन्ह तौ हम परम उत्साही भै कोनो नवीनोपहारक सहित गुणग्राही पाठकक सेवामे पुनः उपस्थित होएब । हमरा एतबो आशा नहि छल जे हमर सन अपटु अपटुक प्रथम कण्ठेरिषहुँ केओ अवलोकन करता किन्तु—“बड़े सनेहु लखुन पर करहीं। गिरि निज शिरन सवा तृण धरही । जलधि अगाध मीलि बह फेनू । संतत धरणि धरत छिर रेनू ॥” येही धारणा सौं विद्योत्साही गुणग्राही विद्या-विवेकी पाठकक सत्कार तथा महानुभाव सम्पादकक समालोचनाक समस्कार सौं मिथिला दर्पणक हजारो प्रति समस्त भारतवर्ष, आसाम, नेपाल तथा इंग्लैंड प्रदेशमे हाथोहाथ छूः उड़िआय गेल । कियेक नहि ? “छारव दार नारि सभ स्वामी । राल सुनधर अन्तरवामी ॥” जेहि पर कृपा करहि जन जानी । कवि उर अखिर नचावहि वाली ॥” किन्तु एतेक भेलहुँ पर सखेय कहक पड़ैत अछि जे जाहि मैथिल समाजक हेतु उक्त ग्रन्थक रचना क्यस गेलि ताहि मैथिल समाजमे उपरोक्त ग्रन्थक आदर स्वल्पतरे भेल । इहो होएब उचिते कियेक तौ ई सत्ये जे ‘मणि माणिक मुक्ता कवि सैसी ।’ अहि गिरि गज शिर सोह न तैसी ।’ नृप किरीट तरुणी तनु पाइ । लहै सुयश शोभा अधिकाइ तैसहि सुकवि कवित बुध कहहीं । उपजहि अनत अनत छवि लहहीं ॥

अस्तु, हिन्दी भाषानुरागी रसिक तथा प्रेमी पाठकक प्रोत्साहन सौं हिन्दी भाषाक अन्वय ग्रन्थ रचनाक परमाभिलाषी भेलहुँ । किन्तु मैथिली भाषाक रसिक कतिपय विवृध भिन्न महाशय अनुरोध करय लगलाहे जे निज मातृ-भाषाक उन्नतिये सभ उन्नतिक मूल होइत अछि । अतएव येहि बेरि मिथिला भाषा साहित्येक सेवन करय परमावश्यक थीक । हमरा सभक आधुनिक

सामाजिक वशा परम अधोगति भै प्राप्तिकेँ चलति अछि, तँ येहि बेरि मिथिले भाषामे समाज सुधार पर कोनो एक उपन्यास रचना रचू, जाहिसँ समाज पर प्रचुर प्रभाव पड़ैक ।

अतएव, हम हस्तगत ‘सुमति’ उपन्यास रचनाक विवेचना पर उद्यत भेलहुँ । किन्तु ने हम साहित्याचार्य, ने काव्यतीर्थ ने तर्करत्ने अर्थात् किछु नहि केवल निरक्षर भट्टाचार्य । तखन कोन योग्यताक बलें समाजक सुयोग सेबाई नै सकय । अस्तु, येही संकल्प-बिकल्पक साक्षात्पक्षे निराश्रयताक आभास भासित होबय लागल । किन्तु येही तर्क-वितर्कक आक्रमणमे जगजननी सौं मैथिलीक अनुकम्पा सौं निराश हृदयमे किछु आशाक झांकी दर्शनक अनुभव होइत । तत्काले स्फुरण भै आएल जे अनन्ताकाशमे क्षयपति तथा मछली तौ अपन-अपन सामर्थ्यानुसारे विचरैत छथि । तेँ हमहुँ ओही मंत्राधार पर यथा-शक्ति मिथिला भाषा साहित्यकाशमे परिभ्रमणक प्रयत्न कयल अछि । नम कण्ठलस्थ नक्षत्रादिक दर्शन तौ सहजमे चक्षुपातहि सँ नै सकैत अछि परन्तु घूमण्डल समाजाकाशस्थ चरित्ररूपी नक्षत्रक निरीक्षण तौ उपन्यास रूपी आद ग्यासहीक [वस्त्रा] अवलम्बन सौं समाजगत गुप्त प्रकट सानि-सानिक चरित्ररूपी नक्षत्र मूल्य लागत । तँ कहि सकैत छी जे समाजरूपी फोटोकमराक लेन्स समाजगत चरित्र प्रदर्शनीक पासपोर्ट बखवा गाइड समाज चरित्रक चित्राधार अर्थात् अवलम्ब समाज सुधार तथा चरित्र गठनक आदर्श तथा आधार उपन्यासे थीक । अतएव सासाजिक उप-न्यासक पठन सौं मनुष्य सहजमे अपन दूषित चरित्रकेँ सुविचार सौं परिवर्तन कय सकैत अछि । कोन कुकर्म वा सुकर्मक केहेन परिणाम भै सकैत अछि । तँ यदि येहि ‘सुमति’ उपन्यासक पठन सौं विचारशील उपन्यास प्रिय तथा रसिक पाठक लाभ उठीलाह तथा समाजक किञ्चित् सुधार करताह तौ हमर परिश्रम सार्बक होयत । इत्यलम ।

भवी

ता: ६. ८. १९१८ ई०

ग्रन्थकार



अधिकांश लोग इससे अनजान हैं। अतएव विचारशील पाठक-वाठिशा के पठन समय में यदि कदाचित् स्वनाम सौ साक्षात् भी जाइल तौ ग्रन्थकर्ता सौ आकारण सष्ट कसमपि नहि होषि अथवा उपन्यासाङ्कित पटना के अपना उपर चरितार्थ नहि करषि किन्तु उपन्यासाङ्कित दुष्यंता सौ पूर्णतया परिचित भै समाज सुधारक विवेचना करषि तथा सर्वसम्मतानुसार एक येहन नियमावली निर्माण करषि बाहि सौ अपार अपव्यय अनुचित विधि-व्यवहार तथा फकड़दलालीक बाहि सौ भासित समाज के वचावधि नहि तौ 'दिन-दिन बढ़य सबाइ रामधन कवहु न लागय काइ' ।

### विशेष वक्तव्य

पाठक ! हस्तगत सुमति उपन्यास सत्यतापूर्ण सामाजिक दुष्यंताक एक चित्राङ्गुण शीक । उपन्यासस्थ पात्र-पात्री तथा स्थानक नामक कल्पना पर जल्पना करव असंगत । अतएव विचारशील पाठक-वाठिशा के पठन समय में यदि कदाचित् स्वनाम सौ साक्षात् भी जाइल तौ ग्रन्थकर्ता सौ आकारण सष्ट कसमपि नहि होषि अथवा उपन्यासाङ्कित पटना के अपना उपर चरितार्थ नहि करषि किन्तु उपन्यासाङ्कित दुष्यंता सौ पूर्णतया परिचित भै समाज सुधारक विवेचना करषि तथा सर्वसम्मतानुसार एक येहन नियमावली निर्माण करषि बाहि सौ अपार अपव्यय अनुचित विधि-व्यवहार तथा फकड़दलालीक बाहि सौ भासित समाज के वचावधि नहि तौ 'दिन-दिन बढ़य सबाइ रामधन कवहु न लागय काइ' ।

ग्रन्थकर्ता

# सुमति

(मैथिली उपन्यास)



मुंशी रासबिहारी लाल दास



जोसु

(सामान्य विषय)

साह लाल सिन्हा

## प्रथम परिच्छेद

‘जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना ।

जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥’

आइ बेशाख सुदि पञ्चदशीक ठीकाठीक दुपहरक समय थिक । भगवान भुवन भास्करक प्रखर प्रचण्ड रश्मि सौं जर्जरीभूत रौदायल कौआसन मुँह बौने कतेक व्यक्ति मुखमण्डल तथा वक्षस्थल पर जीर्णशीर्ण तौनी सौं वायुके विकम्पित करैत तथा सुखद त्रिविध समीर सेवनार्थ येहि वृक्षक छाया, ओहि वृक्षक छाया तथा येहि दालान सौं ओहि दालान दिशि दौड़-धूप कए रहल छथि । विश्वामार्थी व्यक्तिके संतप्त करैत-करैत दिनमणियो किंचित कालान्तर मे सन्ध्या-देवीक भवनमे प्रवेश करए लगताह । सन्ध्यादेवीक भवनमे पदार्पण करितहि सुधाकर पूर्व नील नभ मण्डलक यवनिका उठाय मंद-मंद मनोहर हँसी हँसैत विकसित भेल चल अबैत छथि । सुधांशुक लालिमा देखितहि प्राची पवनो पिनपिनाय लगलाह । बोध होइत अछि जे अनुतपित व्यक्तिक अङ्ग-प्रत्यङ्ग सौं विभाकरक अनुतापके ताकि-ताकि कय, खेहारय लागल छथि ।

ठीक ओही अवसर पर उद्धव दास पंजिकार कुमार सोनेलालक सिद्धान्त दिवसक निर्णयार्थ श्रीमान सहलोला बाबूक निज नवनिर्मित सदन पर समागत भेल छथि । जाहि स्थान पर पंजिकार प्रस्तुत छथि से स्थान परम प्रसिद्ध पर-लोकगत संचित निधिक विशाल प्रकाण्ड अट्टालिकावलीक भग्नावशिष्ट थीक । जकरा देखला सौं अहुखन धरि विदित होइत अछि जे निधि महानुभावक अध्यक्षतामे उपरोक्त स्थान अपन छवि छटाक आँगा प्रायः राजप्रसादहुक मानमर्यादके तिरस्कार करैत छल होएत । किन्तु, सम्प्रति शून्य मशान तथा अति सोचनीय भए रहल अछि । छिन्न-भिन्न भग्नावशिष्ट पर दृष्टिपात होइतहि दर्शकक सजलनयन वरवश अश्रुवारि सौं सिंचन करय लगैत छैक ।



संचित निधिक भवनक परिपालित व्यक्तिक कुतज्ञ लोचनके, तौ मोतीक उपहार देने बिना औरो नहि रहल जाइत छैक । ठाम-ठाम सहल-मलल पजेबक मोतीरि, कतहु-कतहु सड़ीरि, ठाम-ठाम झौंसुड़ जाहिमे गीदड़-सिघार मानि बनाय बैसल मटकी मारैत तथा चोरा-नुकी खेलिक अभ्यास करैत तथा कतहु-कतहु कुकरी गगनोन्मुख में भों-भों कय भुंकैत देखि पड़ैत छैक ।

जिज्ञासू पाठक ! श्रीमान् सहलोला बाबूक परिचय सौ अपने प्रायः अपरिचित होयब, हेत ! विशेष परिचय पत्रिकार महासय सौ वृत्ति सम्योचित पर प्रकाशित करब । किन्तु, सम्प्रति हम एतेक अवश्य कहब जे हिनक पूर्व पुरुषा विदु माधारण व्यक्ति नहि । बड़े नामी-नामी, परिश्रमी, उद्योगी, साहसी, मिलन्यवी तथा वर्षशस्त्रमे बड़े निपुण, जाहि प्रसादे बीसो हजार टाकाक वार्षिक आय हाथी-घोड़ा, सर-बचारी, गाय-बहिरि, सर-सकास, नौकर-चाकर सौ परिपूरित छलथीन्ह । किन्तु, खेद ! अपन प्रभुत्वमे निपुल अपव्यय, पचानाभोजी सरकुटुम्बक समष्ट तथा हुनके समक सरसाहित्य दायित्वक कारणे पूर्वान्मुदयक सौभाग्य मदन सौ बहिर्गत भै गेल छथि । परन्तु, शिवरानुग्रह सँ अष्टसिद्धि रुपिणी आठ सन्तान अर्थात् चारि बालक तथा चारि बालिकाक सौभाग्यक पुनरभ्युदय भेलन्ह । बालक प्रभुतिक नाम हीरालाल, जवाहिरलाल, मोती लाल, सोने लाल और बालिका विश्वमोहिनी, मदनमोहिनी, कामिनी तथा वामिनी छलन्ह । सहलोलापनक साक्षात्त्वमे पूर्वोक्त किया-कलाप मखखालाक होम मध्य असीमाहुति दैत-दैत बीसो हजारक आमदनीबला भू-सम्पत्तिके स्वाहा कए देलन्हि । नितान्त मे भाव केवल हजारकहिक वार्षिक आय बाँधि गेल छन्हि । ओही श्रीमान् सहलोला बाबूक अन्तिम पुत्र कुमार सोनेलालक सिद्धान्त ज्येष्ठ बदि उमी धर्मेस्वरक दिन निर्णय कराव पत्रिकार प्रभात समयमे पाँच मुद्रा पुरस्कार प्राप्ति कय मायापुरी प्रस्थान कयल । तदन्तर श्रीमान् सहलोला बाबू सिद्धान्त वरिष्ठातक छाठबाटक विचारार्थ निज दयाव कुबेरनिधि, रत्नपतिनिधि, माणिकचन्द्र निधि, पद्मनिधि, मुकुन्दनिधि परसमणि निधि, पोखराजनिधि, विद्रुमनिधि तथा

खोरशान्निधि अर्थात् तबोनिधिक संघ दालान पर बैसल-बैसल परामर्श करय लागल छथि ।

अनुभवी पाठक ! अपने आव आवां कनेक देखैत चलू । श्रीमान् सहलोला बाबू अपन अवशिष्ट सम्पत्तिपहुँकेँ कोनविधि सँ निःशेष करबा पर कटिबद्ध भेल छथि । निःशेष करवे करताह दोसर आन कोन कार्य मध्य, ई कि कोनो नवीन घटना धिकन्हि, वैह जी वैह ! अरे कनेक कहवो तँ कर केवल हूँ-हूँ कयनहि तौ करी बुझि नहि पड़ैतक । अहः अपनेक अहनि पर किञ्चितो नहि चढ़ैत अछि ? नहि चढ़ैत अछि तौ हमरा सौ बूझ, नहि तौ जागां चलू ।

सिद्धान्त-स्वाह ! बस-बस सम्पत्तिविवरणक आव आवा कोनो प्रयोजने नहि । पट्टरय उपस्थित भै गेल "सिद्धि + जा + जन्त = सिद्धान्त, तथा जि + माह = स्वाह ! भावार्थ जे सिद्धान्त विवाहमे सखी केँ जन्त करैत-करैत आजीवन विशेष आह भरैत रही । जी ? येही अर्थ पर ने अपनेक लक्ष्य अछि ? वाह ! वाह !! अपनेक तीक्ष्ण बुद्धिक की विसमयता बुझि पड़ैत अछि । अपने तौ साक्षात् लालबुझकडेँ बुझि पड़ैत छी ।

उचितवक्ता दास-जी बहलोल बाबू लोकनि ! विमोहवशे सिद्धान्त विवाहमे विपुल व्यय कयलहि सौ केयो शूर नहि कहौलक अछि । देखू गोस्वामी तुलसीदास महानुभाव बहुत ठीक कहलन्हि अछि "जरहि पतङ्ग विमोहवश भार बहहि खर बुन्द । ते नहि शूर कहावही समुझि देखू मतिमन्द ॥"

अस्तु ! श्रीमान् सहलोला बाबू सिद्धान्त विवाहक एक विशेष प्रवन्ध रचय लागल छथि । बहलोल बाबू कहैत छथीन्ह, ओ माईजी ! हमरहु लोकनि येही सिद्धान्त विवाहक मारल दीनाहीनावस्थान पक्षमे पतित भै गेल छी तथापि येहनो स्थिति मध्य जखन कोनो सिद्धान्त विवाह करक पड़ैत अछि, तखन अपना अवस्था केँ विचारय नहि लगैत छी । सेतो-पवार बेचि जी-जान उर्पछि-उर्पछि हाथी-घोड़ा, नट्वा-बजनिया, सौ वरिष्ठात मजबे करैत छी, अपने तौ घनाइये छी, तखन जी अपनेहि नहि करी तौ दोसर करवे केँ करय ?



सोने बबुआ अपनेक अन्तिमे पुत्र श्रीक, एकर सिद्धान्त विवाह समक सिद्धान्त विवाह सौ विशेष समारोह सौ सम्पन्न करिषीक, जे लोक हँसय नहि । नहि सौ समझा सौ हँसबाक इह सज होयत ।

उचितवक्ता दास-औ खोपड़ीक रहनिहार राजभवनक स्वयं देखनिहार । बरियात सजनाक समयमे अपने मिथ्या भाङ्गभील सौ सुरपतियहू केँ मातु करवा पर भाय कियेक मुड़वैत छी ? “चिन्हारे अहाँ छी --- करेछी कि शौचे” ।

प्रिय पाठक ! श्रीमान सहलोला बाबू यद्यपि एखन पूर्वभ्रष्टक सदन सौ बहिर्गतप्राय छथि तथापि पुनर्जन-परिजनक पीठ डोलीअलि सौ सादरक पीरा बाबुसहि जकाँ फूलि उठलाह और बहलोला बाबू सौ चलवलाय-बलवलाय कहय समझबीरह-“औ बहलोला ! अहाँ बहलोला और हम सहलोला हमरहि अहाँकेँ सौ बरियात पावस एमोदमे नाकसाँक-नाकसाँक करक पदैत अछि । यदि अहाँ कहवे करैत छी तौ हमरो आंच सोसर कोनो करैतबता अछि नहि, जकर चिन्ता करब । बेस ! अहाँ सबहि आज हमर बरियात सावनक घटा पर जटा जुनि पटकैत जाव । यदि अधिक नहि तौ कम्मो सौ कम्म पन्द्रह हाथी, पच्चीस घोडा, पाँच खडखडिया, दु-चारि सरहदारी, एक लामगीरा, दस पन्द्रह फई, बरी-जाजिम, दू-एक गिरीह, गढ़वा तथा पाँचो प्रकारक बज्जा तौ अवश्य बाही लगन येहि सौ अतिरिक्त जहाँ तक जे जहाँ, अहाँ सभ प्रयत्न कर सकी, से करैत जाव । उपरोक्त आइम्बर पर लहलेस दासहुक मनक आवेग यमिह नहि सकलैरह, कहय लागल छथीन्ह, “औ काकाजी ! अपने जमान एतेक करवे करवैक लगन बेचारा खाइसेक येहन कोन पूर्वजन्मक तपस्याक बूकि छैकि जे ओकरा विमुक्त करैत छियैक” । ताहि पर श्रीमान सहलोला बाबू कहैत छथीन्ह, “बेस-बेस ! अहाँ बहलोला, बहलोला लोकनि-“जस-जस सुरसा बदन बढ़ाया । तामु हुनू कपि रूप देलाबा” कयल कह । अस्तु ! उपरोक्त सम्पन्न-मण्डन तथा समर्थन होइत-हवाईत सिद्धान्तक विदसो जाइ पहुँचि गेल । अहाँ मुहूर्तहि सौ श्रीमान सहलोला बाबूक सदन पर बरियात स्वाङ्गक सकल सामान धर्त-धर्तः सज्जित होइय लागल अछि ।

अन्तःपुरहु मध्य स्वयं-परिजनक सौभागिनी बुभानूना बनिता, स्वर्णसता, हेमलता, ललिता, मुनीला, बधला, बज्जसता, बन्दकता, मनोरमा, स्यामा, इन्दिरा, तारा, नीलावती, मालती, सरस्वती तथा दमयन्ती प्रभृति वीणा-विनिविह स्वर सौ सामयिक शुभगान करैत प्राङ्गण केँ प्रभृति करय लगभीहि । येहि समाजक कलरज सौ अनुमान होइत अछि जे भवनक संकीर्णताक संकोचे विपुल उच्छाह प्राङ्गण सौ उपजाय-उफताय बाहर बहि बलल । बरियात भोज्यहुक एक विशेष विन्यास भै रहल अछि । भोज्य कबराकूट करैत-करैत बरियाती बल सन्ध्याक समय विचारपुरक उद्यान अर्थात् सिद्धान्तक स्थान पर प्रस्थान करय लागल ।

## द्वितीय परिच्छेद सिद्धान्त

‘कोउ सकहि न करत नखाने,  
जेहि लगी लगन सोइ जाने ।’

श्रीमान सहलोलाबाबूक भृत्यगण आज एक दिन पूर्वहि सौ सिद्धान्तस्थल केँ मुगलित कय रहल छीन्ह ।-कसिगण सामान्य शानिवाता केँ तिरस्थार करैत एक चौसठि सम्मा ओलाराबाजा सिद्धान्त लामगीराक इत्येक स्तम्भ केँ एकदंगक खोल सौ आवरणित कय डाढ़ कयलक अछि । अधोभाग केँ कान-पुर एजमिन मिनल कम्पनी तथा आगराक मनोहर सौ मनोहर दगी गतेचा सतरंगी, कम्पण्टरपेन (जाजिम) सौ मुगलित नय रहल अछि ।

आलोकदर्शक अर्थात् मशालची मण्ड बम्बई सिटजन लाइट तथा कल-कला औरलर ग्लास कम्पनीक चक्षु केँ चकचोन्निआवय वाला झालफानूस, हाथी तथा दिवाजगीर गैरह सौ लामगीरा केँ जगमगवैत हृदय केँ हरक कय रहल अछि । अहमदाबाद कण्डील (सोमवती) कम्पनीक एजेन्ट यण्डितक



वर्षादि प्रवेष्ट (उपस्थित) कय रहल छथि । मासीमण्डली मनोरम बन्दनवार पताका तोरणारिक सौ सामग्री के सिमृषित कय रहलिन छथि । एवंकारे प्रतीक कार्यकर्ता अपन-अपन कार्य कौशलताक तमूना देखाय-देखाय सिद्धान्तक दिन बरियानी दसमकनक बाटाबाटी टुकटकी चलीरवन् समीने छथि । रात्रिक नी अर्जैत अर्जैत श्रीमान सहलोला बाधु बनवल सहित उपरोक्त स्थान पर उपस्थित भेलाह । स्थान पर पहुँचैत नाना अलङ्कारक खां स्वागत सूचक दश-बाजु बोट कमनोला लगातार घड़ाम-घड़ाम कय छोड़ल ।

आह पहर दिन अछिने कन्यापद मनोरम लाभ सामान्य रीतिमे केवल बीस पच्चीस व्यक्तिक संग सिद्धान्त स्थल अर्थात् विचारपुरक अग्राल मध्य समागत भेलाह । श्रीमान सहलोला बाधुक राजनीय डाटबाटक तैयारी देखि-देखि निमुष्य भै गेल छथि । सेय समय मे अनावधान अन्यान्य वृत्तप्रवन्ध काइये की सकैत छथि तथापि जहाँ तक 'सास' तहाँ तक आस, करैत द्विबारि अनुचरक सहित सरस्वर दक्षिणमा बाजार पूर्वपरिवित्त सहपद सहक कोडी पर पहुँचलाह और बाधु की बाजना भारतीलाय कय हतार सौयाक एक हेफ्ट-नोट (इन्दुवत्तलक चिह्नी) मिलि साहुजीक इसामे समर्थ कय कोडी सौ रजारी मुड़ी मुड़िआय गेल । सदस्य जेहूँ देखा देखि पूजाक निमित्त विशेष-विशेष सिद्धान्तक उपरुक्त स्रज्जाम बाजना सौ चन्दोबरक कय पुष्पित होइत तीन दशानु कुलानु समुक्त दरबार मे प्रस्तुत भेलाह और राजनी मनभरन कण्ठक गहिन आमुनीय श्रीमान महाराजधिराजक सेवामे उपस्थित भै निवेदन कयलन्ह । श्रीमान ! सेय कन्या सिद्धान्त आह कन्या समय विचारपुरक अग्राल मध्य होइत तहाँ मण्डपक अग्रमण्डल भेलाह छथि । आहि सौ सिद्धान्त मध्य विशेष शोभा-सुन्दर होइत । समस्त आजा मेककके प्रधान कयल जाइत । आर्चित श्रीमान महाराजधिराज सौ सकाने हुकुम देल गेलन्ह जे प्रार्थक के एक विशेष अरिवातक समुचित सामान अर्थात् पच्चीस हाथी, पच्चास घोड़ा, तीन तामदान सकल सामान सहित दसवायस नामक सामग्री, अंगरेजी बाजाक बँड, स्वदेशी दू-तीन गिरोह मर्हक तथा दसवारह

प्रकारक वादन, सिद्धान्त शोभा-सुन्दर निमित्त सुरम्ह देल जाइन्ह । आठर (आमा) पास होइत नाना सकल सामान बातक बातमे जखन प्रस्तुत भै गेलन्ह तखन मनोरम लाभ की पुरन्दर सम शोभा धारण कयमे सख्या समय पाँच बजैत-बजैत सिद्धान्तस्थल पर प्रत्यागत भेलाह । राज दरबारक चतुर कार्यकर्ताक वयला सौ महाराजक भीतरहि भीतरमे मनोरमोक एक विशद विस्तीर्ण पण्डाल (सभा मण्डप) आनन-फाननमे सर्वार्द्ध सौ सुमजित भै श्रीमान सहलोला बाधुक पण्डालक आनने-सामने एक अनुपम छटा छहरावय लगलन्ह ।

उपरोक्त व्यवसाय विशेष परिचय बुझवाक हेतु हमर कलेक जिज्ञासु ग्रिय पाठक के उत्कण्ठ लागि गेल होयतन्ह ।

पाठक ! हम अपनेक उत्कण्ठ के छोड़यवाक हेतु अचूक चेष्टा कय रहल छी । समुचित पर उक्तव्यक्तिक पश्चात् परिचय प्राप्ति कराय देब । परन्तु, एखन हम एतेक धरि अवसर कहि सकैत छी जे मनोरम लाभ विना पितामह वर्षाशास्त्रमे परम पण्डित कमलचर्मि मन्त्रीचूस मनहूस कार्यपथमे कृपणताक साक्षात् अवतारे छलथीन्ह जाहि कारणे लाभ की के बहुजन धरि गए साबासए बिगहा साबराय दूद-काइ गए बिगहा बिराह तथा कावनी छैन्ह । सम्प्रति अएतहु आलापुर प्रमन्नाक एक बीस-पच्चीस हजार सौयाक कायदीबासा मौजेक पटवारी छथि । रैयति जेठरैयतिक बीहि ठाम मान-दान विशेष तरहेँ छैन्ह । किन्तु एतेक योग्यता भेलहुँ पर जखन तीन स्वया परमाहात्म्य मजबूती सिपाही मौजे पर अबैत छैन्ह तखन देवतहि जकाँ पुजवैत तथा तुम-ताम, रै-ने छोड़ि दोसर आम कोनो कये नहि पहुँ सौ बाहर करैत छन्हि । किन्तु पर परती अपन धर्मसाक गुनछरी नौ बाकी बसैत रहलाह तखन सौ साक्षात् राजनीये डाट-बाट सौ सभामण्डपमे विराजमान भै रहल छथि ।

उभयपद अपन-अपन गोल वाहि सुमजित तथा मंत्र मन्त्र भेल उप-स्थित छथि । सुगत सभा मण्डप मध्य भागमे एक सज्जल घट (शाही वा



सीमासी) पुण्यमाल तथा नवपल्लव सौ विभूषित स्थापित छैन्हि । इह बलक राजावाचिक पदरज सौ सिद्धान्तस्वयं अति गुञ्जारित भै रहल अछि । ओहि अवसर पर बनगोस केहरिक एक विहटनाद हुकातु सभा के निरवाचकास्यो मध्य पारित कय देलक । अर्धकोपरान्त निस्तब्धता के भंग करैत सरदारी तथा बिचारी मल्लिक पञ्जीकार प्रभृति गुणलदलक नेता सौ सिद्धान्तकर्त्ताक अर्थात् ओटा छोटोनिहारक परामर्शीय परिष्कार करय लगलाह । एक पक्षक सिद्धान्त-कर्त्ताक निर्णय करैत प्रतिपक्षीक दिशि झुकैत गेलाह । उभय प्रत्येक सिद्धान्त-कर्त्ताक निर्वाचन भेला पर सरदारी मल्लिक प्रधान पञ्जीकार अवसर भै समासद सौ निवेदन करय लागल छथीन्ह, "ओ समासद ! अपने सबहि सौ हमरा किछु विन्ती कर्तव्य, साकाछ भै श्रवण कयल जाय । सम्प्रति बहुलोत्त पुराधिपति सञ्चित निधिक प्रपीच उचित निधिक पीच श्री सहलोत्ता निधिक पुत्र चिरञ्जीवी कुमार ओनेलालक सिद्धान्त मायापुरी निवासी मधुकर लाभक प्रपौत्री सोमनाथ लाभक पीची तथा श्री मनोरथ लाभक चिरञ्जीवनी पुत्रीक प्रतिवे प्रस्तावित अछि । अपने सबहिक सम्मति धरि हो, सौ सिद्धान्त पढ़ायल जाय ।"

उचितवक्ता दास—ओ पञ्जीकार अवर ! कथा सौ सभ तरहेँ समकूल अधिकार जाचि लेल अछि जे सिद्धान्त पढ़यवा पर अपने उक्त भेल छी ?

सरदारी मल्लिक पञ्जीकार—उचितवक्ता दासजी ! हम पञ्जीकार प्रभृति अधिकारक अनुसन्धान धर्मशास्त्र ('पञ्चमात् सप्तमायुर्द्वे माभूतः पितृमत्तथा' इत्यादि) तथा तुरपुर प्रवासी राजा हरिसिंह देव विमित पञ्जी प्रवन्धागुहादे कयल अछि । जेहि युगलजोड़ी अर्थात् वरकन्या के स्वात्म्यता रहि छैन्हि । जसल अनाधिकार नहि तसन सिद्धान्त पढ़यवा मध्य कोनो बाधा ओष नहि होइति अछि । एवं प्रकार पञ्जीकारक सरदीपिकेट (स्वस्ति) देला पर सर्व सम्मति सौ सिद्धान्त अनुमोदित भै गेल । तत्पश्चात् पञ्जीकारासंगम्य सर-दारी मल्लिक उभयपक्षक सिद्धान्तकर्त्ताक पथहस्त सौ पूर्व स्थापित पात्रके प्रहण करवाय सिद्धान्त संकल्प पञ्चांगिक पाठ करय लगलाह । विखर्जन

होइतहि चतुर्विक सौ "सुभम्भुवात्, "अर्थात् सुभ हो सुभ हो" वाक्यक फूल-सर्पण होय लागल । तदनन्तर सभास्थ सभासदगणक सम्मानार्थ नाना प्रकारक सुगन्धि अर्थात् ओटो-दिलबहार, ओटो-दिल-चमन, ओटो-डी-मोतिवा, ओटो-डी-खमसस, ओटो-डी-रोज तथा वाटर-डी-रोज अर्थात् गुलाब जलक मिञ्चन तथा मसाला पानपुङ्खीक वितरणक विपुलता सौ सभासद ओतप्रोत भै जाइत गेलाह । पान-सुपारीक सौ एक पक्षारे पक्षरि गेल । येही अभ्यन्तकमे सरदारी मल्लिक बिचारी मल्लिक, कृपाकर मल्लिक, फल्लर मल्लिक, विलट मल्लिक, मोचन दास शोधन दास, अपूछ दास, अज्ञान सिंह दास, बलेल दास तथा बड़लेल दास लोकनि सिद्धान्तकारक पात्रिसंगेकमे अस्वजन पत्र के साबनक बुन्दहि जकाँ सहारावप लगैत गेलाह । एष प्रथमक छटकोअलि निवृत्ति भेला पर गणना होय लागल सौ ६६ गोट ठहरल । यही निनानब्बेक केरिक् प्रवाहमे पड़ल वरपक्ष तर्क-वितर्कक महाभावरमे छपलाय लगलाह । वर-पक्षक अलमे बहुलोक महानपुरुष हुकार पुरय गेल छलथीन्ह । विनायक बल मुस्तार सहलोत्ता बाबूक दशा देखि डाढ़स बेत संबोधन करय लागल छथीन्ह, "बाबूजी ! इसमें पकड़ाने की कौन-सी बात है । आप छटपट उस छटकोअल की छोड़ छटोअल की पाँच से टटोलिये तुरत बाहू पा जायेंगे ।" मुस्तार साहिबक उपदेश वस्तुतः वरपक्षक हेतु ओहि समय कर्णधारक काम कय गेलाह । छटछूट कए कूट करय लगलाह सौ केवल उनचालिसे उपस्थित और ताठि सटिअयले अर्थात् अनुपस्थित । दिव्य दृष्टि सौ देखल गेल सौ अन्तिम क्षणमे विशेषतर शिशु मल्लिक, गर्भू मल्लिक, बतहू मल्लिक, अन्धर दास, फनहू दास तथा सरदारा दास प्रभृतिहिक अस्वजन पत्र प्रस्तुत छलैन्ह । कबल कसमूकन् ठसमठन् मध्य श्रीमान् सहलोत्ता बाबू धनवाली स्वयंति कलाह । तै सुफल लेलैन्ह किन्तु उक्त स्थान पर यदि आइ अकिञ्चन दास वरपक्ष रहितथि सौ हुनक की दशा होइतैन्हि तकर अनुभव कलकत्ता काली-बाट, आसाम, काबाक्या, कासीविश्वनाथ, प्रमाण, विवेकी तथा हरिद्वार तुरपेकी तीर्थस्वानक भूवतभोनी अनुभवी पाठक स्वयं कय गेथु ।



अविनाशकता दास—'वीन बूलाए तेरह जाए बेस मही की रीत । बाहर बाजे जा गये धरके गाये गीत ।' श्री विचारदास पञ्जीकार जी ! येहुनि धरीहि कियेक ? अपने सबहि असन पञ्जिप्रबन्धनुसारें अधिकारक जौन कयलैल छी, तखन कतोक सिद्धान्त जुटि अग टूटि कियेक जाइत अछि ? अपने लौ पञ्जीक समेजे छी, हरिनाथ प्रभाक कथा स्मरणे होयत, स्वजना-यात्रीक दोपे शर्मा जी बगडाल प्रसारित कयल गेलाह ।' उक्त दोषारोपक विचारणार्थ पञ्जी प्रबन्ध निर्मित कयल गेल जे भविष्य मे एतादृशी याचना पुनः ककरो भीषण नहि पड़ैक । सास्त्रकार लौ स्वजनयात्रीक वन्दविधान रीति नई निवासे निर्णय कयलै छथि । परन्तु अपनेक न्याय मध्य येहुन निवर्तनीक उल्लंघन कयनिहार पञ्जिकान्त अज्ञानसिंह रास सिद्धान्त पदो-निहार पञ्जिकारक दण्ड विधानक निर्णय हम विचारधीन पञ्जिकार तथा न्याय श्रिय पाठकक विचाराधीन छोड़ैत छी ।

विचारधीन पाठक ! येहन-येहन आकस्मिक गणनांतक आन्तरिक कारण पुजल ? यदि कौनों पाठक कै बोध नहि भेल होइन्हि लौ ओ आइ तारीख लौ उगमदास पढ़ले परित्याग कय देषु या विशेष मननशील ह्यो । अकिञ्चन दास सत्पावन मन खुट-खुट करैत रहैत छैन्हि, जे यदि कयनित् कथाक विशेष घोलघाल होयनैन्हि लौ पञ्जीकार ठट्ठक अलसलतमे पड़क पड़ैन्हि । तनिनिव पञ्जीकागच्छात्तिक अथवा अपन अङ्कित पञ्जीपटु अपचितक सम्पत्ति लेबा लौ गृहपोरि नैत गयि नै उपन्यासकार पञ्जिकारक घटकीनी कसौटी पर कसले लहि जाइत छैन्हि ! शृङ्खल सिद्धान्तक माथा हाथ दय "निरस्त वादो रेणे एण्डोपिद्रमायते" नै मनगच्छित वस्तु प्राप्ति कय लैत छथि । सिद्धान्तोत्तर जौन कयला पर यदि कदाचित् ओहि पञ्जीकारक पञ्जीवृत्तिमे अदूरदक्षिणा, अपदुता अदभिज्ञता प्रगट भै जेनैन्हि लौ महा कोकाहन उठैत एक दोसरे सिद्धान्तमिनयक यथनिका उठय संगैत छैन्हि ।

जिज्ञासु पाठक ! येहि अधिकांशमे श्रीमान् महलोला बाबू कै सहस्राधिक महा दातव्य जेनैन्हि । अस्तु सरपक्षक जिज्ञासा भै गेलि । आव कनेक

कन्योपसक खोज पुछारी करत उचित शोक । कन्योपक्ष मनोरथ लौन जे हजार टाका सिद्धान्त तीर्थक निमित्त कृण जेनैन्हि ताहि लौ ओहो कोन हने सुफल जेनैन्हि से मुनू । हजारौ टाकामे लौ सय सिद्धान्त इलकाइस तथा लम्प-लम्पामे मुन्का भै जेनैन्हि । आव सहस्रक मुन्का लौ मुन्ने हाथमे केवल एके सए रहि गेल छैन्हि । किन्तु उक्त तीर्थस्थान पञ्जिक "प्रतिपन्न स्याच्छब्द"क रगड़-भगड़ तथा दान-प्रदानक दायित्व पड़ले छैन्हि । राजक हाथो घोड़ाक जमादार जहरकुरकी ला तथा अंगरेजी-बाजाक-बैण्ड मास्टर मिस्टर रीतान कमरा: २६५) तथा ३५) शर्पाक एक-एक हेपट विल्ल (विट्ठा) मनोरथ शामक हाथमे दय-दय कहय जगलैन्हि "दीवानजी ! अब हमसोगो को भी मुताबिक विल्ल के विदाइ-सिदाइ दे देकर जल्द रोखसत कीजिये" । विल्ल के देखितहि दीवान जी कै १०६ धिबरी नोखार चढ़ि अवलैन्हि । ठामहि हुंभाय लगलाह । लाभजीक पुरहित सुमन्त आ सुमंत्रणा तथा झाड़फूकमे परम प्रवीण यजमान कै दुलही-आंगि लौ दुलहीत देखि शेट मनोरथक माथा हाथ दय लायि-धूनि उतारवाक मन पड़ि-पड़ि मुँह पटपटावय लगलाह । सब लौ मनहि मन पकैत छलाह जाहि लौ ककरो कसैगोचर होइताहि नहि छैलैक । किन्तु मूक लौ कहुसन-कहुसन हुंदात प्रकाश भै जाइन्हि जे "आहो लोकनि अपन-अपन जन-सम्पत्ति देही भयमे निरर्थक फुरपाय करैत जाइत छी । अरे ! आवहु लौ जेनैत बाइ जाउ । आवहु यदि जेनैत नहि जायैत लौ भिलावरियो लौ उत्तर भै जायैत ।" 'हमरा लोकनि सिद्धान्त विषयमे यदि हाथी, घोड़ा, गटुआ, अजदिया नहि करैत छी लौ कि हमरा मभक विचाइ नहि होइत अछि ।' 'एक विकीला नाथन बीसो विचाह बिना बिने नय छोड़ैत छथि । कुतोक कट्टर सतर्फी लौ—जतिपरिहु रतानलं गुणगणः मस्याप्यधीगच्छ "सर्वगुणाः काञ्चनभाभयन्तिक" अर्थ कै सार्थक करैत धमजोसुपताक क्षारमे नाथ लौ सर्पिया बासिकाक विचाह पचास साठि वर्षक बालक लौ कय दैत छैक । कतोक अर्थलोलुप मुता विकीला लौ ताकि-ताकि कय दण्डहस्ती, शर्मलम्बी, चिबुक शोकदिय, दन्त विगलित, धवलकेशी विदेशी नवयुवक लौ



कुन्याक प्राणियहण कराय देत छैक । कतोक तौ गतिगुणि कय भिक्षु टीका समावाही लय गेल । नम् ओतकहि मध्य सिद्धान्त विवाह सम्पन्न कय लेलक । क्षमराजोक्तिक वैवाहिक, स्वयंवर गहने निद्राह बन्धन अछि जे रचनिक कथार कृष्णोक्तान्तरि नरक जाय नहि सकैत अछि । विवाह विधियो देखने कुमम रीतिक देखने छी जे स्वल्पहि मध्य सभ कार्यक समावेश कय लेत छी । फेरि कतोरि किछु विधाय धर्म करवाक इच्छा भेलैक तौ कया पदवाचकता पर पत्नीक सन्निध करै, दु-एक टाका धर्म दय अधिकारक सिद्धी जंचवाय लेलक । छौ लेलक नहि, तौ ओहो नास्तिक । कतोक सिंगार तौ सुखान्तक सुनयन समये कया पदवाचकता गहणति छी गहण करैत भोर होइत-होइत कुन्यागतक भवन पर पहुँचैत छथि । वैवाहिक गहन साधन यथा विहित कथाप्रदक नवन मध्य पूर्वहि सौ ओरिओल रहैत छैन्ह । विवाहक धुनमुहूर्त पक्षि पयहि मध्य पथराय जाइत छैन्ह तथापि छेलि-छलि कय विवाह घोर कहये सोवैत छथि । अहाँ लोकनि जेना तपाज्वेन करत अनेत छी तेना यदि समजबैत करत जानैतहुँ तौ प्रायः एका व्यक्ति की दरिद्रतासँ दुष्टिगत होइतहुँ ? किन्तु हमहि बल प्रशंसा की करत, आइ कहिहुँ तौ हमरहुँ समये लेखनेक वाक्य भरये भैत जाइत अछि । पूर्वीक महामयक आकनि देत-देत पुरहित की पूत सौ फू-फू करैत मनोरमक माय गर हुवा छोड़त जगलाह, अकर प्रभाव सौ आभनीक लागि धुनि तत्काले उतरि गेलैन्ह । अगले कुलकुल कय छति बैसलाह और पूर्वकथित बिल्लमे जगलाह सोझाही करत । जाहि पर निकट जलमयक सामक करत पड़लैन्ह । साइत-महाउय सभ अकल-अपन पुरस्कारक जीवता सुनि आभनीक त्यजइत करैत सन्नि-सन्नि कय बात कहय जगलैन्ह । ताहि पर कारणी दुर्वाता की नै गेलाह और कोसलेगमे कहय जगलैन्ह "हम जाय अहाँ समकै एको कौनचा नहि देब ।" "जहि देब नाम सुनतहि ओ कय अवाच्य कथाक और प्रयोग करत जगलैन्ह "जबे तुमसो के मिलने ।" जब केने पास आर ही तहीं वा की तुमने "जब नदहि नहि दूक देहे कय किता ।" राज्यीय सवादी की होइत कारण नहज बाय

गही है, अब भी हमसंगों को बखिना देता है कि और भी कुछ सुनकर टेंट छोड़ना ।"

शेव । नितान्तमे स्वबाहन्त कराय बहुकन सुनि जन्ममारि मनोरथ लाभ बाधारावत जेठरेयति तौ दुइ सय टाका हथपैथ लय बिल्ल मुताबिक स्वयं पूजाय अपन मनोरथलाभ कयत । सिद्धान्त शेव भेला पर उभय प्रव अपन-अपन गृहागत भै सिद्धान्तक अवरोधाद्ध सम्पन्न कय स्वस्थ होइत गेलाह ।

अनुमदी पाठक ! सहूलोचन तथा देखाउतिक प्रतिकल देखल ? उभय बडक टाका बाटहिवाट फाफा भै गेलैन्ह एको समधीक स्वार्थतामे अधिनैन्ह तौ सन्तोषजनक नहि सकितहुँ । युगत समधीक व्यर्थदम्बरक चित्रपट देखि कयक पडैत अछि जे—सामान्यहि सौ नर सनतुल व्याह प्रीति अरु बैर । स्वाधिका विधनानुकुल करवहिमे अछि बैर । नहि तौ "सम्पति भरम गमाय ई मुल हेरत अति-हीन । रजनी सौ त्याजित पति नहहि ब सोभा दीन ॥"

### तृतीय परिच्छेद

#### विवाह प्रकरण

हम नहि आजु रहय गेहि आज्ञन जौ बुढ़ होएत जमाय ।

वर्षाभ्यन्तरमे मनोरथ लाभ कँ अनुमान एक दर्जन पत्रिका घर सौ वैहाल पर गेलैन्ह जे अपने कान मे तूर देने देहात पर बैसल छी, घर मध्य कया बाज रखणीया नहि अछि तकर चिन्ता लेशमात्रो नहि रखैत छी, गाम मध्य सभ अपन-अपन कार्य कर्तवता विवाहि लेलक, केवल अपनहि पाछां पछि गेलैन्ह अछि ।" एको रातुक हेतु तौ गाम घर आबि सलाह विचार कय जाउ । बारहम पत्रिका हस्तगत भेला पर आइ फाल्गुणी आमाबस्यामे मनोरथलाभ गर आएल छथि । पुरजन-परिजन स्वजन सभ कुशल-सोम पूछि-पूछि कहय लागल छथिन्ह "अपने गेहि बैरि बहुत दिन पर गाम अगलैन्ह अछि ?" "निमाक विवाहवाम अहोरेरि करबैक कि अगलैन्ह देबैक !"



मनोरथ लाभ—औ भाइजी ! की कहु एक ती सरकल नी अवेकोक अवकाशे नहि होइत छले । दोमस साहेबी येहने भुताह छले कुरसतीक नाम मुनैत सन्ता टण्डर (छप्टा) घुमाव जाहि मुनि दीईल छलैक अछि । तान्तक कृपा सौ एखन वो जनबाय परिवर्तनक निमित्त तीन भासक हेतु दारजीलिङ्ग आएल छथि । कलेक कहलान्कहीना पर एक भासक छुट्टी देलन्हि अछि । अपने राम ती गाम पर विद्यमाने छलहुँ, विरथि नहि विवाहक एक शुभ दिन मन्जुरीक हेतु अहलीलपुर पठवाय देल, स्वीकृत भेला पर ती हम कोनो धराने अपवे करिखहुँ । अस्तु ! गन्त कें आव सोचन्ते की काल्हमे अपने सबहि वैसि ज्योतिषीजी सौ एक बीक दिन तकवाय हजामक हाथे पठवाय दिबौक । यदि प्रस्तावक अनुमोदन समर्थन भेला पर पुनः पञ्चमक नामा प्रकारक गप्प-धप्प-ठ छरिहान जागल लागल । छरिहान उत्तरला पर सबहु गोटे चमकल अन्तर्धान होइत गेलहु । तदन्तर मनोरथ लाभो स्वाङ्गण समागत भेलाहु और भोजनोपान जयनामारके मित्रा देवीक आवाहन तोक द्वारा करय लगलाहु । प्रभोत समयमे लाभजी शौचादिक सौ निवृत्त भी पुनः दामाद प्रभुलिक एक विशेष अभिवेशन कयल । दिनसनि आ ज्योतिषी पत्रा कें उलटि-पुलटि देखैत-देखैत कालिगुन सुनि पूनीत पूणिमा मुक विवाहक शुभ दिन निर्णय कयलन्हि । वेही दिनक निर्णय पत्र लिखवाय मोचन ठाकुर हजामक हाथे अहलीलपुर पठौलन्हि, मुनहारि साश होइत-होइत हजाम ठाकुर अहलीलपुर श्रीमान् सहलोखा बाबुल डेउलीपर समावत भेलाहु । हजाम ठाकुर विवाहक निर्णय पत्र लयलाहु अछि । हु शुभ समाचार सुनिताहि घर प्रद अति हर्षोत्फुल्ल सौ हजाम ठाकुरक विशेष कहनाद करय लागल छथीन्ह । हजाम ठाकुरक शुभानुमनक समाचार हबेलीमे पहुँचैत सन्ता कसमसिया खवासिनी हंसति-विह्वलैति कसमस करैति हबेली सौ बहराम मोचन ठाकुर सौ कुशलक्षेम पुछय लगलैन्हि ।

कसमसिया—औ हजाम ठाकुर ! अरे कह-कहु समझिनीक कुशलक्षेम कह । कनेपा, केहेनि, कटेकटा, बरियातीक सयवा-सीबाक औरिऔन-परिऔन कोना की कहीं आहाँक भोहिडाम होइत अछि ? हमरा हबेलीक लोक ती भाउ

वरय दिन सौ आहाँक बाटाबांटी पपीहे जकाँ लकैत छलै । हमर महलम भोकिनि ती मनशुवाइत छथि जे बरियाती ततेक जय जयबैन्ह जे कनेपा-बागक घरक कह एक-एकटा कय भोचि लौतैन्ह । येही बेरि ती ओहो भूसेक बरि बसताहु ।

मोचन ठाकुर—अय खवासिनी ! कुशल परसन ती छय खूब बड़िया किन्तु अहाँक एतेक सवालक जबाब एक्के बेरि देत तथा अहाँक बहचहाँ कौन तर्ज्याङ्ग रोमाञ्चित होइत मन कोना-कोना दन करय लागल अछि । हमरो मनोरथ खुवा किछु आधीमुज्जी आदमी अछिण नहि, पैदात सौ भरि-पौन सौमा लागल अछि । अखि दस-धाँप हजार अगर कृणो भी अयतंक ती कि कोनो बातक पयौहि करत ? अहाँ अपना स्वार्थिन कें कोनो बातक होमला छथय नहि राखय कहवैन्हि ।

पाठक ! बेहि सुनल जितामुक पादस्पर्शक वात्सलायक रङ्गस्वादन करय बरिपि अपने कें आव आमाँ अधिकार नहि तथापि विवाहक घुमघाम तथा होरीक होहकार सौ यदि धूढते पर अपने कमर कसि लौनी बाबाजी भेल ताम पादने मुगल जोईक रखमयी वात्सलाय चटनी चुपचाप चिखैत वानु । हमहुँ जसन उपन्यासे तिलय बैकलहु अछि जसन की बीक की अछलाहु संभ बर्ष सौ इति तक कहैत चलैत छी । मुनु कसमसिया हजाम कें की कहैति होन्हि ।

कसमसिया—बेस-होइ ! समझिनि कें डाँड़ सकलत कयने रहय कहवैन्हि ।

मोचन ठाकुर—अय खवासिनी ! देखब ! आहाँ अप्पन ती पहिने गलन कयने रह ।

कसमसिया—दुरी जी ! अहाँ ती बड़ पकठोस मनोभिया बूझ पड़ैत छी । बेस-बेस आव अहुँ भोगराम पर छप्टा बजाय-बजाय धी जगन्नाथ जी कह । ताम हमहुँ हबेली जाइति छी । औ हजाम ठाकुर ! एक बात ती पुछवे हस जियरि गेलहु । आइ ती अहाँक भोहिड नीबाइनि कें प्रायः निराहारे व्रत करक पड़ैलैन्हि या पलाहार करयवाक हेतु ककरो राखि अवलियैन्हि अछि कि इमदम गोपाले ?



मोचन ठाकुर-पारणाक बेरि तौ रमिताराम हम पहुँचिये जयवैन्ह, किन्तु एसन तौ अही के हमरा गृहागत अतिथि अभ्यागतक विशेष भाव भक्ति जन-मन सौ करव उचित थीक ।

कसमसिया-ओ हजाम ठाकुर ! हम सौ अहाँक बहिनि-पिलसीक बाखिल छी । छिः छिः छिः हुनकहूँ सभ पर अहाँक ओहने भाव-भक्ति रहैत अछि ?

उक्त कथा कहैति कसमस करैति कसमसिया प्रत्यागत भेलि और हजाम ठाकुरक हरमजदगीक सातलाप सौ हवेनी मध्य सभ के हुंतावय-ठहकावय लागति । तदनंतर श्रीमान् सहलोला बाबूक हरिफला हजाम, सखना सर्वास प्रभृति प्रस्तुत भै भौति-भौतिक भोज्य पदार्थ मोचन के भोजन करावय लगवैन्ह ।

भोज्य सामग्री के मोचनी ठाकुर ओहिना मुखमे दुसय लगलाह जहिना पच्छिमाह्ला बहुलमान लाल गिरचाइक संग सातुक मुठरा के मुख मे अंगूठा सौ ठूसैत अछि । अस्तु ! ठुलि-ठुलि कय मोचन स्वस्थ भेलाह । तत्पश्चात् सभहि मोटे परस्पर हाहा-होहो करैत निद्रा बेचीक शान्तिमय कोइक सुख अनुभव करय लगैत भेलाह । जेपमे जखन निद्रा देवी निज घोषट पट उतारि अन्तःपुर प्रवेश कयलैन्ह तखन श्रीमान् सहलोला बाबू हुनक सुखमय सदन सौ बहराय स्वजन-पुखन के हुंकारि विवाहक स्वीकृत पत्र लिखबाय मोचन के वर-विदाइ तथा स्वीकृत पत्र दय विदा कयलैन्ह । हजाम ठाकुर बषेष्ट विदाइ सौ पुलकित होइत सम्भ्या समय मायापुरी प्रत्यागत भेलाह और स्वीकृत पत्र के मनोरथक करकमलमे समर्पण करैत अपन गृह गेलाह । स्वीकृत पत्र के देखैत-देखावैत प्रमुदित होइत लाभ जी निज कुलदेवी त्रिपुरसुन्दरी श्री कालिकाक पादपद्म पर समर्पण करैत मङ्गलाचरणक अनुष्ठान करय लगलाह । तत्काले धाम भरि हुंकार पड़ल । परिजनक सौभागिनी सुभाङ्गमाक समाधि एकवित भै गोलाङ्गनिक तथा मङ्गल सूचक शुभवाग सौ लभ जगावय लगैति गेलीहि । तत्पश्चात् लैल-सिन्दुर, पौन-पुङ्गी सौ सम्मानित भै निज-निज भवन प्रत्यागति भेलीहि । विवाह-दिवसक निर्णय भेला पर ईह प्रद के

विवाह-कार्यक धुनि समवर्तैन्ह । "एता कह, ओना कहक" सप्तास्वर उभय ओर उठय लागल ।

श्रीमान् पाठक ! आब कनेक चलैत चलू ओहू दलमे घूमि-घामि कय शनि-सुनि भाउ जे कोन बिधि कोन भौतिक विवाहक ठाठ ठाठन जाइत अछि ।

कय गी उत्तरीत देखल जे श्रीमान् सहलोला बाबू दालानक प्राङ्गणमे बैसल-बैसल विवाह यज्ञक प्रबन्ध कय रहल छथि । जे-जे अवैत छैन्ह, से-से श्रावण कहैत अवैत छैन्ह "सरकार ! आब अपनैक बिडारे उत्तरीत अछि सोने कृष्णाक विवाह दान सभक विवाह दान सौ बङ्गि-बङ्गि तथा विशेष समारोह सौ सम्पन्न करिजौक । उक्त कथा सुनि-सुनि चैया लवामो एम्भर-ओम्भर लाग बाई-चूईक चरखी चरचराय रहल अछि । महतम सौ कहि रहल छैन्ह-"सरकार ! ई सभ सरकार के उचित कथा कहैत छथि । एहन अपने के बाब दोसर कार्य कोन उत्पन्न अछि ?

सहलोला बाबू-री चैया ! तौ कनेक प्रपंची ठाकुर विवाही के तौ बजाय महलौक ।

चैया-बेस सरकार ! प्रपंची के पकड़ने लगलै हम हजूरमे हाजिर होइत छी ।

प्रपंची-ताबेदार हजूरमे हाजिर भेल । की हुकुम होइत छैक ?

सहलोला बाबू-हो प्रपंची ! तौ कनेक हठपुका सोनार, गिरहकटुआ कलिया, गटुआ बनिया के जत्व पकड़ि लाबह ।

प्रपंची-बेस सरकार ! एतने कि ओरो मोटा के पकड़ि जयबाक हुकुम होइत अछि ।

सहलोला बाबू-हूँ हूँ ! ओरो जे कोनो पोनी-पसारी हो, तकरो सभ के जयोते अबहक ।

प्रपंची-बेस सरकार ! सभ के पकड़ने केरि फौरन हम हजूरमे हाजिर होइत छी ।



सहलोला बाबू—री चैया ! हूँ दण्ड नीति गेलैक प्रपंची एखनहुँ अरि नहि अवलोक देख ती की विषय बिकैक ?

चैया—सरकार ! विषय की होयतैक, भुइँहार भाइ बीक, कोनो प्रपंच करैत अपन मनसब गडैत-सडैत होयत ।

सहलोला बाबू—छेहे तो बड़ बुद्धिबक री ! गठैत-सडैत की कहैत छैह । शीघ्र बबजहीक ।

चैया—प्रपंची छन्ये येहने-मेहने जहई जाएत तहई लेडरपनी काय लागत । री खलना ! कनैक आगाँ बहिकय देखहीक ती अदैन अछि कि नहि ।

ओहिठाम सौँ खसना बखसैत बिदा जेक और प्रपंची-अपंची करैत ताहि लगौलक ।

प्रपंची—हो खलनू ! थोड़बहिमे निचिआय कियैक जगैत छह । खलने ती अवैत छी ।

खसना—हं ही हं । कहवह ने कियैक ? “कूटि-पीनि सम्पति हीरा, माँद पसवधि जीरा ।” एकसरे खयबह ती पेटे काटि बसलौह ।

प्रपंची—हो खलनू ! थोड़बहिमे निचिआय कियैक जगैत छह । जाहि ठाम प्रपंची, चाई, खलन, ताहि ठाम सौँ खनखनाइत कियैक छह । तोहरो ठीक-ठाक कय देखह ।

सहलोला बाबू—की ही प्रपंची ! पीनी-पसारी प्रभृति प्रस्तुत भैनह ?

प्रपंची—श्री सरकार ! पीनी-पसारी सभ बापे-पुते सरकारी खासा मे संयुक्त भेल अछि, जे हुकुम होइक ।

सहलोला बाबू—हं हं ! तभ सौँ शीघ्र शीर पारहक ।

प्रपंची—हो हटपू, जहूँ, गिरहकहूँ, चपरगहूँ, निखहूँ, बरहवहूँ, लोकनि । सरकार लगमे हाविर होइत जाह ।

सभ बरहवहूँ, एक स्वर सौँ सलाम सरकार कहैत श्री मानू सहलोला बाबूक मुखचन्द्रक चकोर भै टकटकी लगौने आआक प्रकीखा कय रहल अछि ।

सहलोला बाबू—ही हटपू ! ननकिरबुक विवाहक समाचार सौँ तोहरो सभ के विविधे भै गेल होयतह । समय आव रहलैक नहि तखन तेहन यत्न करहक जे गलना-बुरिया सभ बहुत जल्द तैय्यार भै जाइक । भोलानाथ बाबूक सभ सौँ तथा चैया बहिकंगत बाजार सौँ बापे पाँच हजारक सोन-चाँदी कीनि जायत । गहना बुरिया शीघ्र तैय्यार भेला पर तोहरो उज्जल इनाम देल जायतह । री चैया ! हुनेनी सौँ पाँच हजार मुद्रा माँझि जा ।

मुद्राजा मुल सौँ बहराइतहि चैया खवास अन्तःपुर बीड़ि गेल और कुडी बहनकाइन सौँ निवेदन करय समर्पेन्ह “बाबीबी ! बड़का बाबा पाँच हजार बीस आँझि पडौलेन्ह अछि । जल्दी दियोनिह ।

बीगनी जेठरानी देवी—बाह रे चैया ! मूहक सरसै जाहिना मालिक कहि कहिपुन सहिना तान सोईत तबित गति सौँ बीड़ि अवलैह अछि ? गति बिज आठ पहर बीसठि बड़ी समयाक हेतु हुनका इरदम हाथ-हाथ होइत पीत छैन्ह । हमरा कँच्चा-कौड़ी आय आओत कहाँ सौँ ? जे किछु बेने जमाह ते सभ ती विवाह-दान करैत-नारैत निषटि गेल । सभ बूढ़ सय हथको करत ती ताहि सौँ कि ऊँटक मुँहमे जोरक फोरन होयतैक । श्री कहत ग “हुनका हाथमे आय कागी-कौड़ियो नहि छैनिह” तज्जिचटक बाप ती जूपा-बापा मित्र मोजूवे कथीन्ह, दस-पाँच हजार हुनकहि सौँ हथफेर वा पट्टा पडू । आगाँ-पाछाँ सघँत-बघँत रहतैन्ह । सोनमा हमर कोरपोखू थीक तबल विवाह सभ सौँ विशेष रूपे कय देखून्ह । धन-सम्पति आव रखवे करतह कोन दिन सय ।

स्वामिनीक लाठीमार जबाब श्री चैया चुरमचुर भै अपन मुँह सोहल-मुनिमे सन कयने छी-पाँच करैत विमुख भेल और श्रीमान सहलोला बाबू सौँ कहत जागत छैन्ह—“सरकार ! मालिकिनी ती नाक पर माँछिमे नहि पैतय देखिह, कहैत छथि जे आव मात-मिलकिपाति रखवे करतह कोन दिनक भैत । विवाह-दानमे बिना जूग-बैच कयने कि ककरो शोभा सुन्दर भैतैक



अच्छि । आइ-काल्हि तौ विवाह-दानमे ऋण-पेय करव एक प्रकारक विधिमे लोक मानि लेलक अछि ।

सैयांक मुख विनिर्गत निराशाजनक वार्ता कर्णकुहरमे प्रवेश होइतहि श्रीमान् सहस्रोला बाबूक हृदय डामाडोल होबय लगलन्ह । चिन्ताम्विल भे जल्पय लगलाह ।

सहस्रोला बाबू-हाय ! हम तौ कहितहि छलहुँ अछि जे टाकाक हेतु हमराजोकनि यदि लेकड़ोयो पर टांगल जाइत होइ तौ स्वीगण कोसलिया रूपैया कदापि नहि बाहर करय । बेस, रौ चैया ! पीनी-पसारी के परसु प्रस्तुत होयबाक हेतु कहि बहोक । और मित्र महाशय के बजाय लवहुन ।

बाइ ठाकुर-दोस्त ! बाइ कोन तेहन जसाधारण कारण धिक्क जे अपने असमयमे हमर स्मरण कयल अछि ।

सहस्रोला बाबू-मित्र ! मनकिशोक विवाहक दिन नियुक्त भे केलेक । हाथमे फूटलि चितिवो नहि । तखन कार्यक निर्व्वहि अपनेहीक हाथमे अछि ।

बाइ ठाकुर-दोस्त ! ई शुभ-समाचार सुनि बड़े हर्षित भेलहुँ किन्तु आइ-काल्हि तौ टाकाक परम करहरी भै रहलि अछि । कारण जे हमर बहुला रूपैया ते सहुका सभ अपना-अपना परमे लोभाय लेलक अछि तथापि निजैत जी अहाँक माँस अनका कोना ग्रहण करय देखैक । अस्तु ! सञ्चितबाक माय के पुछैत छियैक ओकरा यदि कोसलिया रूपैया होमलक तौ अहाँ के अवश्ये बेब । कहू कतवा टाकाक आवश्यकता पड़त ।

सहस्रोला बाबू-आवश्यकता तौ अथाहि । किन्तु तत्काल एक बारहे हजारक अछि । शीघ्र गेल जाब । हम अपनेहीक भरोस पर शरोष रहैत छी ।

बाइ घर घुरि अयसाह और निज घरनी कोशल कुमरि अर्थात् सञ्चितक माय तौ परामर्श करय लगलाह ।

बाइ ठाकुर-प्रियतमे ! अहाँ के अपन कोसलिया रूपैया किछु अछि ? बाबूक विवाह निमित्त दोस्त अपन माँस बेचवा पर इच्छत छथि । हमर

रूपैया सभ कर्ष-सोरक धरमे फँसि गेल अछि । रूपैया बाहर नहि कयला सौ कहन अदिया मित्रक माँस उनके हाथ लगलक ।

कोशलिया कुमरि-जीवनधन ! हमर तन, मन, धन तौ सभ अपनेहीक करोहुरि पीक । जे आज्ञा हो । हमर कोसलिया कोष मध्य रूपैया, मोहर, चिन्नी, लोट, सभ जिनीस प्रस्तुत अछि । जाहि रकम पर कचि हो आदेश कयल जाय । किन्तु द्रव्यक बोझ नहीं तक उडीने जायेव एक हजारी लोटे बल-बारह गोट हथियोने जाव । कानन पत्तर खूब पक्का-शक्का कराव लेब सकल रूपैया दोस्त के देखैन्ह ।

बारहो मोट के घोनीक बट्टा मे खोसि सोपाबकस सौ सेसनवार तथा खैरनलाल कातिव (लेखक) के संग लगाने बाइ ठाकुर श्रीमान् सहस्रोला बाबूक सम्मुख उपस्थित भेलाह ।

बाइ ठाकुर-दोस्त ! रूपैया देव तौ स्वीकार कयलन्हि किन्तु नहेति छथि जे दोस्त के तौ रूपैया-आदायक आदितिये दहि छैन्हि । केवल माँसे-मिलकीयति पर बाँट सेहो सँजिये-सियय कय केबले कय देवाक जानि पड़नि छैन्हि । हुनक माँसे-मिलकीयति सभ अहिना बिहाएल जाइत छैन्हि । दोस्तक दशा देखि-देखि चित्त बड़े चिन्तित होइत अछि । आबहुँ हुनक अवशिष्ट माँस बाहि सौ बाँचि जाइन्ह, से प्रबन्ध छथाय रूपैया देखैन्ह अर्थात् दस्तावेजक सत्तै तिनक कठोर लिखबाय लेनैन्ह जे रूपैया परिशोधनक भीषण भय रहैन्ह, तखन रूपैया शीघ्र सघाय देलाह । तमस्भुके तौनि रूपये सँकड़ा माहवारी सूद । साय शेष भेला पर सुदी रूपैया असल भै सूदक दर सूब चलय । तीन साल हे रूपैया यदि सघाय नहि सकथि तौ तमस्भुकी माँस ओतबहि रूपैया मे ऋण-कातु के निविचार हरस्तगत भै जाइन्हि । येहि अभिसन्धि सौ बड़े भयभीत रहि परिशोधनक विशेष चेष्टा करैत रहताह । ऋण परिशोधनक बेरि चुकल अवर्षक । लुट मित्र आपस मे हरिछाय-कठिछाय लेब । पूर्वोक्त नियम यदि अपने के स्वीकृत हो तौ हम ससनवार तथा कातिवो के संगहि लेने आएल छियैन्ह ।

सहस्रोला बाबू-मित्र ! हम अति आर्त्तमन्द छी तखन “बारह काह न करहि कुकरसू” के मुख्य मानि आहाँ सौ कराक छीये नहि, तखन जेना जे



बर्त सञ्चरय मे लिखवाय विप्रीक हम औसि मुनि कय हस्ताक्षर कय देव ।

पाइ ठाकुर—औ मुनशी खदेरननाल । सोशवकस खाँ सी स्टाम खरीदि तमस्सुक जन्म लीसि साउ । तावतनाल हम बूह दोरल अन्यान्य गण-राग करैत छी ।

मुनशी खदेरन लाल—बाबू साहब ! सह लीजिये तमस्सुक-तयार सृज अस्त । सह (मोफीर) मे सही गवाह मे गवाही (साक्ष्य मे साक्षी) रजिस्ट्रार मे रजिस्ट्री करवाकर बाबूजी की आज ही जर-जर हुवाने कर दीजिये क्योंकि जर को हलाक करने के लिये बाबू साहब बेजार हो रहे हैं ।

पाइ ठाकुर—बोम्ब ! "अब विलम्ब केहि काम रचहु सेतु उत्तरय कहक ।" तमस्सुक पर स्वयं सही तथा गवाह सौ गवाही कराय रजिस्ट्रीक राखन नापू । देखत ! से प्रबन्ध करैत जे रजिस्ट्री-कारका इतीश्री आइये मे जाय ।

सहलोला बाबू—मित्र ! साउ-साउ तमस्सुक साउ, योग्येश कहि तमस्सुक पर हाथ धसू ।

पाइ ठाकुर—बोम्ब ! तमस्सुकक मजबुती धरि नो कनेक मुनि सिप्रीक ।

सहलोला बाबू—तुनबैक की गैयी होत होतयता तैसी उपजे बुद्धि होनहार हिरये बमे विचारि आय सब बुद्धि । तुलना भाषी प्रबल जो प्रबल की फुड । राई घटे त दिन बड़े लिये अंक निशि बूड ॥"

उपरोक्त अल्पना करैत सहलोला बाबू स्वयं सही साक्ष्य सौ सखी करावखना सा परिचायक (सितायतकार) के संग लगाय पाइ ठाकुर सहि रजिस्ट्री जाय दाखिल कयल ।

रजिस्ट्रार साहेब—सहलोला बाबू ! सपये तो आइ पा गये । तमस्सुक क बर्त इतना कहा क्यों है ।

सहलोला बाबू—हजर ! सपये तो अब का ही गये । तमस्सुक का बर्त कहा करवाया तो मेरे मित्र की हृदयजिता है ।

रजिस्ट्रार साहेब—सपये तो अब पा ही गये की माती मैने समझा सही ?

एतना कथा सुनितहि पाइ ठाकुर रजिस्ट्रारक अध्यक्षहिमे एक दू तीन मनेत एक-एक हजारक बारहो नोट श्रीमान सहलोला बाबू के गनि देखीन्ह ।

तत्पश्चात् रजिस्ट्रार साहेबक विशेष कृपा सौ रजिस्ट्रीक सभ कार्य ताकासे तामील तथा तमस्सुकी ततअणे भेदि गेलैन्ह । तखन तमस्सुक के पाइ ठाकुरक हाथ मे समर्पण करैत संगहि संग सबहु गोटे अपन-अपन वृहा-मिमुख भेलाह । रास्ता मे स्वच्छ स्वभाव सहलोला बाबू विषकुम्भ प्रथोमुख मित्र पाइ ठाकुर के कहैत अवैत छपीन्ह, मित्र ! अपने आज कृपा कय विवाह कार्यक्रम निरीक्षण करैत रहबैक ।

पाइ ठाकुर कह तो मला । इहो कोनो कहवा सुनबाक बात बिदे जि, अपन कार्य थीक । एखन अप्रान्ह समय मे गेल अछि । सुहो हाथ धोएब तथा पैद-पूखी बांकिये अछि ।

एकअकार परस्पर वात्सलाप करैत-करैत युगल मित्र अपन-अपन गृहागत भेलाह । तृतीय दिन सबेर सकाल सहलोला बाबूक पौनी-पयारी प्रभृति पुतः प्रस्तुत भेलहि ।

पैयां—सरकार ! पौनी-पयारी सभ हाजिर मे गेल, जे हुकुम हो ।

सहलोला बाबू—सभ सौ पहिने हड़पूआ सोनार के तलब करहीक ।

हड़पू सोनार—धर्मावतार । विवाहक दिन आज रहलैक नहि बसू गहनो-पुरिया कहुये-ठाकी गइक होयतैक बलू । सोइबहि मे सरकारो हयवण्डा उठावय लागब बलू । यहू किञ्चित् कालमे यदि हमरा अपना मन सौ काम करय देव तो बलू हम अपना भसियौतो भाय सभ के बजबाय-बजबाय काम अजाम कय सकैत छी बलू । अगर सरकार पीठ पर सचार भेल रहैत होत तरे पित्तिये चमकैत रहत काम की करब साक बलू । और ! सखन गरमे होले पड़ैत अछि तो कोनो घराने बजबके करब बलू । अलावे ई दरबार तो हमर पुजनी थीक बलू । सरकारही दरबारक प्रसादात सह-जना-नाइ विनहा बड़ोत्तरी हाखिल कयने छी बलू । आजहु सोन-चानी जन्द मंगवाय देल आइक जे काम काजक नटरम-पटरम मलय, बलू ।

सहलोला बाबू—औ भोलानाथ बाबू, साहू, हड़पूआ तथा पैयां तीन गोटे एखने दक्षिभंगा बाजार सौ पाँच हजारक सोन-चानी कीनि लाउ । लिय, पाँच हजारक पाँचो नोट घर ।

भोलानाथ बाबू पाँचो हजारक नोट के अङ्काक केवसे राखि लेल । तखन तीन गोदेसठ-अठ दूध घूसा सूँहमे लगाय, सूँह-हाथक प्रगठा जोड़ाय, चट्ट दक्षिभंगा



विदा भेनात और मोहन साहूक दोकान पर जाय सोन-चानीक भाव-भाव पढावय लगलाह ।

सम सौ पूर्वहि हड़पू अपना सोनारी जैली, साँधि बिपार-फोंकसे मोहन साहू सौ माकूँतिक बातचीत कय प्रकाश्यमे कहय लगलैक, ही मोहन भाह । देखिहह, हमर भोलाभाव बाबू भोलेभाव छथि बलू । सोदा कोनो तअहक कच्चा मति बहने बलू ।

मोहन साहू-हड़पू ! तुम तो सूब जानते होगे क्या नाम है कि, मेरे दुकान-सा सस्ता और चोखा माल क्या नाम है कि सहर भरमे कहीं दूसरे जगह मिलता न होगा । क्या नाम है कि, एक बार पचीस-पचास का नका न सही न सही । एक बार कोन कहे सौ बार सोदा के जाय क्या नाम है कि, बाकिस या नापसन्द ही तो महीने रोज पर वापिस दे जाना । क्या नाम है कि, मेरे यहाँ, रोख मजूरी चोखा काम होता है । क्या नाम है कि, अभी अभी धरनीधर बाबू, हल्ली बाबू, ऐठरू बाबू, बागोदर बाबू, क्या नाम है कि, मनोरथ बाबू हजारों का संना-आन्दी मेरे ही दुकान से ले गये हैं । क्या नाम है कि एक बार तुम भी ले जाय । देखो साहे पाँच हजार का माल क्या नाम है कि पाँच हजार में बाबू साहिब को दे रहा हूँ । खैर ! क्या नाम है कि, एक बार घाटे ही सही । मेल-आपकत ही जाने से फिर तो क्या नाम है कि, बाबू साहिब का घर तो मेरा ही हो जायेगा । हम भी क्या नाम है कि, समझ लेने कि, आइन्दे के लिये बाबू साहिब का दरवार ही छापा है । एवम्प्रकारे चिक्कन-बुनमुन वार्तालाप सौ भोलाभाव बाबू के मोहि-माहि कय छाड़े बारि हजारक माल पाँच हजारमे दय तथा सत्ताम बन्दपो करैत विदा कयलकैह । इहो तूदेव सोन-चानीक गठरी बाँधि नाकक सोझ रास्ता छयने मुखकोष होइत बारह बजैत-बजैत बहूलोलपुर प्रत्यागत भेलाह और सोन-चानीक मोटरी भीमान् सहलोला बाबू के समर्पण करैत निज-निज निवास स्थान पर प्रस्थान कयलैन्ह । किञ्चित्कालोपरान्त श्रीमान् सहलोला बाबू पुनः हड़पू सोनार के आह्वान कय पाँचो हजारक सोन-चानी गहना-मुहिया मढ़बाक हेतु दय देल । प्रत्येक समस्त मोटरी हस्तगत होइतहि हड़पू कुम्पहि जकां फूलि छटलाह और तहिलान सौ ताबडतोड़ कूडाक बाबू

कोर-काकक फिकिरमे फिरीष्टान होवय लगलाह । सन्ध्या समय सोनार राम जीकी सकर्षण सौ मोहन साहूक दोकान पर पुनः प्रस्तुत भेसाह और कहय लगलखैन्ह-मोहन भाह । गलकट्टी बासा गौनो से रथबाक अर्द्धांश सौ हमरो सेवा मुखपा करह बलू, महि ली बलू कालिहये तोहर माल-छाल सभ शिरता भे औतह बलू ।

मोहन साहू-बस-बस क्या नाम है कि, यह चालबाजी अपने ही घर रहने दो । तुम से भी मुत्त्यों का बाबा-बादा गुरु में है । तुम्हारे-सा क्या नाम है कि मैं भी फटक चन्द गिरिधारी थोड़े हूँ जो रुपये को फोस्ट में कैतला फिरता हूँ । इस सीढ़े में तो क्या नाम है कि मुझे खुद ही घाटा अभी है । तुमलोग तो क्या नाम है कि राजदरबार के झांझी कुत्ते सहर । सेत-मेत मे क्या नाम है कि झूट-मूठ झाँप-झाँप, काँच-काँच की झांझी लगाते रहते रहोगे । खैर ! जब तुम वा ही गये तो क्या नाम है कि बी ! ये पन्चीस रुपये अपने कोरे लिये ले लो और दवा नाम है कि दुम हिलाके-हिलाते बी दो ग्यारह हो जाय ।

मोहन साहू के हड़पू हरचन्द हिलाव हिलाव हारि मागिलैन्ह, हृदय मे विषमय भी भेलैन्ह जे मेहि पन्चीशक अतिरिक्त एक फानी कोहिबो आव नहि हैत तखन सखल भारि पन्चीशो रुपैया के धाकल नटुआ जकां झुटकी पिछैत तथा "धोरक धन छिपाड़े साय" जला फकड़ा पड़ैत भकभक-सकझक करैत रथमे जाजि सौ रथेशन पर पधारलैन्ह ।

ओहि निशिये निर्भीक भे सोन-चानी के गलाव-गलाव गाजी विषय लग-लाह । ओही रात्रिक कोन कसा विवाहक दिनहु धरि सोन-चानी दुहेत-दाहैत अर्द्धांश चाटि लेख । तेषकालमे जे किछु गहना तैय्यारी कयलैन्ह से सभ अस्तिधून्य क्लेवरे बनाय साँधि-गूजि पाखिसे चढाय बरियात विदा होयबाक कोलहि प्रस्तुत कय कहय लगलैन्ह-सरकार ! येतैक बान-कपार बुनकी पर हूँ-तीनटा गहना नहिये तैय्यार भे सकलैक, कारीगर सभ के अगीने छी, तैय्यार करौने हम खुब मर्याद कासमे सदबसर सरकारक सेवामे कयलैक कय आवेय । ई कथा सुनिताहि सहलोला बाबू खोछे तमतम करैत सोनार रामक बिशिष्टाचारक व्यवस्था करवा पर उद्यत भेलाह । किन्तु, अन्तिम समयमे बरियाती लय बाबू कि सोनार रामक व्यवस्था करब ।



बहीआ गहकी कलीक गेहनी गदि देलकीहि के विवाहक राबिगहि सी वनित-  
लवाक सीध सी तू-तू सराय लगलैन्ह ।

महलीआ बाबू-ओ गिरहकहु मल ! ननकिरवान विवाह मध्य कम्पों-  
मी कम्प तो एक डेह हजारक कपड़ गेहक लने अवधे होयलैक अकर भार  
जही की गहना पड़त ।

गिरहकहु मल-राम-राम बाबू गहक ! बाजारमे उछार की नाथ चुनकर  
सी कभी न लीजियेगा । राम-राम ! जरा फरमाइये तो राम-राम कौन-  
कौन से कपड़े चाहिये । आलके लिये तो मैं सभी पाँच पीछे कर ही नहीं सकता  
छेन । जहाँ तक जो राम-राम हो सकेगा । हुगूर से कोई उछार नहीं करूँगा  
लेकिन राम-राम रजु पक्षा उछार का भावना ।

महलीआ बाबू-अह गल्लजी बाह ! कपड़ा जहाँ कौन-कौन ? जहाँ  
रङ्गिणी-वेशकीपनी पहोर, रेखनी बनारसी, गहरी, धुल, दरेल, रेखमी तथा  
रेखनी गहरी धोनी, आलीपुने धोनी, रेखनी दोपड़, बालीपुने, नैनमुखक  
आम तथा औरो-ओरो विनयक कपड़ा, कनेक गह ।

गिरहकहु मल-राम राम बाबू साहन ! आपने तो कपड़ों के नाम ही  
जिनाये हैं कन्तो लया दिहा । इस दिनों तो राम राम कपड़े कले के लिये  
रंगही नई बनारसी । पीछे राम राम आग गिरहकहु से भी उसके योनि-टु, पक्ष  
मेरा राम धरने लग जायेंगे ।

महलीआ बाबू-महली ! नहि-नहि पड़त कहिनी कति कर्कश सी ?  
एक ही अहाँ यमन उछार देव दोनर गहलुनी जानत किछु सर्वेश बाकिने  
राह गज अछि । अन्य अहाँ से उछार ईन छी । यहि कपड़ सी  
उछारि दीव, यमन जइका यममवाग अहाँ की केवाला बज देव ।

गिरहकहु मल-राम राम बाबू गहक ! उछार के तो यही सब बातें  
होनी है । पड़ने राम राम कहूँ तो कहिये कि इस पक्ष नवाह रुपये कितने  
देगे का बही, "सैत की करारी हीन से हमारी" वाली बात होनी ।

महलीआ बाबू-अह मल जी ! जैह रेनी के भावस सैह वेद कर-

बाहक अहाँ तो हमरा सभक होंग सी हरदि तबकक जननिहार छी तखन  
यमहा-वरव ककी मुभी जुनि हिलावी ।

गिरहकहु मल-जैह ! इस पक्ष तो राम-राम आप अपन। काम सम्भाळ ले ।  
बादी से राम राम को एक रोज पेंटर भोलानाथ बाबू को फेहलियत के साथ  
मेरे दुपार पर मेरा कपड़े मङ्गलना लीजियेगा । अब जम राम कतुजी अस  
आगे आपकी मङ्गली ।

कुमार जी वृ दिन पूर्वहि महलीआ बाबू एक मीग लिस्ट अथोत उबल  
किरहियतक रात्रि भोलानाथ बाबू के अपनी, छिगाह, लवाकक संग गिरह-  
कहु, यमक दोपार पर पड़ायेत । किरहियत के डिकतहि यमन सी भुङ्गहि  
बीन निर्दोष कोठली सी भौति-भौतिक पद अड़ावहि दोपार पर पदकय  
सोलाह । तखन सुनीक अनुवाय अथेक पद भोजानाथ बाबू की अदीक करीत  
आगत यही साजाने एक-एक कपड़ा पर दू-दू, तीन तीन इन एक कपड़े लसि  
कत इने कपल और भोलानाथ बाबू सी हन्नाकर कपल निश्चिन्त से हुनका  
बिदा कर्लैन्ह ।

पाठक ! जोनभर ही गिरहकहु मल अथ भौष्ट नरधि भिनिध भेलाह  
अति एम्बर अथि कपडिकक यमन कोन पीरिये विवाह के काज केन से  
हुन । काज निहाराके एक राख गहने छल की यमन-वर-वरन रेखनी  
दोपड़ की फलीक-नखामक । ओ बहुमुख पहोर कपडिककमे कपडिकक  
सम्भाळत कन्तो-पीन कन्तोह पर लीटन परदा जहाँ कोठल लामन, रेखनी  
दोपड़ तो विवाहक नकिरहि की कन्तायक हजारक बाबू पर पर न होयक  
जायक । गदि अनुमलान कपल जाय ओ विवाहक बहुनी वस्तु पर मेहमे-  
कपल आगदपन दधिभन होयत । अगु ! यमन निहारायनर सर्मोष बाबू  
सोलाहिकक विनिह वदल हेतु नहु बाबू बसिदा के भार ईन लबीन्ह ।

अह, नकिह-महली ! कि कहै छैक कि दिन बहुत मसीब आसि गेलैक,  
विवाह-यमन आगदीक विशेष कपडिकक रजैत छैक तखन कि कहै छैक कि  
सम्भार जइव से उछारि दे, से कि कहै छैक कि, बिना हरि यमन कलक  
बाबू सम्भारत हमरा कपडिक माध्य नहि विकैन्ह तखन कि कहै छैक कि किछु



बेसी टाका अगाऊ निकास कय देल जाउक जे हमरूँ रकम पाती कोनि-बेसाहि कय मौजूद कयने रही । तखन कि कहे छैक कि कम्मो सौँ कम्म एकरो हजार धरि निकास कय देल जाउक जे कि कहे छैक कि काल धम्मा बनेक ।

प्रपंची-धम्मवित्तार ! जटुआ के आज पहिनुक विभव रहलैक नहि चिन्कुल बीसि गेल किछु अगाऊक आज्ञा कयने दय देल जाउक नहि तौ बिकाहमे बड़े पिचाल पड़त । बरिषत के समय-बीके धरि सरोकार रहैत छैक । भोजनमे कुटि भेला सौँ सब अनोने-बिसनोने भेल रहत ।

सहलोला बाबू-ही प्रपंची ! जाह तत्काल जटुआ के भोजानाय बाबू सौँ चौदह सय टाका देआय बहक हिसाब-किताब आगाँ-पाछाँ बुझल-मुझल अवतैक ।

प्रपंची-पसह हो जटु, पसह । आज तौ भेलौह । हमरा सरकार सन बुझनीक व्यक्ति पद्माब्द भरिमे विरलसके केओ भेटलौक । पूर्वोक्त स्वायत्ताक बात कहैत-सुनैत निज प्रपंचमे जटु के जटैत भोजानायबाबूक समक्ष प्रपंची पहुँचलाह ।

भोजानाय बाबू-की हो प्रपंची की समाचार ?

प्रपंची-रूपानिधान ! जटु के पन्द्रह सय रुपैया बरिसादक भोजनी समतुल रखबाक हेतु सरकार सौँ निकास भेलैक अछि ।

भोजानाय बाबू-बेस-बेस आहाँ सब कनेक बैसि जाव, हम जोड़ैक नदी फिरने सबले चल अवैत छी ।

अस्तु ! भोजानाय बाबू तौ ओम्बर पाछाभूमि गेलह । एम्बर जटु के प्रपंची फुमुर-फुमुर कहय लगलथीन्ह । जटु ! देखह तोहरा हेतु हम कनेक बितण्डा कयलहुँ अछि हमरे होइकारना सौँ तोहरा घेतैक रुपैया सरकार बेलबुद्ध अछि नहि तौ खटाइये मे फुलैत रहितह । आज जर चौब हमरा दय देह तखन तौ 'ताना माना आन, पीढ मिलारम जानक' बात करह ।

जटु, बनियाँ-आए-आए सिपाही जी आए : आहाँ की कहे छैक कि बोटवहिमे अगुताय लगैत छी, हम तौ की कहे छैक कि अपनेक कया सौँ कहियो कि कराक छी ? बड़े गुन गबैत छी अहाँक जाति भाइ तौ हमरो गुरु

बिकाह तखन की कहे छैक कि रुपैया तौ पहिने मोठिआवय दीय तखन की कहे छैक कि आगाँ कोनो बातचीत ।

यही अभ्यन्तरमे भोजानाय बाबू अवैत दृष्टिगत भेलथीन्ह । हुनका बेचितहि सुह सोटे अपन-अपन बातोलाप सौँ सटक-सीताराम हवाला कयलैन्ह । कुछ रावमनोपरान्तर भोजानाय बाबू गद्दी पर बैसलाह और लोहाक सन्दुकचा सौँ दूरटा हजारी धोकड़ी बाहर कय सए दू रुपैयाक बीघा बाक लखोलैन्हि किन्तु रुपैया देवाक बेरि चिस्मरणताक कारणे पन्द्रह बाणक स्थानमे सोलह बाण दय बाँकी रुपैया सन्दुकचाधे पुनः राखि छोड़लैत । रुपैया सभ केँ तीनी मे बाँचि जटुओ भाग धरक रास्ता घमेलैन्ह । हुनके पाँछा-पीछा प्रपंचियो डोरि-आएल गेलाह । एवम्प्रकारे हठपू, गिरहकट्ट, जटु, चपडगट्ट, पीनी-पसारी प्रभृति केँ दैत देखावैत सहलोला बाबू अन्ततः कार्यक प्रबन्ध करय लगलाह ।

पाठक ! वरप्रद सहलोला बाबू केँ आज अपन कलेज करय दिखौन्ह जाबत कनेक कन्याप्रद मनोरथ लाभक प्रबन्ध तौ देखि अवैत जाइ । बरिसालक-शोहरा सुनि-सुनि लाभ जी बड़े विचलित भै रहल छथि । ओही अवसर पर मोहन ठाकुर कहय लगलैन्ह "जी बाबू ! खुद करक चापे हमरा कहैत रहथि जे बरिसाली हम तलेक लय जयवैन्ह जे मनोरथ लाभक लाभे (नाभि) यहि बेरि सुलाय जयवैन्हि । यहि बेरि तौ ओहो अपन मायक मौले बुझताह । से देखब जे अपना दिधि सौँ कोनो बातक कोताही नहि हो तेहन प्रबन्ध करब जे ओहो यहि मायापुरी सौँ नाके रंगीमे जाधि । यदि कोनो बातक टोटा होयत तौ देस भरिमे हूँसी भय आइति ।

मोहनक मर्मभेदी कथा तथा समधीकृत अपमान जनित व्यथा सौँ कन्या-प्रदक राज्याङ्ग फड़कय लगलैन्ह जाहि कारणे तत्काले मनमे सर्वस्वीन्तक संकल्प कयलैत । बस येही ऐवा-तानी क साक्षाज्यमे मनोरथ जी-जान जगल्लि-जगल्लि बिवाहक स्मारक पत्र तैय्यार करय लगलाह तौ अपनव्ययक कोनो आभा-परिचय नहि रखलैन्ह । स्मारक पत्रक जोड़ बाँहो हजार सौँ बाहर चल गेलैन्ह किन्तु सतेक टाका ओतैन्ह कहाँ सौँ लकड़े सलबनी मचय जगलैन्हि । घर मध्य ताकि-हेरि अयलाह तौ झारि-भूरि कय सब-बाबिक



टाका उहरईन्ह । बाँकी टाकाक उपाय की ? ओएह—“कण हूना भूतें पियेत् ।”

अस्तु ! माघ मित्रवियल-सेतवारी जे जहाँ छईन्ह से सभ केवाला मख-मूल कय बारह-सहस्र मुद्रा निराशा राखतक भाष आषा राखत सौ कण बेईन्ह । लेद ! इस्तावेजक शरी राखतो किछु न्यून नहि कारीखईन्ह बल्के पाई छिह्रक शरी सौ एकाध मात्रा बेसिये । मुद्रा हस्तगत होइतहि मनोरथ-लाम बड़ि बड़ि कय बिबाहक विलोबन्द करम लगलाह । बरक अलङ्करणक हेतु एक डेड़ हजारक सोन-बाणी खरीद कय हठपू सोनारक मसिखीत-भाय तस्कर छक्कुर की देख गेलैन्ह । दान दहेजक हेतु एक छि-हजार टाकाक सहित भक्तुलाभ ठगकु ठठेरिक दोकान गेलाह । पस्नादिक हेतु एक हजार बारह राज खैया जय रथललाभ गिरहकहु मलक मित्र मोचन पजिबाइक बोकान पर प्रस्थान कयल । खान-पानक निमित्त एक चारि-पाँच हजार टाका जड़ू बाहुक गुरुभाव भूतघट्ट राय की देल गेलैन्ह । बरियातक जतवाताक हेतु स्थान-स्थान सौ राखडी, कन्याल, छोलदारी, सीमा, समियाला, अतिथि, सतरंजी, एकपित करवाक हेतु धौकक गण प्रेषित कयल गेल । स्वजन, शेरजय, कुटुम्ब जत तथा मित्रजनक संसर्ग निमज्जन पत्र पठाओल गेल ।

उचितवक्ता दाय-दुहु समधी भेल एक मधतुल । विभव विहाय कय कयल फबूल । पाछां पुनः बूढ़क हाल । बर बर छिल्लाह पिदैत भाल ॥

पाठक ! उभयप्रद की फफड़-दलाली करैत-करैत कालगुण मुदि जतुईशी गुरुवारो पहुँचि गेलैन्ह । आइये कुमार सोने लालक कुमारभ धिकैन्ह । श्रीमान् सहलोलाबाबूक सर कुटुम्ब वन्धु-बान्धव शनै-शनैः एकपित भै रहल छथीन्ह । जेम्मेरे चकरा देखैत छी सैह लाल-नीयर रंग-बिरंगक वस्त्र पहिराय रहल अछि । सम्बन्धदेवीक आगमन सौ पूर्व कुमारक काण्ड बड़े समारोहक सहित सम्पन्न भेल । राजि भरि खान-पानक डेलम-डेल रेलम-रेल मचैत रहल ।

आइ कालगुणक पुर्वीत पुर्वमासी कुमार सोनेलालक शुभ विवाहक दिन धिकैन्ह रभातहि सौ बरियात प्रस्थानक प्रवन्ध तथा बरियात भोज्यक डयल-गुथल पाक शास्त्रानुसार होबय लागल अछि । भक्ष्य, भोज्य, लेख, चोप्य,

अन्न, मधुर, तिक्त, कषाय, वायविक आ मिष्ट पद-रस पदार्थ सौरभि सौ भोजनकालिक रसज्ञ रसना परिछाय रहल छैन्ह । सम्पूर्ण कहलोलपुर हाथीक विहकार, घोड़ाक ह्हिकार, डोल-डाकला-डाक-तालाक, तबलडौअलि-बड़धकौ-अलि, तुरही-पिपहरीक तुरतुरीअलि-पैपिखीअलि, सहनाई बामुरीक मसि-खीअलि, बलैरियीभेट सैभक (धेनक) कड़कौअलि-किकिखीअलि, डुम-टुम्पेटक गड़गड़ाहटि घड़मड़ाहटि सौ दलमलित भै रहल अछि । बारह बजैत-बजैत पिछीक घण्टा टोकल गेल । घण्टाक घननाद कर्णपुटमे प्रवेश होइत यन्त्रा बरियाती-नाचस्थल स्थान पर उपस्थित भै लपि-लपि मोम लगाय निश्चिन्त गेलाह । तदन्तर बरियात प्रोमेशनक (घमन) हेतु कपरंग मे रंगल, फेशन-मे-सीमल, छयल-छवील सौन्दर्योपासक नवयुवक बरियातीजन सीटि-साटि काय शिष्टानुसार वाहन के अग्रनाय रहलाह अछि । बरियातीक स्वाङ्ग सब विधि सौ सुधि-अधि कय श्रीमान् सहलोला बाबूके डेढही सौ प्रस्थान कय ग्रामक पश्च गंगासागर तटाय पर किछु फालक हेतु एकपित भेल तदन्तर मायापुरीक हेतु किंक-भार्च (सीध घमन) करय लागल ।

बहलोलपुर सौ बहराइतहि कतोक मधोपासक तारणी (तारी) सुन्दरीक ध्यान करैत जगमेल होइत आषा आगा बड़ल जाइत छथि और स्थान स्थान पर उक्त प्रमदा के वच्छ-प्रणाम करैत वरणोदक सैत पासी पछा के दान दान दैत अटकारैत जाइत छथि । कतोक नवशिक्षित सन्ध्याभिमानीक ध्यान सौ केवल बिलायत-बाँसिली सोतल-वाहिनी चाराण्डी सुन्दरिहीक पाद पद्ममे लागल छैन्ह किन्तु येहनि प्रमदाक दर्शनक सीमान्य सर्वत्र सम्भव परम दुर्लभ तथापि विशेष ध्यानकुष्ट भेल सहटल जाइत छथि । अस्तु ! अन्तिम सम्प्रदायक विशेष भाव भक्ति सौ आर्द्र नै स्वभक्त के मायापुरीक सन्निकट पञ्च-नाश्वमे मधुपुरीक मनोरथ मन्दिरमे दर्शन देलथीन्ह । दर्शनक सीमान्य प्राप्ति होइतहि उपासक गण निज निज जन्म के सार्थक मानि हुनक आगधनक पोहोचोपचार करय संगैत गेल छथि ?

एक कहैत छथीन्ह—पित्वा पित्वा । दोसर—पुनः पित्वा ।

तिसर—वायत्पल्लि न भूतले ।



बारि-पुनःपुनः ।

पौनः-पुनः पितृ ।

कष्ट-यावज्जीवति भूतले ।

परन्तु उपासकक अविधेय पौद्गोपचार तथा अथद्वयानुष्ठान की युगल प्रमदा सुन्दरी अप्रमत्ता भै उभयोपासक के विक्षिप्त रूप देखतीन्हीं । फलतः युगल सम्प्रदाय परस्परहि मध्य छिन्न-छिन्नोत्थित, टिका-टिकोत्थित, लास-जुला, बारि-बारि तथा झोकरी-झोकरी उपरोक्त स्थानहि पर रजनी अवतार करैत निमेष नवामे निमग्न भेल छिट्छिट् होवत् टांग उठौने भूँह जौने प्रशाहीन पड़ैत छथि । बरियाती सभ एखन पोछैन्ह छथीन्ह सोज पुछारी के करौन्ति ? निःप्रमाण देखि स्थानीय स्थान की रहल नहि जाइत छैक वस्तुपि ओ कोनो आन दवा-वास नहि करैत छैन्ह तथापि मुख सरोज पर सखिल स्मिन्धन बरि अवश्य करैत छैन्ह । कस प्रपात मुखमे पड़ितहि सर्वाङ्ग सुखसुगम संगैत छैन्ह किन्तु ठामहि पुनः वसमोड़ि कस पड़ि रहैत छथि ।

## चतुर्थ परिच्छेद

आहे चाहे सुमति के सुमत बर हो ।

सुख देवक सप्त रंग रंजित-सुरम्य-स्वर्ण किरण की आइ मायापुरी एक अनुपम छटा-सहस्रावय सागजि अछि । स्थान-स्थान पर चित्त-विचित्रक अति मनोरम विमान (सामियाना) बिबिर, तन्त्र, कनात, सभ बरियाती दमक स्वागतार्थ हस्तावद ठाढ़ि भेल दुष्टिगत होइत अछि । सब-सप्त-सज्जित दूबक सूख रमणी विवाहोपलक्ष पर सपस बहकैत देखि पड़ैत छथि । मायापुरीक छविक जाँकी दर्शनक हेतु अतुराज वसन्तो ससंग्य उतरि आयल छथि । जिनक स्वागतार्थ कुसुम-काननहि स्थान-स्थान पर भाँति-भाँतिक सुमन-सम्या मजने प्रस्तुत छथि । अतुराजक प्रधान अर्जनेनी कोकिल रसायक उच्च-वच्च

बारि पर बैसि-बैसि कुह-कुह शब्दमे अतुराजगमनक घोषणा घोषित कर रहलाह अछि । प्रकृति मानिनिजों धीन चङ्गेरा मे नाना प्रकारक सुगन्धित सुमन सजने छथि । सुमन सीरभि सौ रसजनन मरोन्मत्त भै रहलाह अछि । मदमत्त मधुकराबलिबो महराय महराय भूमि-भूमि नव विकसित मञ्जु, मञ्जरक मकरन्द के पान करवा लय लालामित पै रहल छथि । आहा ! मायापुरी मे आइ वसन्तोत्सव तथा विवाहोत्सवक कारणे घर-घर स्थान-स्थान मे हलचल मचन देखि पड़ैत अछि । वसन्त रंग-रामिनीक समीर कर्णपुट होइत हृदय कमल के विकसित रूप रहल छथि । स्थान-स्थान पर अतर-गुलाब-कुसुम, केसरीक प्रभाउर मवि रहल अछि । विशेष-विशेष स्थान पर काराङ्गना पञ्चम सूर मे "आबु लेने होरी कन्हैया घर चली" मत गारो पिचकारी जलन तुम" "फागुन अइहें बहरी पिरि अइहें" आलापि रहल अछि । आयां यदि कस देखैत सुनैत छी जे एक कुटीर पर विद्येनी जनक मण्डली उक्त आलापक प्रत्युत्तरमे मृदङ्ग मञ्जीरा की छिकछाम् छिकछाम्, किन्को किन्कोक, ध्वनि उपचारण कय रहल अछि । सार्यकालमे देखैत छी जे बरियात समारोहक प्रशंसा सुनि सुनि गगन मण्डलक सञ्चाट बज्जदेवो प्राची दिशि सौ मन्द-मन्द बिहूँसेत बाहर भेल चल अवैत छथि किन्तु मायापुरीमे बरियाती दलक कतहु नामोनिधान नहि । मायापुरी विवासी के बरियातीक प्रतीक्षा करैत-करैत अइराति बीति गेलैन्ह । परन्तु बेहि ध्यर्थ विलम्बनक कारणे कन्याभद्र के छय-छयमे चिन्ताक मात्रा बढ़य लगलैन्ह ओहि समयमे कोनो एक प्रत्यागत पथिक कह्य लगलैन्ह "किछु बरियातीके हम गञ्जनपुरक गाछीमे मोहिवत् मिश्रिण्ड भेल पड़ल देखल अछि, जलद सभक खबरि लिखीन्ह नहि तौ हुनका सभक रंग दंग सौं येहन बूझि पड़ैत अछि जे आइ प्रायः विवाहे नहि भै सकत । एतना कथा सुनैत संतां कन्यागत नेहास तथा सनाथ दास के पाँच सात व्यक्तिक सहित गञ्जनपुर पड़ौलैन्ह । इहो सब लक्षणे तीर गति सौ गमन करैत गञ्जनपुरक गाछी पहुँचलाह तौ देखैत छथि जे मदमत्त व्यक्ति सभ के बहलील निधि गञ्जन तथा हरियाटि रहल छथीन्ह । तथापि मदमत्त सभ उठैत नहि छैन्ह । ओही समयमे सनाथदास कह्य सामल छथीन्ह "समधीजी एतवहि दूर जयवा मध्य अपने समहि एतेक



विलम्ब लगाय देल ताहु पर एखत खिचिहटि लगले अछि, विवाहक सुभ लगल जसन बीति जाएत तखन कुलम्ब मे विवाहे कोना भै सकत । आसहु शीघ्रतर अवसर भेल जाय । समाधदासक परमोचित कथा सुनि श्रीमान् सहस्रोक्षा बाबू कहय लागल छथीन्ह "समधीजी ! कोन कथा कहू, मछसेवीक धरमे एहने एहने, हिलके सभक पंच मे हमहुँ पड़ि गेल छी आहि द्वारे एतेक विलम्ब भै गेल अछि । वास्तविक राति दुर्लभ जाइत अछि जमा कथन जाय । अपने-हीक संगहि संग हमहुँ सभ चर्चत छी । ही बहलोल ! नगारची, मछालची, सोमारची सभ केँ सावधान होवय कहक । हुकुम होइतति नगारची नगारासे चौट देवय लागल । कूचक सूचना मृत्तिहटि गाछीमे पोहपाहु मंचय लागल और थोड़बहि कालमे अनोर-सोर करैत बरियाती दल मय्यापुरी पहुँचल । सरियातीमण तरकाले दलबल गाजि बरियातीमे स्वागतार्थ अग्रसर भेलाह और शीघ्रतम परीछि-पुरीछि कय कन्याप्रदक द्वार पर जय अग्रसाह । आहा ! की अपूर्व शोभा ! कन्याप्रदक सिंहद्वार दिशि दृष्टिपात होइतहि देखि पड़ल जे वर्ण-वर्णक भूषण वसन विभूषिता विधुवदनी, केहरि-कटि-मवमान विधोचिनी सीमरिनी शुभाङ्गना गण गाना बिधिक मङ्गल आरती, किन्तुक किसलय संयुक्त कलशा सँ मुनज्जित कथने तथा मृदुल मनोहर मंगल गान सौ कल-कल केँ लजवेत वरक परिस्ननक निमित्त प्रस्तुत छथि । ओही सुअवसर पर सार प्रमृति वैवाहिक वरसा-भूषण विभूषित, मौर-मण्डित दूल्हा केँ प्रभय पाव मे बन्धने हाथो-हाथ धरने अवैत छथीन्ह । सिंहद्वार पर पदार्पण करितहि बिधिकरी वरकेँ परिछि प्राङ्गण प्रवेश करावय लागलि छथिन्ह । प्राङ्गण प्रवेशान्तर बेर बिहित कुल व्यवहारानुसार पाचिबहुन परिवर्ण सुचाहए प्रारम्भ भेल । विवाह बिधि सम्पन्न होइत-होइत पीह फाटि गेल तत्पर सरियाती-बरियाती गण केँ भोजनार्थ निवेदन करैत गरगोटिया देवय लागल छथीन्ह । बहुदोक विचारवान व्यक्ति सहस्रानुकक सालिमाक आमास देखि-देखि भोरक भोजन पर निषेध करैत अग्रहच्छुक्ता प्रगट करय लगलथीन्ह किन्तु बहुलोक राति भरिक भूधा पिपासा सँ सिठिआएल शठ सभ पापी पेट केँ शमन करबाक निमित्त भोजनोन्मुखा भेलाह । अस्तु ! अन्तिमा-

भिलासी केँ अघानासन एक बेस मुनहर पर मध्य देल गेलैन्ह । मौति-मौतिक भोज्य पदार्थ पात्र मे पड़ल लागल । भोजनक कचर-कूट खूब भै रहल अछि । बाहर सँ कीजा कांज-कांज करैत कुसमयक भोजन पर निषेध कय रहलैन्ह अछि तथापि भोजनक ठसम-ठसम कसम-कसमक आवा कोआक कोन कथा । बाहर मे जे बीच वर्णक बरियाती भोजन करैत अछि तकर कय कोन कहू ओ हम ती अपन-अपन विशाल अक्का खपी उदर मे नाता बिधिक भोज्य पदार्थ केँ तहियाय-तहियाय दूति रहल अछि और परसनिहार केँ नाकों कम कथने छैन्ह आहि सी ओसर्भाहि कोषाध भै एकैक पात्र मे बारि-बारि व्यक्तिक भोजन उल्लिख्य लागल छथि । येहि ओँकोअलि सँ गृह-बिधिक सामग्री बम्म बज्जा पर बाधित भै गेल छैन्ह । फलतः मनोरथ लागक गति-मतिक विवासा उत्तरह पर उल्लत छैन्ह । अजमानक मुसमण्डल पर चिन्ताक रेल देखितहि सुमनासा पुरहित जी कहय लागल छथीन्ह "अपने सुभ केँ सहस्रोक्षणीक कारणे कया-बलापमे विलापक सम्भवता भै जाइत अछि एखन यदि हमर बमनौजिक आधम तहि नेव ती देवभरि हँसी भै जाइत । एखन ओँकोअधिक प्रपात केँ मुष्क बल ननु । मर्यादिक भोज्यक निमित्त बीच वर्णक बरियाती केँ दुह सन्ध्याक सीधा एक्के ठाम लौलबाय दिवोक तहि ती केही निछु सरज्जाम अवशेष अछि तकरो ई सभ दिडिइये जकाँ चाटि जाएल । सुभत जाक सुमंजसा सँ निराश हय मे आखाक सञ्चार होवय लगलैन्ह जखन सँ प्रत्येक कार्य पुरहितक आदेशानुसार करय लगलाह । अग्रान्ह समय मे मर्यादान्तर पुनः बरियाती दल भोजनाशील भेलाह । भोज्य सामग्रीक धई-धई मचि गेल । बरियाती गण केँ यद्यपि पूर्वकृत-भोजन सँ उबर अफरसे केनिह तथापि पट-रस एक्वानक लालचवसात दुस्रोअधिक कोनो आभा परिचय नहि रहैत गेलाह अछि । येहि कुसमयक नाकों नाक भीतनक परपक्ष पल देखाय जाइत अछि जे बरियातीमण मे ककरो पेट फुलल जाइत छैन्ह, ककरो पेट सँ निराल पानिमे बहल जाइत छैन्ह । कलोक पेट मयुरिया-पण्डा भै भिथिण्ड पड़ल छथि, कलोक पाचकक सेसन जीजान सँ कय रहल छथि । जखन दृष्यक वर्णन कही तक कहू एक दोसर अगलासे बोध होइत अछि ।



कतोक परहेजी पुरुष कण्ठ्याकुल अन्तिक विज्ञासा करय लागल छथीन्ह । बहुतेक लौ अगि लीला तथा । नृत्योपवेशनहीक प्रबन्धमे हैरान भय रहल छथि । अस्तु ! रात्रिक जाठ लौ वज्रत-वज्रत अग्निलीलाक यन्त्रिका सर-सर करैत ऊपर ससरि रहल अछि और लीलाक पाय-पायी, नट-नटी अथि महोबी, मिठाबी, गुलाबी, फुलझाड़ी, जौबी, कदम्ब, पेदार, कमगोला सभ साँय-साँय, फाय-फाय, छर-छर, फट्फट, नटनट धकामधुडम करैत रति केँ दिन बनाय रहल अछि । तत्पश्चात् नाट्य लीलाक द्वितीय यन्त्रिकाक उत्थान मे देखल जे एक सुवधार दाढ़ीदार मिया घोषिदार तम्बुरा केँ कनेडो रैत 'मैआज मैआज' कय रहल छथि । हुनका पोछा अन्यान्य समाजीक स्वस्व साज बाज अथि तबला, सरंगी, मितार, इसराज, मऊजोरा, मुरचाङ्ग, कंगनाल, पर हाथ धरने छिरकिट-छिरकिट छि, नाना रीं री डा, टिरि-डारा, तुलना-तुलना तुल-तुल ऊरैर-ऊरै करैत-करैत मारिगमक बमक दय रहलाह अछि । नेपथ्य नटी लौ सुवधारक नाना नाली केँ काना-नाना मे रवाना करय लागल छीन्ह । ओहि अवसर पर हान्य-गुन्य एक विदूषक (विषटा) अपन बलमण्ड पेट हिलचंग डांड लचकबैल आबि अमनलाह और निज कौतुक-कौशल-क्षता सौं दर्शक मण्डली केँ खोट-पोट कय रहल छथि, हिनक हास्य नाट्य सौं लडा रीति-रिहि कय लिखिल । उदैल अछि । उक्त उत्पव (जलसा) मे दर्शक सब बुरभुर भै रहल छथि । अन्तःपुरह मे बहलक्षी लोकनि मर्यादक तगरान्तरि लौ लाना प्रकारक बीजनक विधान पाकक्षत्रानुसार करय लागल छथि । पार्श्वीक सुश्याम चितला पर देखैत छी जे कन्याग्रद एक लघु मण्डली वरियाती दलक अधिपतिह समस्त पाककर्ता तथा समधीक निर्वाचनक निमित्त उपस्थित भेलि अछि और समधी ताकि-ताकि कय स्वयं परितन, कुटुम्बजन केँ उपरोक्त मलाह विचारार्थ एकवित करय लगलाह लौ केजी उनीदवमे क्षणा पर पहल मासिक छार सौं दीर्घ द्वात्रिंशित-चिर्षित मुख सौं फुलस-फुलस कय रहल छथिन्ह । कतोक कुम्भकरनी, कतोक मुचकुन्दी, कतोक लौ हरिनी जिहा मे अलि जिहामे पोंक काटि रहल छथीन्ह । कतोक उकम-पाकल-छट्टाट्ट करैत देखि पढ़ैत छथीन्ह अस्तु ! अति कटीनता सौं भेषमे

सभ केँ एकवित कयल । तखन उक्त मण्डली श्रीमान् सहसोला बाहु सौं पाककर्ता तथा द्विष्यक्ति समधीक निर्वाचनक निमित्त निवेदन कयलथीन्ह जाहि पर वरप्रद एक कोनो स्वामीय सम्बन्धी केँ पाककर्ता नियुक्त कयल किन्तु समधीक संकीर्ण संख्या पर कौनो दशवित कह्य लागल छथीन्ह "हमरा कुलक जटल नियम "अछि जे अतक दीयाद तथा मातृपशक व्यक्ति वरियात जाइ से सभ समधीक आशान ग्रहण करी और उचित सम्मान लौ सम्मानित होइ ।" कन्याग्रदक मण्डली कहैत छथीन्ह जे हमरा लोकनि स्वजातीय कुमैटीक अन्तर्गत एक अन्तरशाखा स्वेच्छया निर्माण कयल अछि जकर नियमावली मे आबइ भै केवल द्विष्यक्ति अर्थात् उभय पक्षक एक-एक मुख्य व्यक्ति केँ समधीक आशान पर आशोन करैत छथीन्ह तथा आशोनी होइत छी । एकर प्रत्युत्तर में वरप्रद कह्य लागल छथीन्ह "हमरा सभक प्राचीन नियमावली बाधित करैत अछि जे उभय कुलक अनेक व्यक्ति वरि-याती जाधि वा आवधि से सभ समधीक आशान अवश्य ग्रहण करयि वा करावयि । वेहि मन्त्रभेदताक कारणे बादानुवादक एक लज्जाकाण्ड उपस्थित भै गेल, युगल दल अपन अपन पक्षक पहाड़ भै जाइत बेलाह । कर्षताक मात्रा लज्जा-ज्ञान छितराय लागल । उभय प्रदक ऐजा-तानीक उत्कर्षताक कारणे पार्श्वीयों अमनुष्टा भै निज घोषट पट उतारि अन्तःपुरमे प्रवेशकय बेसीहि । वेहि अन्यमनस्कता तथा अनोल्लासताक कारणे वरियातीमण अतनन-करैत कन्यागतक भजन सौं विमुख भेलाह । अन्यमनस्कताक कारणे रंगमे भंग भै गेल । कन्यागतक भजनमे भम्म पड़य लागल अन्तःपुर लौ प्रायः कयकेवीक कोप भजने भान् होबस लागल । उपरोक्त विषमता सौं चित्स्थित भै कन्याग्रद साध पर हाथ धरने भाव्य केँ कोमल चिलाप करय लागल छथि "हे कुमले ! पूर्वीह यदि हमरा जानि पड़ैत जे कुमैटीमे कुमतिये भरल छैक लौ मोहति कुमैटीकेँ दूरहि सौं दण्डवत करिहूँ आव तोँ हमर कयल-अयल सभ मयल मे जल गेल । खेद ! आव तोँ हमरा साँप-छुछुन्टिक दशा भै गेलि । हमर कन्यागतक ई दशा । ओमहर मरागत बेचारे सटपट सौं बटपट होइत खेद सौं लिन्न भेद सौं भिन्न भेल अण कयने जाइत छथि जे आजीवन आव येहन कुमैटी-उपासकक ओहिठाम पुनः विवाह-दानक चर्चा



महि करतह । बाट-बाटमे जे-जे राही-रहोही वरिपार्तीक मुख सौ मरिमातीक  
 किष्टान्तरक समाचार सुनैत अछि से हु पाँच सङ्गत गलत कुबान्य कथा कह्य  
 संगैत छैन्ह । कन्यासक भवन परित्यागक काल मे ती कतौक नवयुवन  
 उत्तेजित मै भै अपन सम्मति प्रकाश करम लगस्योन्ह जे बरहु के संगहि लेने  
 चल्योन्ह । ताहि पर कतोक विचारणील बूढ़ व्यक्ति निवारण करैत छथीन्ह  
 जे ई बात परम अनुचित होइति । सेहि मध्य घर-कन्याक कोन शोध छैक । बरि  
 अपने सभहीक जेहने विचार अछि ती विवाह काण्डक चतुर्थिअ अर्थात् चतुर्थी  
 समाप्त होइतहि बर के भङ्गवाय भैवैन्ह । युगल प्रस्तावक मध्य मे ओमान्  
 सहस्रौला बालू असमंजस तथा संकल्प विकल्प से पहि मेलाइ ल्यामि सुतबन्स-  
 लताक वशे येहु दुर्दशा पर विधि चतुर्थीक निमित्त द्विगुण टाकाक सङ्गित चाई,  
 छिपाइ खवास के मनोरथ साधक द्वार पर छोड़ि चललाह । रसाभास-अप-  
 मानक वात्सी सुनि-सुनि दुबह सोनेलाल कोजरा घर के परित्याग करबाके हेतु  
 आपन मोड़क लगलाह किन्तु रहम भइतोया-ग्रहरी-नायिकागण हुनका प्रथम  
 पास सी लेहेन जकड़ बंध कयने छैन्ह जे टप्पस गौ मरुन करवाक अवकाले  
 नहि भेटैत छैन्ह । सेव ! पराधीन बेचारे घर करवे की करलाह, निरुपायी  
 भै जेना-जेना चतुर्थीक चित धरि दिन कट्यैन्ह । चतुर्थीक प्रातहि असम्य-  
 सामुर के परित्याग कय चललाह । समस्त जमाय के सौमबाक हेतु समुरजी  
 पाछा-पाछा दश पन्द्रह प्रति दहेज तथा दश पाँच गोट भार दौर पठाव  
 देख्योन्ह ।

पाठक ! सहस्रौला बालू अपनपर गन्तानक विवाह शकमे विशेष दाम  
 दहेज तथा आभर लकड़ सौ अति सम्मानित भेल छल किन्तु अस्तिभावसक  
 विवाह मध्य कुमैटी-सेवक समझी सौ अलि अपमानित होवक पहुँचैन्ह अछि ।

उचितवक्ता दास-प्रिय पाठक ! "जैले-जैले न मरिचक्यं मौक्तिकं न  
 गजे-गजे, साधको नहि सर्वत्र चन्दनं न जने जने ।" श्री स्वेच्छाचारी कुमैटीक  
 स्थापक गण । अन्योन्य कर्तव्याकर्तव्य मध्य अपने सभहि आँखुरेक-आँखुर खँवा  
 छिरिआबैत छी, खुदाविभूष नृहागत अतिवि अन्वगतक सेवा सम्मान तथा

विभव ती करिहाहि होवबैक किन्तु माम्भव ! ताहुमे निर्माणित तथा गृहागत  
 समधि पर येहनि स्पष्टता तथा संकीर्णता किवैक ? छन्न अपनेक विचार और  
 छन्वा अपनेक कुमैटी ।

एक कुमैटीक स्थापक-उचितवक्ता दास जी ! अपनेक वक्तव्य उचित  
 किन्तु साम्प्रतिक दीनाहीनावस्थाक कारणे हम सब बहु-विधि-व्यवहार सौ  
 संपुल विवाहादि क्रिया-कलापक विपुल अपव्यय सौ जाण पयबाक हेतु तथा  
 बौकल्यी बहु-विधि व्यवहारादिक सौ वैचबाक हेतु समवानुसार संशोधन  
 (रिकोरेमेसन) करवा पर मन्द भेलहुँ अछि । किन्तु हमरा समाज के सुसंवा-  
 यधि ओहिना नहि मोहाइत छैक अहिना कालत्रिजल व्यक्तिक भेषक ।  
 अतएव हमरा सबके साम्प्रतीक दशा "धर्म सनेह उमय मति पैरी । भइ गति  
 सौं छुछुन्दरि कैरी" बरिवाच भै बेल अछि । किन्तु पावकाल हमरहु सब  
 के कुमैटी वपटाइवड (पोभित) नहि कयने छल अर्थात् दीक्षा नहि देने छल  
 तावत्काल हमरहु लोकनि आगन्तुक वरिपार्तीक आगत-स्वागत सेवा-सम्मान  
 विज्ञेय रूपे करैत छलहुँ, दायादहुक घर-परमे वरिपार्तीक भोजन छाजनक  
 विन्यास विशेष विधि सौ होइत छलैन्ह । जन सम्वादक दिन ती तनेक रेलोस  
 मचैत छल जे वरिपार्ती लोकनि के सङ्घर्ष-वरिपार्ती समाजक प्रतिगृहमे पेट-  
 पूजा करक पड़ेन्ह और घर-निहाइ सेवा-सम्मानक सौ हाटे लागि जाइन्ह ।  
 हम अपना सबके प्राचीन आभर-सम्मान-पहुँचाइक मान्का कहीं तक इति  
 देखत । यदि हमरा सभक पुर्व सौख्य तथा लौकिक व्यवहारविकल जनबसक  
 (चिन्ताधारक) अवलोकनक दृष्टा हो ती राम-लक्ष्मण, भरत-शत्रुघ्न, सीता-  
 सुनिकीनि, माण्डवी, उर्मिलाक विवाहीतमय पर महाराज सिधिविज अलक  
 तथा महागज अववेश दशरथक पारम्परिक मिलन सम्मान, अश्वमेध-विनयक  
 कौटो (चित्राङ्गण) रामायण मची लेल (छायाशाहन शीघ्र) द्वारा इदमपट  
 (प्लेट) पर छायाग्रहण कय देख-

मित नूतन आभर अधिकारी । दिन प्रति सहस्रभाति पड़नाई ।

मित नव नगर जनान्द छलाह । दशरथ गमन सुहाय न काहूँ ।



## पञ्चम परिच्छेद

### परिणाम

जेहन काम तेहन परिणाम ।

'यथा करोति कर्माणि तथैव फलमश्नुते'

पाठक ! केवल विवाह दाने सौ स्वाच्छन नहि किन्तु विवाह सौ विधि भारीक तथा कर्णगोचरे होयत । विवाहोत्तर सालो भरि, नहि-नहि साले भरि कियेक ओहू सौ उखे अर्थात् ई कहू जे यावत्धरि द्विरागमन काण्डक इलीची नहि भेलि रहैत छैन्हि तावत्काल उभयपक्ष के कोजागरा, पुछारी, पञ्चाग्नि, बटसावित्री, मधुआवणी तथा तुषारी अतागमनक समय पर विपुल न्ययक उत्सल तान तरङ्गमे उबड़ुब होबैक पड़ैत छैन्ह । उभयपक्ष विवाह तनावनी सनासनीक साक्षाज्यमे सहकि-सहकि तीक्ष्ण तलवारि फेरि-फेरि धनान्त कम छोड़ैत गेल छथि किन्तु विवाह सौ विधि भारीक दक्षिणाक दोसर उपाय कोन ? पुनः उयँह "ऋणं कृत्वा नृतं पिबेत् ।"

साल शेष में गेलैन्ह अछि । ऋणदाता गण दूह समधी पर ऋण परिशोधनक तकाजा पर तकाजा करैत-करैत अरिग्राम गेल । परिशोधनमे केवल टाल मटोल होबय लगलैक तखन ओ सभ धड़ाघड़ि मोकदमा दागय लगलैन्ह और मोकदमाक पैरवी जी जान सौ करय लागल अछि । एक के देखैत छियैन्ह जे नाजिरक तजरिमे हाजिर सौ दोसर प्यादाक पांवसीजीमे पड़ल छथि । तेसर निशान देहिन्दाक फिकरमे फिरैत, चारिम सौ मुद्दालहू के मोकरैरेमे पकड़बाक चेष्टामे निष्ठा कयने छथि ।

बारन्टक सिपाहीक नाम हुनियहि सहस्रोला बाबू छीह कटने पुरैत छथि, आजून सौ बहरमचो करताहू से परम भयावह भै रहल छैन्ह । इर सौ ओतियहि अघ्य नदी-तभी, परित्याग होइत छैन्ह । प्रवीण प्यादो प्रभृति पकड़वाक प्रसन्न मे पड़ल भेष बदलि-बदलि, नूकि-नूकि, छिपि-छिपि घात मे

बूमि रहलैन्ह अछि । सहस्रोला बाबू बारन्टक भय सौ तेहन सेद विन्न भै गेल छथि जे लग-लग मे दांती पर दांती, मुहूर्त-मुहूर्त मे मुच्छा होइत छैन्ह ।

विभ्रमावस्था मे बेहाय-बेहाय उठैत छथि और अष्ट-अष्ट अरै-बरै बजैत बेटा सभ पर बाजय लवैत छथि "हाय लाल हीरा, मोती, जवाहरि, सोन ! जहाँ सभके" अछैते हमर ई दशा ? बचाउ-बचाउ, हटाउ-हटाउ, नहि तौ ब्रमलक-पकड़लक कहैत पुनः मुच्छागत भै गेलाह । ओही अभ्यन्तर मे पोस्ट पिऊन (डाकिया) एक पत्र दय गेलैन्ह जाहिमे सोमहर्षन लाल सम्पादकाला लिखैत छथि जे आहाँक कल्ला भाषा, चित्ता सेत, अमुक तारीखमे कम किकारयो मध्य निलाम भेल प्रायः २६ दिनक अवधियो अवसान भै गेल अछि, ओहि दिन अहाँक पैरवीकारो आकाशफ-कुसुमे छलाह । सेद ! सहस्रोला बाबू जेम्बरहि तकैत छथि जेम्बरहि सौ विपत्तिक पहाड़ चहराइत देखि पड़ैत छैन्ह एवंप्रकारे तीन वर्षाभ्यन्तरे मध्य हुनक सकस सम्पदाक इतिथी भै गेलैन्ह । लोक सन्तापक विषम ज्वर सौ संतप्त भै सहस्रोला बाबू बाद अपनहुँ येहि दुःखमय संसारक छराछाम केँ परित्याग करैत माया जालक कलेवर बदलैत छथि ।

हा शोक ! अपार अपभय तथा सहस्रोलापनक संघार सौ उक्त परिवार देखले दिनमे सुप्तप्राय भै गेल । येहि परिवारमे आब केवल जवाहरिलाल तथा येहि उन्न्यासक नायक सोनेलाल अन्वि रहल छथि । हिनको सभ के बर्बाभावे उपवास पर उपवास करैत-करैत पेटमे ऐठनि पर ऐठनि पड़य लग-लैन्ह अछि । युगल भ्राता शुधा सौ व्याकुल भै यदि पितृ-परिपावित आप-स्वायी सर कुटुम्बक शरणापन्नो होइत छथि तौ ओहिठाम सौ केवल दुःख-दुर्गतिक पहुँचाइये लाय केँ विमुख होबक पड़ैत छैन्ह, जाहि सौ हिनका सभक हृदयाकाश मे अहिनके दुःखहीक घनघटा आच्छादित कयने तथा नेत्र मलिनमे अश्रुये प्रवेश कयने रहैत छैन्ह । युगल भ्राताक निदानावस्था देखि-देखि दीनदयासु दीनानाम दत्त जमीन्दार पाँच टाकाक मासिक बेटन पर पटवारिकी बुद्धि मित्र-सेवा मध्य अनुग्रह कयलथीन्ह अछि । येही स्वत्पाय सौ बेचारे



जवाहिरलाल कोनो घराने परिवारक भरण-पोषण करय लगलाह, पैरन्तु अर्थाभावे सहोदर लोमेलाल सासुरक द्वितीयः यात्रा अन्धावृष्टि नहि करय सकस-पीन्हु अछि । जकर जगाड़ बिल्साक ओच सतत् सतय रहनेन्ह अछि । देखि जौक यथा मे कम्मो श्री कम्म तौ बुड यडाइ सब सपैया लगनेन्ह । परमोदर पिताक पुत्र धिकाह । विधि-व्यवहारादि मे न्यूनता कोना करताह आइये लोक हँसि मारनेन्ह तँ अहू चीन-होनाबस्थामे मालिक महानुभाव सँ हि सब मुदा कृष्ण जब अनुशके सासुर विदा कयनेन्ह अछि । सासुरन टिटकार सँ सोमेलाल सातहि दिनमे सब सपैया फूकि-कोकि कम घर जन अयलपीन्ह ।

पाठक ! वरपक्षक दानजीला देखि लेल । आब कनेक कन्याएअहुक माम-नीलामे मननशील होत । हमर पुर्ब परिचित कृष्णदेव साहुक कृष्ण परिशोधनक बाटा-वाटी तर्कत-तर्कत वषों बीति गेलनेन्ह । किन्तु मनोरथ लाभ सँ अर्थाभावे अलेष्ट देखि अदालत मे मोकदमा बापर कथ वीसो-पचीसो बिगहा माघ मुक्तमे हाथ लगाव लेलनेन्ह । येम्भर पिशुन प्रसाद मालिकक दरबारमे बिबाहजनक विपुल व्ययक अभियोग लगौलपीन्ह जाहि पर मनेजर साहेब मौजेक वामलालक (पांचन) आज्ञा पास कयल । उल्लोच ठाकुर वायलालक हेतु पीजे पर पढ़ैलनाह और बम्म-बखेड़ा करय लगलाह किन्तु बीबानजी के अवेम देखि असंगुष्ट भे बहस्य सँ साधय लगलाह जाहि सँ दीवानजीक उपर एक पांच-साल सब साएल सहाय सेवानतक मोकदमा मजिस्टर साहेबक इजलास मे बापर करौनेन्ह ।

मोकदमाक सारअमे मालिकक तरफ सँ अधकट्टी रसीद स्थाहा जलान इत्यादि दाखिल कयल गेल । रसीद अधकट्टी केँ मिलान कयला सँ विदिन होइत अछि जे जामू जोलहा जितगाक जिनदमे जनील जमादारक अधकट्टीमे १०) दर्ज तँ ओकरा रसीद मे १००) लिखल दैसल जाइत अछि । मिट्ठु मियाँक अधकट्टी मे १६) तँ ओकरा रसीदमे १६२) दर्ज । ठगवा रंगरेजक अधकट्टी मे २०) तँ रसीद मे ३०) दर्ज किन्तु अघार मे बीसो लिखल छैक । सलवा लहेरिक अधकट्टी मे ७) साल तँ रसीद मे ६७) सालसँडि लिखल ।

हुमैनी हजामके अधकट्टी मे २०) तँ रसीद मे ३०) दर्ज । एवम्प्रकारे सँधि-गुप्ति केँ पाँच साल सएक सेवानत साबित कयल गेलनेन्ह ।

सेवानत साबित भेला पर मजिस्टर साहेब बाजें देनाके समय मनोरथ लाभ सँ पुछैत छपीन्ह "वेन मेनस्ट लाभ ! टोम इटना सँ नीच-लोठ (मालिक) का कथें बिनालफेट (अपहरण) किया ?

मनोरथ लाभ-हजुर ! जानबूझकेँ मेने मालिक के मालमुजारी को किसी तरह से तमकफ नहीं किया है । मालिक के रुल के मुताबिक पटवारी के पास तहवील रखवा नहीं जाता । तहसीली रुपये सब रिसाल होने-होने के कबल तक जेठरैयत के पास जमा रहता है । मैं तो केवल लिखती दास हूँ । रैयत के रसीद का हाल तो जाने रैयत या जेठरैयत । मैं तो केवल अधकट्टी वाले रुपये की खनता । सिवाय इसके हजुर यह भी गौर परमावेंगे कि मेरे घर में बीसों आदमी है जिनका गालब-पोषण करने बसला एकमात्र मैं ही हूँ । हजुर लोग भी अपने खानेसामा, नाचखी, बैरा, बीड़ की बारह-पन्द्रह रुपये मे कम्म तो मोशाहुरा न देते होंगे, लेकिन हम बेचारे पटवारियों को तो तीन, पाँच, सात के सिवाय मोशाहुरा पाता कभी भी भनक्य नहीं होता । अलावा इसके अजकल के रेख्याम मे तो तीन, पाँच रुपये में एक आवमी की भी गुजारा दुस्वार है ? तब जहाँ बीसों आदमियों का परवरिश करना है वहाँ पाँच, सात का बिसाल ही क्या है । हम पटवारियों को खुद मालीक ही तो कम्म मोशाहुरा देनेकर अपहरण वृत्ति का पय प्रदर्शक होता है । पहले जमाने में मोशाहुरा के अलावा दस-पाँच बिगहा खेतवारी भी परवरिश के लिये मालिक देता था । लेकिन, आजकल तो "दाना, घास नदारम अइहरा दीनों शरम" की बात हो रही है । ऐसी हलत में अगर रहमदिला रेखाया हम बेचारे पटवारियों पर बेहरबानी न करती होती तो हम पटवारी लोग पटवारिकी के नाम मुनते ही गोमू ला की बिल्सी हो गये रहते । हजुर जून क्याल परमा के सामिन्नी करेंगे कि ऐसी-ऐसी खानत-बारिया सिर्फ हम पटवारियों ही से नहीं हुवा करती है । बल्के मालिक के



जहले जहलकारी ही के जकजमन्दी से होती है, तब रहा "हनुमा पूड़ी बीची जाय, कोत भरन को बान्दी जाय ।"

येहि पर मुईक मुख्तार बसीटा गहनी कह्य लगलथीन्ह, बस-बस तुम से जाती जोलहा, मिट्टू भियाँ, वाला लहेर की रसीद को देखो—जो कि तुम्हारे ही लिखावट और दस्तखत में है, अब कहो कि तुमने तो इन रुपयों को तगल्लुफ तसर्क किया । फिर भी तो तुमने इन तसर्ककाली रुपयों के लिये तमस्मुक लिखवा लेने के लिये मनेजर साहेब से अमानी राउत जेठरीयत के साधने भर्ष किया था न ?

मजिस्टर साहेब—देन (तब) बस दोमारे कहने से सेल्फ-जनफेशन (स्वयं-स्वीकार) होटा हाय इस कास्टे हाम टोम को सेवान (दौरा) डेटा हाय ।

मनोरथ लाभ—हजूर हाकिम है जो कुछ करे सो सब अस्तित्यार है लेकिन इस मोकदमे में कुछ भी मेरा कसूर नहीं है ।

पेशकार—सिपाही ! इसको जेलर बाबू (कारागाराधिपति) के पास जेल में डेल आव ।

दौराक ईगल से दिवानजीक दलील सौ दया किछु अवश्य देलाओल गेलैन्हि किन्तु दागीदार धरिफयले गेलाह ।

कारावासक अभ्यन्तर में दिवानजीक तनय सौ आशा राउत ऋण परि-शोधनार्थ तकाजा पर तकाजा करैत-करैत थाकि जेल किन्तु परिशोधनक निराशा देखि जेल में नारद प्रसाद वकीलक परामर्श सौ मोकदमा दांगि देलकैन्ह आ तावड़-तोड़ पैरवी करैत-करावैत दीवानजीक सकल संपदा निसाम-मसखालाक होम मध्य एक-एक के स्वाहा कय देलकैन्ह । पश्चाति पूर्णाहुतिक हेतु बड़का घर सौ दीवानजी बहुरयबो कबलाह तौ स्मशाने स्मशाने देखि पड़लैन्ह । घर अयलाह तौ घरणीक सिंघास केओ खोज पुछारी पर्यन्त नहि करैत छैन्हि । एक चुटकी अन्न जे अंशन करताह से दुष्प्राप्य नै रहल छैन्ह ।

अनुभवी पाठक ! येही ठामक कहाउत चिह्नक ।

सम्पति भरम समाय कय मुख हेरत अति हीन ।

रजनी सौ स्वाजित बासी जहहि न सोभा दीन ॥

विवाह दान जनित विपुल अपव्ययक कारणे उमय समधीक स्थिति एक वस्त्र सुख सीभाम्यक उत्तम शिखर सौ अति दुख-दुर्गतिक अन्ध-रूप में पतित नै गेलैन्हि । तीव्र दरिद्रताक धार्त बसाह यदि कोनो आत्मीय जनक द्वार पर पर्यटनो करैत छथि तौ ओहिठाम सौ तिरस्कृते में प्रत्यागत होबक पड़ैत छैन्ह । तखन निरावसम्भ में स्वजातिक न्यून श्रेणीक धनवान् व्यक्तिक ओहि काम स्वराजानक सिद्धान्त विवाहक विवेचना करय लगैत छथि । सिद्धान्त विवाहक पूर्व धरि तौ अन्तिम श्रेणीक व्यक्ति विवेचन रूपे सेवा सम्मान भरसावैत रहैत छैन्ह किन्तु उत्तरधर्ति ओहो ओहि देखलवय लवैत छैन्ह तखन पुनर्कृत धनवाय पर आक्रम शिर मुनि-मुनि पश्चात्ताप करैत अधोगति सौ जीवन यात्राक निर्वाह करक पड़ैत छैन्ह ।

उल्लिखकता दास—अवश्यमेव भोक्तव्य कार्याकार्य शुभा शुभम् ॥

## षष्ठम परिच्छेद

### हिरागमन

गमन हमरो नगिजाता ।

करख हम कोन बहाना ॥

पाँच वर्ष पर जाइ अबाहिर जालक हजाम पण्डे ठाकुर की पुतः मनोरथ लाभक भवन पर हिराजमान देखैत छिलैन्ह । हजाम ठाकुरक पुनरागमनक कारण पाठक-पाठिका सौ किविते नै गेख होवतैन्ह । बहलोलपुर—मावापुरीक गमनागमन सौ दांग लोड़ैत-लोड़ैत पाँचग बरस में जाइ अपन अभीष्ट सिद्ध कय रहल छथि । हिरागमनक शुभ दिवस धनुके सोलहम दिन चैत्र शुदि द्वादशी शुक्ल स्वीकृत कयल गेल छैन्ह । कतोक प्रिय पाठक तर्क-वितर्कक और मे पड़ि गेलाह होएत जे चैत्रमे हिरागमन कोना होवतैक । किन्तु, विचारजील पाठक यदि कनेक औरो विचारथि तौ स्पष्टतया विदित नै जय-



तैम्ह जे चन्द्रायण मासक फमे वद्यपि चैत्र किन्तु सौम्य मासक हिसावे एखन वैशाख चिकईक । असु सुवीकृत पत्र तथा अपन विदाइ-सिदाइक सहित फलट डकुर पुनफित होइत बहुसोजपुर फलटि अयलाह । डिरायमन-दिवस निर्णय भे ॥ पर सोनेलासक फेड भाय जवाहिर साज अपन कहल-अनमनाएल धर हारक पुनरोझार (मरम्मति) करावय लागलाह अछि । ओम्हर जाहि दिन सौ सुमतिक डिरायमनक दिन मानल गेलैन्ह ताहि दिन सौ हुनक प्रियतमा मखी विदुषी श्रीमती हितवादिनी देवी प्रतिदिन एकान्त स्थानमें बैसि-बैसि नारी धर्म पर नाना प्रकारक शीखा देवय लागलि छथीन्ह ।

श्रीमति हितवादिनी देवी-हूय, पिय-प्यारी बहिनपा ! आव तौ तौ पितालय सौ स्वसुरालय जाइति छह । हमरा सभ केँ तौ आव तोहर दर्बनो दुर्लभ भेँ आएल । 'हह ! कत बिधि मृगी नारि जबा माहीं, पराधीन सपने मुख नाही ।' यद्यपि तोहर सजे सुमति थिकहु तथापि हमई तौ तोहर ससिये थिकियीह तँ किछु नारी धर्म पर शीखा दैति छिजीहि कान पाति केँ अचफ करैत चलह ।

देखह ! हम सभ बाबत्काल अपना माता-पिताक आलय (गृह) मे रहैत छी अर्थात् बाबत्काल हमरा ययक पाणिग्रहण (विवाह) नहि भेल रहैत अछि ताबते धरि हम सभ माता-पिता, पिता-पिताआइनि, भाय-भाउजीक अधीना रहैति छी किन्तु समबोचित पर जखन ओ लोकनि हमरा सभ केँ दान कय दैत छथि तखन सौ हम सभ अपन-अपन पतिक अनुचरी भेँ जाइति छी । हमरा सभक माय-बाप, पिता-पिताआइनि, भाय-भाउजि, हीत-मीत सभ परिमित सुख अर्थात् योग्यतानुसार सुख देनिहार थिकाह किन्तु स्वामी अनन्त सुखक दाता होइत छथि, बिश्व भरिमे पनिदेव सौ बड़ हितकर पत्नी केँ आन केओ नहि होइत छैक । पतिक पति ईश्वर थिकथीन्ह किन्तु हमरा सभक ईश्वर पतिये थिकाह । हमरा सभक कर्लव्य पति सेवाक अतिरिक्त दोसर कोनो सत, तप तथा यज्ञ करव शास्त्रकार नहि लिखलैन्ह अछि । (पतिरेको गुरु स्त्रीणाम्) मनु भगवान तौ एतेक धरि निवेध कय गेलाह अछि जे-जे सौभागिनी स्वामीक आज्ञा बिना कोनो उपवासो व्रत करथि तौ पतिक

जामु केँ धीण करैत भर्क-नामिनी होथि । पतिक धर्माधर्म, पाद-पुष्पक बड़नीगक भागिनी पत्नी थिकथीन्ह तदर्थ अर्द्धाङ्गिनी कहवैत छथि तहिना कभीक धर्म तथा पाप कर्मक अर्द्धभासक भागी पतियो होइत छथि । अपन पति यदि आन्हार, कनाह, कुसप, कोदि, कुकर्मि, कोधी, बहीर, बूढ़, लांगढ़, मूल्ह तथा मूर्खधिराजो होथि तथापि हुनक अचहेसा तथा अनादर कोनो अवस्था माय कदापि नहि करियैन्ह । मनसा, वाचा, कर्मना सौ केवल हुनकेँ सेवा-सुधुषा करैत रहियैन्ह । जे पत्नी पतिक अपमान अवज्ञाक आचरण करैत छथि से ऐहि लौकिक मेँ आनन्म अनन्त यातना तौ भोगितहि छथि किन्तु मरणान्तर समलोकहु मेँ अनेकानेक क्लेश सहन करक पडैत छैन्ह । जे पिलासिनी निज स्वामी केँ छकि परपुरुष सौ रमण करैत छथि से ऐहि जन्म मेँ कुलकर्लकिनी, उलूकिनी भेँ जीवन व्यतीत करैत छथि । पारलौकिको मेँ सय कल्प पर्यन्त नर्क निवासिनी कयलि जाइति छथि । जे रमणी अधिक सुखक हेतु अपन सय कोटि जन्म पर्यन्तक मौख्य केँ बातक बात मेँ तिलाज्जलि बय दैति छथि तनिका सति अधमाधम अछलाहि अवना संसार मेँ दोभरि केँ होइति । येहेनि पापीयसी पतिव्रजिनी पत्नी मरणोत्तरहु जहाँ बभ्रमग्रहण करैत छथि तहुँ पतिक सुख सौ अञ्चित रहि प्रमत्त-अल्पानुसन्धक सहलहा-हटि मेँ बिधना भेँ जाइत छथि । हम स्त्री जाति बिना परिश्रम सहन मेँ वरमपति प्राप्ति कय सकैति छी यदि हम सभ सकल छल-सुदल छोड़ि केवल पतिव्रत धर्म्यहीक पासन करी । हमरा सभक सर्वोत्कृष्ट धर्म-अताधिक पालन करव केवल पतिदेवहीक पाद पद्ममे मनसा, वाचा, कर्मना सौ प्रेम बाँध थीक । केवल पतिदेवहीक पाद पद्मक सेवन-पूजन सौ सहज अपावनि नारि वरमपति प्राप्ति करैति छथि । स्त्री जाति केँ अमक प्रेम परित्याग कय केवल पतिदेवहीक प्रेम करव लिखैत् अछि, जाहि कारणे पत्नी, पतिव्रता कहवैतिअछि । कहह कोनो स्त्री आइधरि पतिव्रता उपपन्न अतिरिक्त पितादत्ता वा पुत्रव्रता कहौलक अछि ? माता-पिता, भाय-बहिन, बेटा बेटी, ससु-ससुर, हीत-मीत, स्वजन-परिजन अर्थात् जहाँ तक जे स्नेही सम्बन्धी छथि से सभ स्त्री केँ पति बिना सरणिहूक (सूर्यहूक) ताप सौ अधिक तप्त बूझि पडैत छथीन्ह । स्त्रीकेँ पति बिशेषक समान दुख दोसर कोनो नहि होइत छैक । पति बिना पत्नीकेँ तन, धन, धाम, पृथ्वी, राज, समाज सभ लोक समाज बूझि पडैत छैक ।



पति विद्वान् पत्नी के भोज, रोग समान, भूषण वसन वीक्षण समान, संसार सम सातनाक समान बोध होइत छैक । स्त्री के निवधभरि मे पतिक सन सुखदायक जान केओ नहि होइत छैक । बिना कान्तक कामिनी ओहने बूझ केहुने जीवक बिना देह, दीपक बिना गेह, जनक बिना सरिता, पक्षक बिना पक्षी, मलिक बिना कणि, दिवाकर बिना दिन, चन्द्रक बिना रात्रिनी । ई सम शोचि-विचारि जे स्त्री केवल पतिदेवहीक सेवन-पूजन करैति छथि तनिका ऊपर देखता-पितर, ऋषि-मुनि सभ सतत् सानुकूल रहैत छथीन्ह । "यस्य पत्नी भवेत्सौख्यी पतिव्रतपरायणा सखी सर्वलोकेषु स सुखी स धनी-पुमान् ॥" नारी धर्म नियमावलीमे की मालिका की युवती, की वृद्धा अर्थात् कोनो अवस्था मे हुंगरा स्त्री जातिक हेतु स्वयंघना नहि लिखल गेल अछि । बाल्यावस्था मे पिताक, युवावस्था मे पतिक, वृद्धावस्था मे पुत्रक रक्षा मे राखलि गेलहुँ अछि । "पिता रक्षति कोमारि, भर्ता रक्षति पौत्रने पुत्रा; न स्त्री स्वाशाश्रयमर्हति" । स्वतंत्र भेला भौं हम सब विगडि आइति छी तखन पति पिता तथा मातामज्जीनू कुल कवंचित भै जाइत अछि । हम सब स्त्री रख कहैति छी तखन कहैत रत्न के नम्रगत करबाक इच्छा ककरा नहि होइति छैक । देखहु गोसाईं तुलसीदासजी कहै गेलाह अछि जे "महानृष्टि अलि कूटि किनारी । जिमि स्वतंत्र होइ विगडहि नारी" ॥ अतएव हमरा सब के पालित्व रखक रक्षा सर्वथा-सर्वथा करतब्य थीक तौ हमरा पतिव्रता स्त्री के पर पुरुष सौ परदा (ओट) करब परमोचित थीक ।

हमरा सबक शोभा केवल सौन्दर्य थी नहि होइति अछि । केवल सुन्दरिये भेलाहि सौ हम सब विनोद पतिप्राणा नहि भै सकैति छी । सुन्दरता केवल सुखोपवर्तहि सौ नहि किन्तु दुःखहि सौ होइति छैक । हम सब यदि सन्तुष्ट मे पतिप्राणा भै स्वर्गक अनुपम सुखक अनुभव करब चाही तौ हमरा सब के परमावश्यक थीक जे पतिक प्रियतमा बनि हुनक आज्ञानुपतिनी होइ । पति-इच्छाक प्रतिकूल जे कोनो कार्य होइत हो से बिसरियो कय कयमपि कर्तव्य नहि थीक । क्रोधाद्वेग मे कोनो दुर्बचनक प्रयोग पतिक प्रति नहि करी, अपरापर स्त्री-मण्डली मे बैसि-बैसि पतिक निन्दा वा हेय बचनक गुल-

धरी नहि छोड़ी । स्वयं सर्वदा प्रत्ये-चित्त बनति रही तथा पतिक चित के सतत प्रसन्न रखबाक प्रयत्न करैति । प्रभुभासकुर सौ विभूषित तथा पटारिपु और अष्टावगुणक अन्तेष्टि क्रिया (शरीर) करैति रही ।

पति यदि स्तेखित वा चिन्तित छथि तौ प्रत्येक प्रयत्न तथा विशेष सेवा सुधुवा सौ हुनक दुःख विन्ता के निवारण करियन्ह । जखन पति परदेश अधवा बाहर सौ शोकल-माकल आकाश तौ हुनक स्वागत सत्कार पुदुम्बु-सायण तथा मन्द हासक द्वारा करियैतन्ह । मुर्खा तथा कर्कशा स्त्रीवत् हनहन-पटपट-खटपट तथा दुर्बचन करैति स्वार्थताक प्रताप नहि करब लायी । जखन पति परदेश वा बाहर जायि तखन अपन शरीर के विनोद भूषण-वसन सौ विभूषित करब परतवत् (विपत्त) थीक । श्रुद्धारावरण धारण करवा तौ केवल पतिहीक प्रीत्यर्थ थीक । स्त्री जातिक सर्वाङ्गकायपति पतिये होइत छथि, जखन पति प्रस्तुत नहि तखन प्रणय ककर । जे स्त्री पति विनोदिनी छथि तनिक जीवन यात्राक निर्वाह केवल भस्मरमिता-योगिनी वा ब्रह्मचारिणीयि भै करक पड़ैत छैन्हि । विधवाक हेतु तौ शास्त्रक आदेश छैन्हि जे ओ स्वतेवस्व धारण करयि । कोनो बाहन पर विचरथि नहि । ऊँच शय्या अर्थात् पलंग, खाटादि पर शयन नहि करयि । काजर-जबटन, अतर-फुलेज, ताम्बूलादि अर्थात् जीर्णोन्मयनक कोनो पर्यायक व्यवहार नहि करयि, धिरमुपिबत भेसि रहयि । रात्रिनिद्रामे एकाहादि अर्थात् एकमुक्ते करयि । एकभुक्तोमे केवल जवहीक रोही तथा स्वाच्छातिस्वच्छ सुस्वस्व आंजने भोज जनावयि । किन्तु देखहु आइ बाल्हि तौ हमरा स्त्री जाति के सुवन-वसन-विन्यासक बढ़ाव येहन यदि गेल छैन्हि जे बूढ़ि नौ बूढ़ि जनिका मुख मे दाँतक नाम नहि, माथ मे काली केखक रेखा नहि, आनन मे कान्ति नहि, मांस मे रुधिर नहि, नात्र मे करामात नहि अर्थात् मन नहिर्ब नहि, सेहो भूषणा-

पटगुण-कार्यकुशली, करमपुदासी, शोभेयुमाता, शरणेश्वरम्मा । प्रमोडनुकूला क्षमया धरित्री भार्या न पाहुँ गुणवतीह दुर्बला ।

पटारिपु-मद्यपान, कुसंगति, पति सौ भूषकता, परिश्रमण, कुसमय सवन और परगृहनिवास ।

अष्टावगुण-साहस, चपलता, अनुत्पन्ना, शाय्या, भय, अनिवैकता, अर्थात्, आदाया ।



भिमानी, सीमागिनी, सुवतीक साक-कान वगैरह पर तत्पर रहैति कवि । विशेषतर जसब कोनो तीर्थ स्थान, उत्तम स्थान वा नैहर-नीहरक समनामन करक होइत छैन्ह । वेहि समय पर यदि अपना नहिओ रहैतन्ह तौ अशोशियो-पशोशियो सी माझि-माझि नय सर्वांग के भूषित कय लेतीह । वेद ! हमरि स्त्री जाति के स्वर्ण-रौप्यक (खोन, चानीक) कंकण, किंकिणि, काठा, कण्ठश्रीक स्थान मे कांसदुक हथकड़ी, पदकड़ी, मूति-सिकड़ी सौ भूषणित कय देन्हि तौ कि एक्को बेरि गरीबो समत्वगोलीहि ? हमरि विधवा तौ औरो सघनक काल काटय लगैति छथीन्ह । देखह हुनक छवि छटाक, घटा पर कोनो कवि केहेन चित्राकृष्ण जयनेन्हि अछि । "जरीदार सारी मे किनारी कामदार टंभी, चोली अरकारी के दिखातो गोल छाती को । नसलें, जिरखाली कर भूषण सजाती, कोर कज्जल सजाती तैब जीब बरजाती को । बाल अठलाती बलसाती जवांती लङ्का, जीवन बबानी में लुटाती निज बानी को । मांग बिन मिदुर सुहाती पान खाती सुब, कहिये को रांड कान काटे अहिवाती को ।"

हमरा सभ के तौ येहन अशौकिक आभरण सौ शरीराभूषित करतथ्य चीक के आलम्को अङ्ग पर सौ उत्तरय नहि, थोरो चौराय नहि गऊय, फूटबो-फूटबो वा चिअयबो नहि करय । समय पड़ता पर केओ बाँटियो धरि नहि सकय । अतएव हमरा सभ के परमोचित चीक के वारहो आभरण तथा पोड़सो भूज्जारक स्थान मे बारह विधि सोलहो कला अर्थात् क्षमा, शिल्प

१. १२ आभरण—१. बेणी (शिसरकुल) २. टीका (साङ्ग टीका) ३. वेसरि (नीप)  
४. कण्ठश्री (कण्ठसरि) ५. हार (बगदहार) ६. बाबुपन्द (बिबीड)  
७. नुही (बलया) ८. कङ्कण (कगना) ९. मुदिका (औटो) १०.  
किंकिणी (पाँवजेब) ११. नूपुर (पैरी, नेजर) १२. बिरिया  
(बिछिया) ।

३. १६ भूज्जार-अङ्गभूषि २. नञ्जन (स्नान) ३. जमलपसन परिधान ४.  
आलकत (आरति) रञ्जन ५. चिकुर बित्पास (केसररञ्जन) ६.  
बिन्दु बित्पास मांग मे बिन्दु करब ७. ससाठ पर चानन

आन, धानुआन, अरोग्य-आन, वैद्यक-आन, पाक-आत्मक आन, सौ आभरणित मे सोलहो भूज्जार सही अस्ता सौ पति के स्वयं कयने रही अर्थात् पति के रति-विलास मे सुखदा होइ, पति के स्वयं परसि कय भोजन करावी, पति के बिज करकमत सौ लल-बूख (पान) अर्पण करी, पतिक सम्मुख हाव-भाव कदाश्चादि सौ उपस्थित रही, पति के सु-तथादि तथा ब्रह्मक पठन अवग करावी, पतिक रुचिक अनुसार उत्तम-उत्तम खेलिक शिक्षिता होइ, तथा पतिहिक संग खेली, मधुर मनोहर गानक सुशिक्षिता होइ, सत्य तथा प्रियम्बदा होइ, पतिक दोष के चितमे वृत्ति नहि थी, पतिक कूर वचन पर उदासीन बनति रही, पति के प्रत्येक कार्य मे सुमंजी होइ, पतिक दोषारोपित कय पर कोधव्यस्ता मे विनय बर्णिका होइ, पतिक अतिरिक्त परपुरुषक संग हास्य नर रसगयी वार्तालाप कदापि नहि करी, गृहगत पतिक विशेष सेवा-सुधुवा करी, पतिक सम्मुख प्रदम्भानधी तथा लज्जावमति लगति रही, पतिक अतिरिक्त सोम-समुद्रक पादपथक पुजन आदरपूर्वक करी । आश्रमक प्रत्येक व्यक्तिक उत्थान सौ पूर्वहि, शयन-शय्या के त्याग करी । परिवारक प्रत्येक व्यक्ति के अशन-पान कराव तत्परवत् स्वयं आहार करी । सन्तानक विशेष पालन-पोषण करी । अपरक नीक वस्तुक लिलिप्ता कदापि नहि करी । स्वजस्तुक वसासम्भव पर सन्तुष्टा बनति रही । अपन गृह खर्च बहुत छोवि-विचारि तथा सामर्थ्यानुसार आय सौ व्यव सम्म करी । विपदापदक हेतु अर्थ सञ्चन कयने रही । गृहक वस्तुमात्र के संगम-नियम सौ राखी तथा विशेष ध्यानाकृष्ट कयने रही । मधुर तथा प्रिय वचन सौ परिवार तथा दास-दासी के संतुष्ट कयने रही । देखह ! पतिदेवहीक सेवार्चन सौ अहल्या,

केसरीक शिलक करब ८. चिबुक (गाल) पर तिल बनाएव  
९. हाव पैरमे मेहदी लगायब १०. शरीराम्बङ्ग अर्थात् सुगन्धि  
लेपन करब ११. भूषण धारण करब १२. पुष्पमाल धारण करब  
१३. मुखराम अर्थात् पान चिवाएव १४. अक्षरराम अर्थात् ओठ  
लाल करब और १५. अंजन, धाजर लगायब । १६. दन्ताभरण  
(मिस्सी) ।



हस्तिनी, कुन्ती, गान्धारी, राक्षी, ताया, तुलसी, रमयन्ती, दीपदी, विशाखरी, सत्यवती, मन्मथमा, लोलावती, सीता, आश्विनी, शशी तथा । अनेकानेक राक्षी अनेकानेक राक्षी भी भेलि छथि ।

हम सबी आनि चारि प्रकारक अर्घात् पद्मिनी, चित्रिणी, हस्तिनी, शशिनी होइति छी और येहु चारि मध्य चारि प्रकारक प्रतिपत्ता अर्घात् लज्जा, गन्धर्व, भगु तथा नीच होइत छी । सब हुनक परिभाषा सुनह ।

हुनक प्रतिपत्ता ओ विधीहि जिनका चितने भनन् चित्रित रहैत छैन्हि जे दिवस भनि से हुनके प्रति पुण्य थिगहु और सब स्वीये पौक ।

सबस्य प्रतिपत्ता ओ शशीहि जिनका पर पुस्य पर पिता, पुत्र तथा आनुवत भाव रहैति छैन्हि ।

लघु पतिव्रता ओ विधीहि जे मुख्यतः भय, खौफ लज्जा तथा भ्रम विचारि स्वगृह के परित्याग रहि करैति छथि अर्घात् स्वगृह मध्य रहैत छथि ।

नीच पतिव्रता ओ विधीहि जे स्वकुल भ्रम प्रोत्साहन भै गुलबंदीद्वय नहि करैति छथि ।

हम सभी । नारी धर्म पर अनेक शिक्षा विधीहि समीचीन प्रकारे कह्य जगिजाहि तो येहि सोझो एक पोथा तैयार भै जयशोहि । तो तो स्वयं सुमनिये थिकोहि ।

अनु । हितवादिनी देवीक हितकरी शिक्षाक षोष होइतहि श्रीमती सुमतिक एक दोसरि विधवा सती विधवा गण्डादि बाल्य से किछु नारी धर्म पर शिक्षा देयक जागति छथीन्हि ।

श्रीमती विधवा गण्डादि । हम पान । हम सब अपना प्राण प्रीतमक गृह पदमो थिकीन्हि । ओ सब देश-विदेश सौ कतेक कष्ट महन कर्य प्रोत्साहन कर्य हमरा सभक भरण-पोषण करैत छथि । हम भार्या यदि अधिनक नार नहि सम्भारि करी तो पति प्राप्तिमे कय की कय सकैत छथि ? ओ सब सहस्र मुख सौ करैत छथि जे "भार्यास्वरु गृहे वासि मातृ चात्रिय-

वादिनी । अरथ्यं गन्तव्यं यथारथ्यं तथा गृहम् ॥ ते हमरा सब के कहन होइत जाही से सुनह ।

"हम सभी समान वस्त्रवा होवे माता ।

सदान्तरिणी हम-मुखी सद्गुण की माता ॥

पालन करि गृह धर्म सभी को मुख पहुँचावे ।

लघुजन, मुख्यजन आदि सभी पर स्नेह दिखवे ॥

कर मे पति के चरण शोधने सुत वा कन्या ।

सेवामे सुल लहय वही गृहणी भय छन्या ॥

गिराहार रहि स्वयं करावे पति की भोजन ।

वही प्रेमप्रत वही नारि का सुखमय जीवन ॥

सुल निवास की सभी कामना सोकर ।

पत्नी पति से मिले स्नेह की सुरति होकर ॥

एक प्राण दो देह होय अथ दम्पति की मिल ।

पत्नी आनन्द सभीर उन्नय हृत्पथ उठय मिल ॥

सावधान रहि सदा करे परिवार सुपालन ।

सुनतारो की भाति रखि रखि लघु आनन ॥

रेल दिवस धार्मिक जगोका करि हिज चित्तन ।

सकल भोग्य संयोजक बनवे सुखमय जीवन ॥

आ जाने यदि कोई द्वार पर अनिधि थिकारी ।

यथा शक्ति सत्कार करे निज धर्म विचारी ॥

देकर जन्म जहाने सोलकर भीठी बानी ।

करि सेवा सम्मान मिलवे डरा पानी ॥"

नारी धर्म शिक्षाक उत्तम-काण्डक सुनमरन् श्रीमन्तु शोभाति श्रीमती सुमतिक भाऊज मनुमायिणी गृह पावे को अनन्तर पति उन्नत शोभी से सम्मिलित भेलीहि । हितवादिनी, विधवादिनी गृहनि विधीविधिद्वय नम भोजि करैति कह्य जागति छथीन्हि, अथ भद्रवत्ता भीषी ! हम सब तो अपने



सखी को जे-जहाँ फुरल से शिक्षा नारी धर्म पर देल जाय अहूँ के उचित शिक्षा जे अपना मनदोसि के पुरुष धर्म पर किछु शिक्षा दीयीन्हि ।

मंजुभाषिणी—प्रिय ननदे ! हमर मनदोसि तौ हूले मे नारी शिक्षाक प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण भै अयलाह अछि और काव्य मे तौ काव्य परीक्षो-त्तीर्ण पालोपण्डित भै आएल छथि । हुनका सम्मुख मे हम यदि कनेका अधरोष्टी उठाएब तौ तुरन्त काव्य छाँटल लगलाह । “खोड़ि-बीछि खो मौनी बहुमोर हो, नुआ फटी तौ नइहर जो” तथापि अहाँ सभक आग्रह तौ किछु अवश्य कहबैन्हि । अहाँ सभ चर्नेति चल्तु हमर कथ्य केँ सुनैति रहब ।

श्रीमती हितवादिनी—छिः छिः छिः ओ तौ हमरा सभ केँ बहिन-जमाय होयलाह । हमरा लोकनि हुनक सम्मुख कोना होयबैन्हि । अन्तवे सुनैति छी जे पाहुन परम मुसर (मुहफट्ट) छथि की बजैत की जाहि देखि तखन तौ हम सभ बेभर्म भै आएल ।

श्रीमती मंजुभाषिणी—चलू, चलू ! “हास्य मनोहारि सखी जनाजाम्” । ओ कि आहाँ सभक चन्चलने बिहारेत रहलाह, कोबरक बर तौ कोल्हक बरदे भेल रहैत छथि यदि सम्मुख नहि होयबैन्हि तौ देहरियो जागि केँ तौ हमरा सभक दुष्टकूट सुनैति रहब ।

एकम्यकाने पालनपाय हास परिहास करैत-करैत समझू जनी कोबर मुक्त बेहरि पन प्रस्तुत भेलीहि । तदनन्तर श्रीमती मंजुभाषिणी अवसर भँ चिकेतनाभ्यन्तर गेलीहि और सुमति नायक सोने सान सौँ कहय जाचलि छथीन्हि—ओ पडुता ! अहाँ तौ पण्डितक बेठा महापण्डित छी । आहाँ केँ तौ किछु उपदेशो देव सूर्य केँ सीधे देखाएब होयत तथापि बिज मनचीक ममत्वे किछु कहैक पड़ैत अछि । देखतैन्हि ! हमरि ननदि एखन अति अवस्था तथः एक बालक सजित खाँडिनी लखी थिकीहि कासुन मे जाहि सौँ कोनो बालक अपोकर्य नहि होइन्हि से यत्न करैत रहबैन्हि । आहाँ तौ विशेषतया जनितहि होयब जे-जे-पति पत्नी पर प्रेम रखैत छथि अर्थात् पानीकत पालन करैत छथि से पराया पत्नी केँ मातृवत् कुलैत छथि । पत्नीवत-पुरुषक

पत्नी यदि कुरूपो किम्ब कुरुरियो रहैति छथीन्हि तथापि धर्म विचारि हुनक पति परदार-निरत कयापि नहि होइत छथीन्हि केवल स्वपतिवदे केँ प्रेमपात्री कुलैत छथीन्हि । जे पति स्वपत्नी केँ अर्द्धाङ्गिनी जानि विशेष प्रणय करैत छथीन्हि हुनक पतिवदो पति केँ प्राणाधिक प्रीति करैति छथीन्हि । दाम्पत्यमे जगत परस्पर प्रवाद प्रेम भँ जाइत छैक और पुगल-जोड़ी अपन-अपन कलेजक पालन करय लबैतिछथि तखन हुनक क्षुधाति-भूख भवनो स्वयं सद्गम भै जाइत छैन्ह । दिनानुदिन सुख-सौभाग्य-सम्पत्तिवासी होयब लबैत छथि । पराया रमणीक कमनीय कान्ति केँ देखि जाहि पुरुषक चित्त चलायमान होइत छैन्ह से नर अष्टमाधम नारकी भिकाह । जे पुरुष पराया पत्नी सौँ प्रणय प्राप्ति करैत छथि अथवा ओकरा मोहजालमे फँसि जाइत छथि तनिक दशा देखैत होयबैन्हि जे ओक सान केँ तिलांजलि दय तन, धन, धाम केँ स्वाहा करैत नावा प्रकारक दुःख शोक सन्ताप केँ सहैत द्वार-द्वार भीखाटन करैत फिरैत छथि । जाहि तन-धन-धामक द्वारा कर्म कयला सौँ मनुष्य सकल सुखक लागि स्वर्गलोक प्राप्त करैत अछि ओहि बहुदम्भु चित्त केँ बाराहना वा अन्यान्य कुकर्म मे प्रवाहित कय नावा प्रकारक रोग-शोक-परितापक कुण्ड मे डुबल होइत रहैत छथि । जाहि कुल मे काव्यीक आदर सम्मान नहि होइत छैन्ह से कुल श्री मनु भगवान कहैत छथि जे ओहि बामाक आहि सौँ आनु विनष्ट भै जाइत अछि और जाहि कुलमे भामिनीक भरण पोषण आवर सम्मान विशेष होइत छैन्ह जाहि कुल पर देव पिता भूमि-धुनि सब सतत सानुकूल रहैत छथीन्ह । तँ स्त्री, पिता, आता पति तथा देवरादिक सौँ परम पूजनीया थीकीहि ।

शोचन्ति दामयोयव विनश्यत्पामु तत्कुलम् ।

न शोचन्ति मातृता बद्धेति तदि सर्वदा ॥

प्रिया न पावहि जेहि भजन आदर अह सम्मान ।

सो निश्चै मजि जात है कहते मनु भगवान ॥



एही अभ्यन्तर मे मन्द-मन्द हँसत जिहँसत छह-छह करैत सोनेलालक सारि हृदयहारिणी उपस्थित भेलीह ओर बहिनोह की दू-बारि सकल सारि सौ परियाय कह्य सामति छथीन्ह "ओ पढ़ना ! भीजीक शिक्षा तौ सुनलैन्ह कनेक हमरो शिक्षा तौ ध्वज मे धारण कय जाय । अहाँक पुरुष जाति के उचित धिकैन्ह जे माता, भविनी(बहिनी)तथा पुत्रियोक भेट भिरन्तर स्थानमे कदापि नहि करयि, कियेक तौ इन्द्रियादिक सहे बलिष्ठ होइति छबि केहेन-केहेन, बड़का-बड़का बुद्धिमान बलमानो के, स्त्रीचि के पाप पंक मे पटक दैति छैन्हि । ओ पढ़ना ! हम परम मंदारि मन्दमति स्वीजाति कहाँ तक अहाँ के पुरुष-शिक्षा पर दीक्षा देब अहाँ तौ स्वयं काव्य मे पिङ्गलाचार्यक बेटा, ज्ञान मे कामसुपुण्डीक पीजे धिकहुँ ।

सोने लाल-प्रिये अहाँ सबहि तौ स्वजातिक प्रशंसा तथा पुरुष जातिक निन्दा बौड़बहि मे विशेष रूप सौ छोटि गेलहुँ । अस्तु यथासाध्य अहाँक अनुरोधक पालन अवश्ये करब, किन्तु हमरा अबोध पर अहाँ कनेक दया-वृत्ति देने रहब ।

उचितवक्ता दास-प्रिह अवने ! अपने सबहि तौ हमरा दुनखा दुधमुख सोनेलाल के अपना-अपना शिक्षा दीक्षाक अवकाश सौ छोट-छोट कय छोड़लहुँ अछि । अहाँ सभक विद्या चरित जखन देखो नहि जानि सकैत छथि तखन हमर अबोध मानवक मणने कोन ?

राक्षिय नारि यदपि उर माहीं ।  
मुक्ती प्राप्त नृपति वश माहीं ॥  
विधिहु न नारि हृदय गति जानी ।  
सकल कपट अथ अवधुन खानी ॥  
नारि विवश नर सकल मुखार्ई ।  
नाचहि नर सरकट की नाई ॥

तुलसी या जग आदके कोउ न भयो समरत्न ।  
एक कल्पन एक कुचन पर को न बलायो हत्य ॥

श्रीमद वक्त न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि ।

मृगनयनी के नयन धार को अस लागु न जाहि ॥

अस्तु ! पूर्वोक्त हास परिहास, शिक्षा दीक्षाक लेखनक (व्याख्यानक) कुलकोस अटेष्य कय अर्थात् नर-नारी कर्त्तव्याकर्त्तव्य शिक्षाक सम्पूर्ण समय जेब कय सोनेलाल सासुर सौ सहति अयलाह ।

आइ सैत धुदि दावली धुको आबि भेल । विगत राति मे सोनेलाल अति संकीर्ण रूपे अर्थात् बारि कहार एक बेगारक सहित द्विरागमनक हेतु सासुर आएल छथि । सेहि सरल संकीर्णता पर कलोक हमर हंसोड़ पाठक पाठिका के विस्मय तथा हँसियो लगैति होयतैन्हि जे जिनक सिद्धान्त-बिबाह ओहन जून-घाम, ऊम-टाम सौ भेलैन्ह, तिनक द्विरागमनक दशा देखन सूक्ष्म कियैक होबय लगलैन्हि ।

पाठक ! सहलोलपन, बहुलोलपन, अन्ध-धुन्ध अपरिमितापव्ययताक प्रतिक्रिया राजा सौ रंके होइत छैक । अतएव पूर्वोक्त घटना सौ हमरा सभ के शिक्षा ग्रहण कर्त्तव्य थीक जे "बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि से । ओ बनि आबि सहन मे ताही मे चित दे ॥" अस्तु ! सेहि उपन्यासक नायिका श्रीमती सुमति एक उच्च कुल कामिनी तथा विशेष विदुषी धिकीहि तँ आधा कयल जाइति अछि जे भविष्य मे ई अपन सदाचार बुद्धिमता तथा दूरदर्शिता सौ स्वकुल मे एक आवर्ण रमणी भै पतिक अधःपतित अवस्था के पुनः विभव साक्षिनी बनाय स्वनाम के सार्थक करतीहि ।

"न गृहं गृहणी बिना ।

माया स्वस्वा दुहितावान विमल्लोसनी भवेत् ।

बलवान इन्द्रिय धामो विद्वान्समपि कर्षयति ॥

आता पिता पुत्र उरगारी । पुरुष मनोहर निरखत नारी ॥

होय विकल मन सकल न रोकी । जिमि रविमणि डब रविहि विजोकी ॥

कलि काल विहास किए मनुवा ।

नहि मानत कोउ अनुवा अनुवा ॥



### सप्तम परिच्छेद

“दुर्मस्मृती हरसि भीतिमशेष प्रन्ती।”

पति गृह प्रवेशान्तर समस्त वस्तु श्रीमती सुमति पतिक आश्रमक अग्रपतन देखि देखि रागिनिवाशेव सिन्न। जित कितामे पड़ति तर्क वितर्क करय लागति छथि। हय चित्तानणि। पतिना मुख भीभाष्यक प्रवृत्ता पूर्व की मुनित छथीहि किन्तु सम्प्रति औरक और देखि मुनि रहल छी, हे मा दुर्मस्मृति नाशिनी। दया कर, पुत्रीक दीनाहीनताया के गमन कर कृपाकटाक्ष सौं येहेति सुमति प्रदान कर जे देखि भवनमे हम एक आदर्श सुवती सँ निज नाम के सार्थक करैति पतिक दुर्दशा के सुदृशमे पुनः परिचित्त कर सकी।

ककणामयी भगवती श्री कालिकाक कृपा सौं किञ्चित् कालमे अनुभव-धीला श्रीमती सुमति आश्रमक श्रव्येक कार्य के स्वयं सम्भारय लगतीहि। कपन कार्यदक्षता सौं समाज के विमुग्ध करय लागति छथि। हिनक कार्य कुशलता पर स्ववर्गीय सहवासिनी आलसिनी मुर्खा स्त्री सब नामा प्रकारक कूट निन्दा तथा व्यङ्ग करैति परस्पर हास्य परिहास्य करय लागति छथीन्हि।

विदुषमनि कहैति छथीन्हि अय ! विदुसमनि देखु तौ ? हमरा समस्त कुल लूटने आइ धरि येहुनि निर्लेज्व कलिमुनी कुलबधूक आगमन नहि भेल छलैक अछि। किन्तु सोनक सोहारा के देखैति छथीन्हि ? सामुर वसना दशोदिन नहि व्यतीत भेलैन्हि अछि कि बुद्धि-पुर्नितयाक कान कटैत धरन काल-धन्या सब अपने हाथे सम्भारय लागति छथि। हमरा लोकनि तौ सामुर अवकाश उत्तर १२, १५ वर्ष पर्यन्त गृहक कोनो कार्य मे हस्ताक्षेप धरि नहि कयल। घर आङ्गन छोड़ि दरवाजा सौं भीका तौ कहियो लागत नहि उठाओल। दिनक कोन चर्चा जे अङ्गरेजि सौं पूर्व तौ नहिओ पति के स्वप्नद्वै मे दर्शन

नहि देने होमबैन्हि किन्तु आइ-काल्हिक बिलासिनी पुत्रवधू तौ बिराममनक प्राताहि सौ पतिक मुवाहार भँ जाइति छथि। गृह कार्य कारिकाक तौ सादे गिखौने अवैत छथि। सामु-सामुर, देवर-देवारिनी, तनदि-जैधीक उपर हर-हुमयिक ठूँकार तथा फर-फरमाइश सौ तौ हुनका सब केँ सतत सतबैति रहैति छथीन्हि विशेषतर जखन, जखन स्वामी उपाज्जेक रहैत छथीन्हि।

वात्सलायक गठन, लरीरक बठन मे तौ कोनो उपाधिमे (डिगरीमे) उपलब्ध कयने सामुर अवैति छथि परोपदेश मे तौ एम० ए० अवका ओहू सौं एकाग्र दर्जा (डिगरी) देखिये पास कय अवैत छथि। येहुनि कुलाङ्गनाक तुलना मे हमरा समस्त गणना के करत ?

विदुसमनि-अय विदुषमनि ! बताहि भेलहुँ अछि आइ काल्हिक पड़ल लिखल स्त्री केँ स्वयं करबैकि से अहाँक शाय्य थीक ? सम्प्रति सरबसक समय नहि बिकैक जे अहाँ काम्मे पर बढल रहबैकि। आइ काल्हिक पुतहु सौं पति-भक्ति मे सावित्री, आदर मे सत्यभामा, चरित्र मे सखी होइति छथि चपचाप देखैति चल नहि तौ कनेको किछु कहबैकि कि लगले इन्द्रबुद्ध का अर्द्धबन्धक आवस्था करय लागति।

पाठक ! चिचुर-बिलासिनीक कचहरी मे कहीं तक ओजराएल रहब आगा चनु श्रीमती सुमतिक मुनिषाक सूत्र धयने चनु नहि तौ अहुँ जीटहाक सोल मे भूतिआय जाएब।

अस्तु ! आश्रमक दुर्दशा देखि श्रीमती अपन सबसब अवशिष्ट महना बुझिमा सौं सर्वाङ्ग सौं क्लेशक कमल और ओहि सभ केँ बेचि खोचि कय तीन सय रुपैया एकठ्ठा कयबैन्हि। सय पचासक जिनैस तथा अग्याम्य उपयोगी सामान सालोभरि नित्यहिन हेतु एक्के ठाम बीनि-बेलाहि कय राखि लेबैन्हि। स्वामी केँ मालिक सौं जे किछु बेतन भेटैत छैन्ह से सब पूर्वकृत कृण मे परिशोधन करवय लगतीहि। स्वामी केँ भोजन-छाजन मालिकहीक दरवार सौं भेटय लागल छैन्ह।



आश्वमी खेलन साढ़े तीनघंटे नहि-नहि सवे तीन गोटाक छेन्हि अर्थात् जवाहिर ताल, स्वामी, स्वयं तथा जवाहिर लालक एक वर्ष-तीनिक तमय सुशील ।

श्रीमती सुमतिक सुप्रबन्ध सौ मुख-सम्पदाक उन्नति आब दिन-दोबर, राति-चोबर होबय लागलि छेन्हि । आश्वमक प्रत्येक कार्य-चिन्तनक संगहि संग श्रीमती सुमति शिशु सुशीलक सेवा सुश्रूषा लालन-पालन विशेष रूपे कय रहलि छथीन्हि । प्रभात-सन्ध्या समयमे स्वयं सुशील के पढ़ैति छथीन्हि । किञ्चित्कालान्तरहि मे वर्षमाता, गणित, दस-पाँच स्तोत्र, सण-सवा सण काव्यक श्लोक तथा शास्त्र पुराणादिकक विशेष-विशेष उपयोगी उपाख्यानक सारांश स्मरण कराय एक प्राथमिक शिक्षाक पाठशाला मे प्रतिदिन एक भृत्यक संग अध्ययन पढ़ैति छथीन्हि जाहि सौ सुशीलक बुद्धि विकास दिना-नुदिन उन्नति कय रहल छेन्हि ।

सौभागिनी श्रीमती सुमतिक कार्यविलक्षणताक कारणे सोनेलालक सौभाग्यता दिनानुदिन सहस्रहाय लागलि छेन्हि ।

द्वितीय वर्ष मे श्रीमती सुमति पूर्व मलमूली खेतक प्रचुर उपजक आय सौ पुनः चारि पाँच विगहा खेत खरीद कयलैन्हि । प्रतिवर्ष कमशः खेत-पथार खरीदतहि जाइति छथि । एतन्प्रकारे एक पाँच वर्षाभ्यन्तर मे पचासौं विगहा भू-सम्पति उपार्जन कयलैन्हि । येही अभ्यन्तरमे भगवती कालिकाक अनुकम्पा सौ सौभागिनी श्रीमती सुमतिक फोड (फोर) एक सुन्दर शिशु सौ सौभाग्यमान भै गेलैन्हि । सम्प्रति सुशील बाबूक बयस नौम वर्ष मे पदार्पण करय चाहैत छेन्हि और अबुके दशम दिन प्रवेशिका परीक्षा (इन्ट्रेंस एक्जामिनेशन) देव गटना अवधीन्हि । परीक्षा-प्रश्नक प्रत्युत्तर पूर्ण रीति सौ सुशील बाबू दय आएल छथि । परीक्षाक प्रतिफल बुझनाक हेतु श्रीमती सुमति प्रति सप्ताह पाठशाला निरीक्षकक समक्ष पत्रिका पढ़ैति छथि । समबोचित पर परीक्षाक प्रतिफल रकाशित भेलैक । समाचार पत्र (गजेट) देखल गेल सौ प्रवेशिका परीक्षाक प्रथम श्रेणीक उत्तीर्ण विद्यार्थीक नामावलीमे प्रथम नाम सुशीले बाबूक

दृष्टिगत भेल । केवल पासे नहि ११) पन्द्रह सँया नास्तिक वृत्तियो सौ सम्मानित कयल गेल छथि । सुशील बाबूक विद्याविकाशक प्रवृत्ति सुनि-सुनि आब डेरक-डेर जाति नव हिनक सिद्धान्त-विवाहार्थ लालादत होबय लागल छथीन्हि । पञ्जीकार पर पञ्जीकार आवाजाही कय रहल छथीन्हि । किन्तु श्रीमती सुमति देवी प्रण ठनने छथि जे बाबू धरि सुशील बाबू एम० ए० पास नहि करीनीन्ह ताबत धरि हुनक सिद्धान्त-विवाह कदापि नहि करीनीन्हि ।

पाठक ! ईश्वरानुग्रह सौ सौभागिनी श्रीमती सुमतिक सुपुत्र सुबोधो आब कनेक-कनेक काका-काकी, दादा-दादी, नाना-नानी, मामा-मामीक भाषण करय लगलैन्हि अछि । अपन काका जवाहिरलालक संग भरि दिन दखान पर एम्बर-ओम्बर ठेहुनिया बँत गुड़कल पुरैत छेन्हि । बिथायित भेला पर पितीक पीठिक आश्रय सौ बरथराइत-बरथराइत ठाढ़ो भै जाइत अछि अणहि मे ओंघड़ाय कय सस्तियो पढ़ैत अछि । तत्काले कन्दन करय लगैत छेन्हि कि लगले काका कोरा कय जैत छथीन्ह । और पीठ केँ थपथपवैत एक साल सुनसुना हाथ मे धराय चुप-चुप-चुप कहय लगैत छथीन्ह । सुनसुना हाथ मे धरैत सन्तां चुप्पो भै जाइत छेन्हि और सुनसुना केँ मुँह सौ भम्भोरि लेर सौ सेड़ाय काकाक मुख मे ठूसैत और तोतराइत-तोतराइत कहय लगैत छेन्हि काका मा, काका कोरा, काकाहीया । जखन विशेष मूख लगैत छैक तखन रकन्ना करैत-करैत काका मा, काका दूध कहय लगैत छेन्हि । कबको कान्ध पर चढ़ाय आंगन लय अबैत छथीन्ह । दुग्धपानान्तर पुनः दालान विशि तसरय लगैत छेन्हि । एहि समय यदि जननी रोकवाक हेतु पाछाँ-पाछाँ परिभ्रमण करैत छथीन्ह सौ अणहि मे छिरिआय लगैत छेन्हि तखन विवश भै छोड़ि दैत छथीन्हि । जखन अपन भाय सुशील बाबू केँ प्रभात समय मे पढ़ैत देखैत छेन्हि तखन सुबोधो हुनक दू-एक पोथी केँ उकटि-पुकटि एम्बर-ओम्बर देखि मुख सौ भम्भोरैत लेर सौ लेभइवैत भैया, काका हीयाक पाठा-म्यास करय लगैत छेन्हि । सन्ध्या समय मे सौ पठानार मे सुशील बाबूक आगमन सौ पूर्वहि जाय बिराजैत छेन्हि और काका-काकी, दादा-दादीक पाठ



बहुत लगेत अछि । पढ़ैत-पढ़ैत चकित भै जायहि । पढ़ैत-पढ़ैत निमेष निद्रा मे निमग्न भै जाइत अछि । तखन जननी उठाय खवति छथीन्ह और एक वस्त्र धारण पर सुताय बैति छथीन्ह । तखनक सुतल पुनः प्रभ्राते काल मे प्रगैत छैन्ह ।

जखन माँ शिशु सुबोध की सुरक्षार चलय-निकरय भाषण करैत अवलोक अछि तखन माँ कौनन आंगन मे रहितहि रहि छैन्ह । समयगतक बालक संग कतत खेलैत-पुपुहैत रहैत छैन्ह । बौजनाक समय पर जखन काका अथवाका हेतु वज्रघण जाइत छथीन्ह तँ एम्भर-ओम्भर माकल फिरैत छैन्ह । कतेक पोल्हीला-मुल्हीला पर शिशु समाज छोड़ि अवबो करयैन्ह तँ भरि देह धर-धुलित भेल अवबैन्ह और चञ्चल चित माँ एम्भर-ओम्भर तर्कत ह्-न्कारि और मुख मे रोनाकैन्ह और अवकाश पाय पुनः पलायन पर उठैत तखन माँ काका घर-घर कह्य लगेत छथीन्ह कि तरसर कम ससरि जाइत छैन्ह ।

ऐहि प्रकारक स्वल्प शिशुक जैवभावस्थाक मुक्तानुभव करैत सोनेलालक परिवार भरिक लोक प्रमुदित देखल जाइत अछि ।

माता-पिता तथा आता सुशील बाबूक विशेष प्रयत्न सौ चोड़बहि दिनक अन्यन्तर मे शिशु सुबोध शिक्षा कल्प, आनखण, निरुचित, छन्द तथा ज्योतिष मे विशेष क्षमता प्राप्ति करय लागल छथीन्ह ।

सौभागिनी श्रीमती सुमति देवी अवलोकिक क्षमता सौ हजारक असाधारणार्जन कर निज पति सोनेलाल की दायवृत्तिक शृङ्खला सौ विमुक्त कराय वाणिज्य-व्यापार पथक प्रवेशिका भेलीहि जाहि व्यापारक प्रसादे श्रीमती सुमति एखन पचासो हजार संपत्तिक अतिरिक्ती भै गेलि छथि । योड़बहि दिनमे सुशील बाबू ए० ए० और सुबोध बाबू प्रवेशिका परीक्षा मे सन सौ प्रथम संस्था मे परिक्षोत्तीर्ण भेलथीन्ह और सुबोध बाबू एक बीश स्वयंदाक छात्रवृत्तियो प्राप्ति कएलथीन्ह । बाह ! होनिहार विश्रुतक सुह-नुह पात ।

सौभागिनी श्रीमती सुमति आव सन ईर्ष्या अर्थात् चित्तेष्णा, कामेष्ण तथा पुत्रेष्ण सौ परिपूरित भै सुशील बाबूक सिद्धान्त विवाह तथा समाज सुधार पर

कटिबद्ध भै एक नियमावलीक निर्माण करलैन्ह अछि और स्वयं प्रतिभाबद्ध भेलि छथि जे जे व्यक्ति नियमावलीक अनुसार कार्य करथीन्ह । तनिकहि मोहिठाम सुशील बाबू प्रभृतिक सिद्धान्त विवाह करीथीन्ह । एम्हर सुशील-सुबोध बाबूक विद्याविकासक प्रगंसा सुनि-सूनि हृतकर विवाहार्थ बहुतेक स्वभाति-वर्ग पञ्जीकार पर पञ्जीकार घटक पर घटक, दूती पर दूतीक धुरसङ्ग मचावय लागल छथीन्ह किन्तु श्रीमती सुमति देवी एतवय प्रत्युत्तर दैति छथीन्ह जे-जे विचारवान व्यक्ति हमर नियमानलीक पालन करताह तनिकहि मोहिठाम हम सुशील बाबूक सिद्धान्त-विवाह करयैन्ह । नियमावली मे बहुतेक बातक सुधार उल्लिखित छैक ।

ॐ

॥ स्वामिन्दा आ 'रमण'





# कर्ण गोष्ठी

दूरभाष : 334 9371

६/२८, सी० आई० टी० विल्डिंग

१६, बागमारी लेन, कलकत्ता-७०० ०५४

## श्री १०८ चित्रगुप्त पूजनोत्सव

आत्मीय बन्धु,

आदि पुरुष भगवान श्री १०८ चित्रगुप्तक वार्षिक सामूहिक पूजनोत्सव आगामी मंगलवार १२ नवम्बर १९९६ के आयोजित अछि।

प्रातः काल ९ बजे : श्री चित्रगुप्त-पूजन एवं प्रसाद-वितरण

एहि पुनीत अवसर पर स्व० राश बिहारी लाल दास रचित उपन्यास 'सुमति' क नव संस्करणक लोकार्पण मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार सं सम्मानित श्री प्रभास कुमार चौधरीक कर कमल सं होएत।

प्रधान अतिथि रहताह उपन्यासक नवसंस्करण क भूमिकाक लेखक डा० रमानन्द झा 'रमण'।

सम्पूर्ण कार्यक्रम मोहित श्रमजीवी हिन्दी विद्यालयक सभागार, ९३ नारिकेल डांगा मेन सेड, कलकत्ता-७०००५४ (फूल बगान चौरस्ता सं पूरब) मे अनुष्ठित होएत।

समारोहक सफलताक हेतु अपनेक उपस्थितिक आकांक्षी छी।

विनीत :

राजनन्दन लाल दास

अध्यक्ष

उपेन्द्रनाथ दास

सचिव